नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक

नंदन



रु. ३.५० पै.

सितम्बर '८९

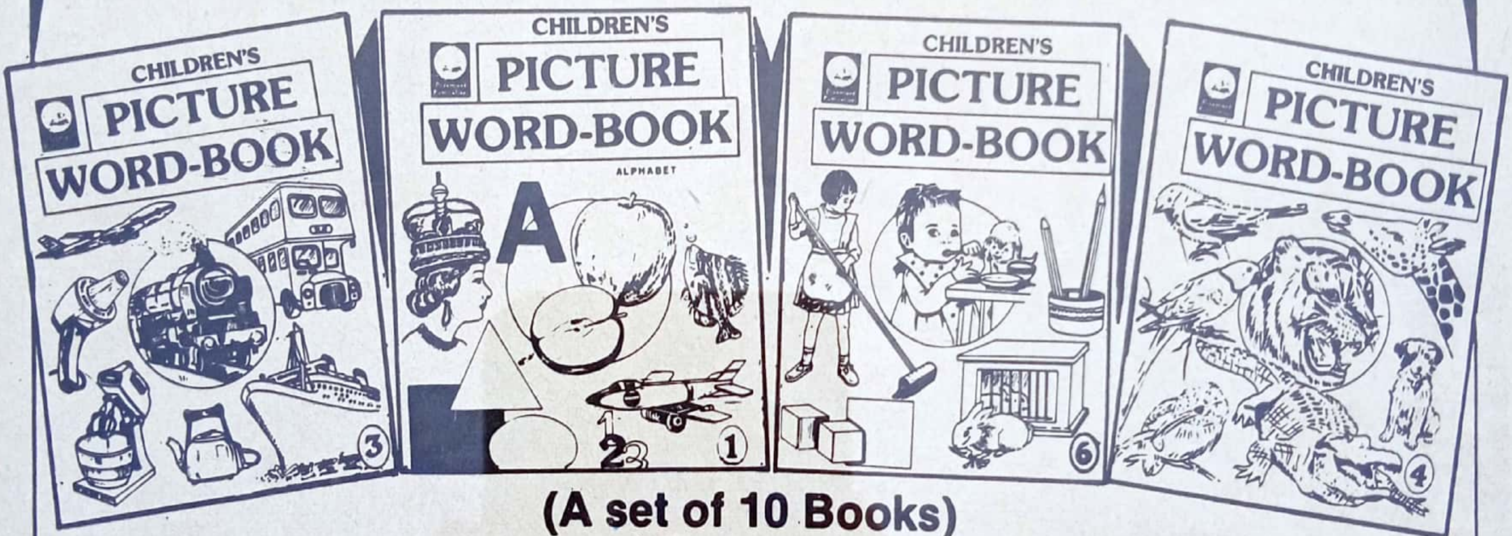
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन

YOUR WORRY IS OVER NOW

REGARDING YOUR CHILD'S ADMISSION IN ANY PROGRESSIVE SCHOOL.

LOSE NO TIME TO BUY OUR

CHILDREN'S PICTURE WORD-BOOK SERIES



(A set of 10 Books)

PRINTED IN MOST ATTRACTIVE COLOURS
SURE TO EQUIP YOU AND YOUR CHILD WITH UNSHAKABLE CONFIDENCE THROUGH ITS WIDE-RANGING VOCABULARY ON ALL NECESSARY TOPICS

Edited by :
T.R. BHANOT

Dreamland Publications

PUBLISHED BY:

DREAMLAND PUBLICATIONS

4425, NAI SARAK, DELHI-110006 (INDIA)

AVAILABLE AT

1. BOMBAY : Dhanlal Bros, Princess Street Bombay. Phone 253716
2. Bharat Book Depot, 19-C, Pandita Ramabai Road, Gamdevi, Bombay-400007. Phone 354264
3. CALCUTTA : Kassim (Book Trade) Pvt. Ltd., 19-A, Jawahar Lal Nehru Road, Calcutta-700087 Phone No. 295607
4. MADRAS : Map's & Agencies, 11 Rajachar Street, T. Nagar, Madras-600017.
5. BANGALORE : Vasan Book Depot, Vinayaka Tower, Ist Cross, Gandhi Nagar, Bangalore-560009, Phone 24709.
6. JALANDHAR : Gupta Book Depot Adda, Hoshiarpur Jalandhar.
7. LUCKNOW : Modern Book Shop, B-6, Janpath Market, Lucknow.
8. UBS Publisher's Distributors New Delhi, Bombay, Banglore, Madras, Calcutta, Patna, Kanpur.
9. ERNAKULAM : Joseph Thomsan & Co. 7, Anand Bazar ERNAKULAM SOUTH.

PRICE
RS 15/- Per Title

Rashtriya

हंसी का खज़ाना

नन्हें मन्नों की पहली पसंद

नये डायमंड कॉमिक्स



अंकुर बाल बुक क्लब

सदस्य बनने के लिए आपको क्या करना होगा :-

1. संलग्न कूपन पर अपना नाम व पता भर कर भेज दें। नाम व पता साफ-साफ लिखें ताकि पढ़ने में आसानी हो।
2. सदस्यता शुल्क पांच रुपये मनीआर्डर या डाक टिकट द्वारा कूपन के साथ भेजें। सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।
3. हर माह पांच पुस्तकें एक साथ मंगवाने पर 2/-की विशेष छूट व डाक व्यय फ्री की सुविधा दी जायेगी। हर माह हम चार पांच पुस्तकें निर्धारित करेंगे यदि आपको वह पुस्तकें पसंद हों तो डायमंड कॉमिक्स व डायमंड पाकेट बुक्स की सूची में से चार पांच पुस्तकें आप पसन्द करके मंगवा सकते हैं लेकिन कम से कम चार पांच पुस्तकें मंगवाना जरूरी है।
4. आपको हर माह Choice कार्ड भेजा जाएगा यदि आपको निर्धारित पुस्तकें पसन्द हैं तो वह कार्ड भरकर हमें न भेजें। यदि निर्धारित पुस्तकें पसन्द नहीं हैं तो अपनी पसन्द की कम से कम 7 पुस्तकों के नाम भेजें ताकि कोई पुस्तक उपलब्ध न होने की स्थिति में उनमें 4 से 5 पुस्तकें आपको भेजी जा सकें।
5. इस योजना के अन्तर्गत हर माह की 20 तारीख को आपको वी.पी. भेजी जायेगी।

सदस्य बनने पर 'बच्चों के जोक्स' किताब मुफ्त प्राप्त करें।

सदस्यता कूपन

मुझे अंकुर बाल बुक क्लब काउ सदस्य बना लें। सदस्यता शुल्क पांच रुपये मनी आडर/डाक टिकट से साथ भेजा जा रहा है। (सदस्यता शुल्क प्राप्त न होने की स्थिति में आपको सदस्यता नहीं दी जायेगी) मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूँ।

नाम ....

पिता का नाम ....

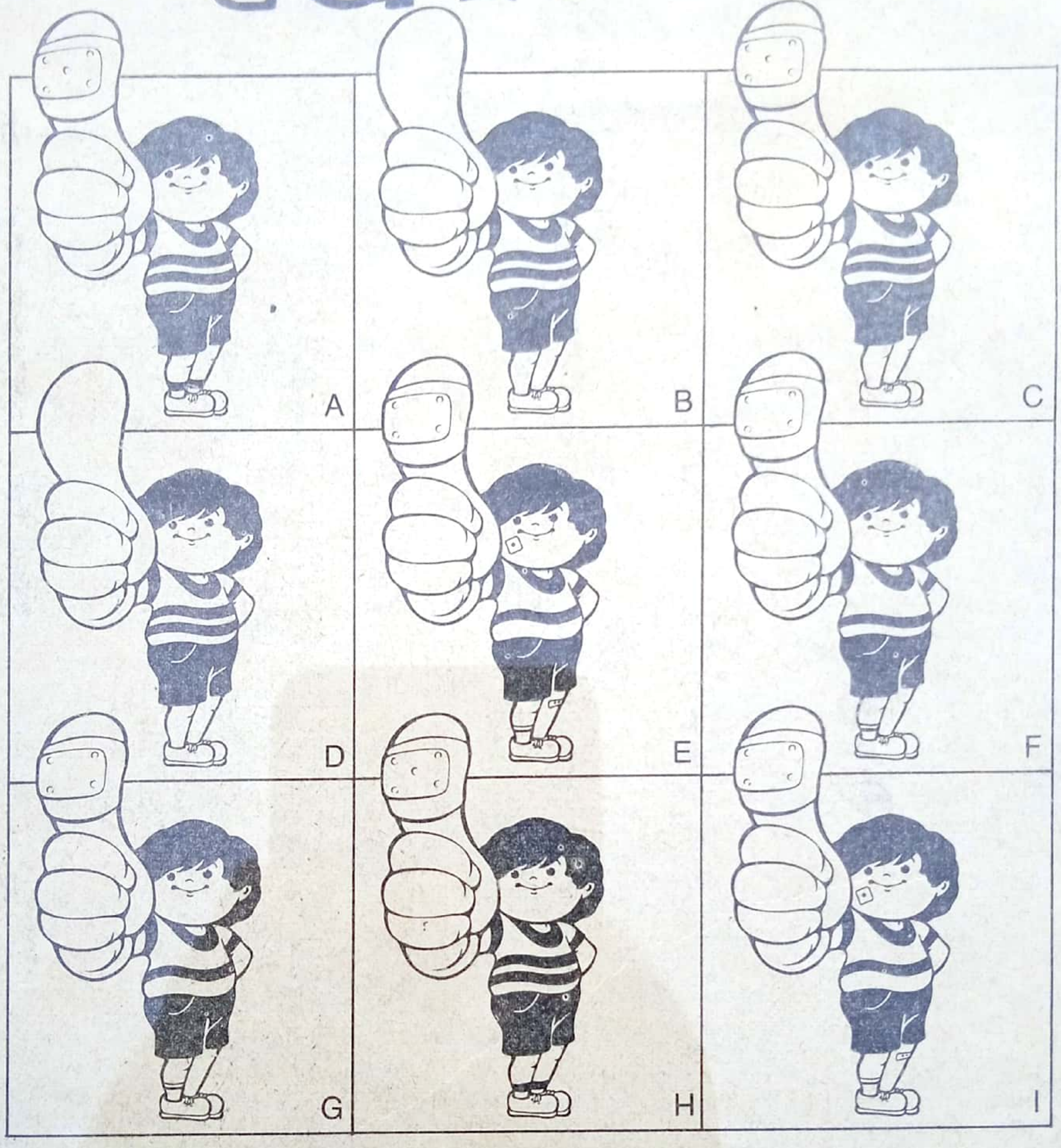
पता ....

डाकखाना .... ज़िला ....

डायमंड कामिक्स प्रा.लि.
2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

Scanned with CamScanner

असली हैण्डीबॉय खोज निकालो!



जुड़वाँ भाई हैं ऊपर चार
पहचानो इनको तुम सोच-विचार
एक अलग है हैण्डी बॉय
नहीं है जिसका जुड़वाँ भाई
उसको खोजो और बतलाओ
किस खाने में है दिखलाओ



उत्तर: असली हैण्डीबॉय है खाना C में

HTA 1424

विश्व-प्रसिद्ध श्रृंखला



नये प्रकाशन

- विश्व-प्रसिद्ध भूत-प्रेत घटनाएं
- विश्व-प्रसिद्ध जन-क्रांतियां
- विश्व-प्रसिद्ध कुख्यात महिलाएं

मूल्य: 18/- प्रत्येक
डाकखर्च: 4/- प्रत्येक
एक साथ चार पुस्तकें मंगाने पर डाकखर्च माफ

■ प्रामाणिक पाठ्य-सामग्री ■ प्रत्येक पुस्तक सैकड़ों दुर्लभ चित्रों से सुसज्जित ■ सरस कथा शैली ■ फोटोटाइप सैट ■ बढ़िया कागज पर ऑफसैट छपाई ■ बहुरंगी आवरण ■ वाजिब दाम

इस श्रृंखला का मूल उद्देश्य एक औसत पाठक को अंतर्राष्ट्रीय घटनाचक्र से जोड़कर उसकी चेतना को प्रबुद्ध करते हुए उसके ज्ञान-क्षेत्र का विस्तार है। उदाहरणार्थ ***रोमांचक कारनामे*** में सरकंडे की नाव में की गई 13,000 मील की समुद्री यात्रा जैसी अनेक सच्ची कथाएं हैं तो ***खोजें*** में मिट्टी के तेल, पेनिसीलीन आदि खोजों के पीछे छिपे प्रयासों का रोचक विवरण है। ***अनसुलझे रहस्य*** में बरमूदा ट्राइएंगल से लेकर रक्त मिलाकर शराब पीने वाली जातियों तक के रहस्य हैं तो ***खेल और खिलाड़ी, 101 व्यक्तित्व*** व ***वैज्ञानिक*** जीवनी-प्रधान पुस्तकें हैं। ***विनाश-लीलाएं*** व ***दुर्घटनाएं*** में मर्मांतक तबाहियों का लेखा-जोखा है तो ***गुप्तचर संस्थाएं, जासूस*** व ***जासूसी कांड*** में जासूसों की रोमांचकारी गतिविधियां हैं। ***सभ्यताएं*** और ***प्रेरक-प्रसंग*** किसी भटके हुए मन के लिए प्रकाश-स्तंभ हैं तो ***हत्यारे*** में रक्त पिपासु हैवानों की कथाएं हैं। ***रोमांस-कथाएं*** में लैला-मजनूं से लेकर हिटलर, कैनेडी, चार्ली चैपलिन जैसे व्यक्तियों के दिलों की धड़कनें हैं तो ***अनमोल खजाने*** में रहस्य और रोमांच से भरे खजाने हैं। ***दुस्साहसिक खोज-यात्राएं*** में कोलंबस, मार्को पोलो जैसे खोज-यात्रियों की गौरव-गाथाएं हैं तो ***जन-क्रांतियां*** में सभी महत्त्वपूर्ण क्रांतियों का सिलसिलेवार ब्यौरा है। ***भूत-प्रेत घटनाएं*** पढ़कर आपकी रातों की नींद उड़ जायेगी—कमजोर दिल के लोग इसे न पढ़ें तो अच्छा!

कुल मिलाकर प्रत्येक पुस्तक अपने क्षेत्र से संबंधित सभी उल्लेखनीय पक्षों को उजागर करने वाला एक सचित्र ***मिनि एनसाइक्लोपीडिया*** *है।*

इस श्रृंखला में प्रकाशित पुस्तकें:

विश्व-प्रसिद्ध.... 1. खोजें 2. अनसुलझे रहस्य 3. रोमांचक कारनामे 4. युद्ध 5. 101 व्यक्तित्व 6. धर्म, मत एवं सम्प्रदाय 7. खेल और खिलाड़ी 8. रिकॉर्ड्स-I 9. रिकॉर्ड्स-II 10. वैज्ञानिक 11. विनाश-लीलाएं 12. दुर्घटनाएं 13. गुप्तचर संस्थाएं 14. जासूस 15. प्रेरक-प्रसंग 16. चिकित्सा-पद्धतियां 17. बैंक डकैतियां एवं जालसाजियां 18. जासूसी-कांड 19. क्रूर हत्यारे 20. सभ्यताएं 21. रोमांस कथाएं 22. अनमोल खजाने 23. दुस्साहसिक खोज-यात्राएं 24. भूत-प्रेत घटनाएं 25. जन-क्रांतियां 26. कुख्यात महिलाएं।

तैयारी में/प्रेस में

★ राजनैतिक हत्याएं ★ तख्ता-पलट की घटनाएं ★ मांसाहारी व अन्य विचित्र पेड़-पौधे ★ हस्तियों के प्रेम-प्रसंग

English versions available

WORLD FAMOUS....1. Discoveries 2. Unsolved Mysteries 3. Adventures 4. Wars & Battles 5. 101 Great Lives 6. Religions, Doctrines & Sects 7. Disasters 8. Accidents 9. Civilizations 10. Scientists 11. Spies 12. Intelligence Agencies 13. Spy Scandals 14. Brutal Murderers 15. Anecdotes 16. Love-Stories of the Great People.

अपने निकट व ए. एच. व्हीलर के रेलवे व बस अड्डों के बुकस्टॉलों पर मांगें । वी. पी. पी. द्वारा मंगाने के पते :-

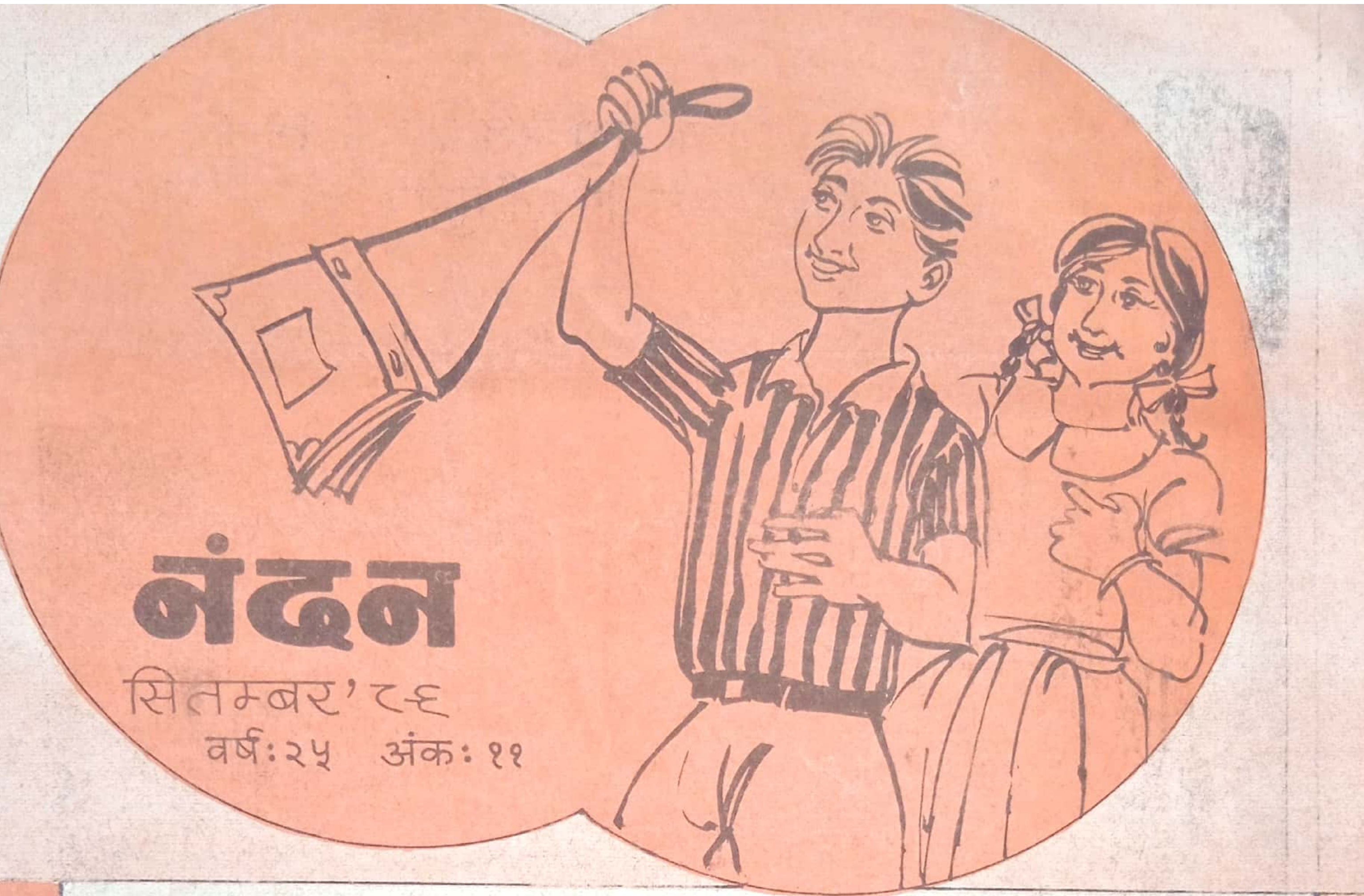
पुस्तक महल खारी बावली, दिल्ली-110006

शोरूम: 10-B, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002.



CLARION/B/ZP/20/214 HIN

Scanned with CamScanner



सम्पादक
जयप्रकाश भारती

कहां क्या है

मुखपृष्ठ : राजेन्द्रकुमार वधवा

सहायक सम्पादक : चन्द्रदत्त 'इन्दु'
उप-सम्पादक : देवेन्द्र कुमार, रत्नप्रकाश शील, क्षमा शर्मा, डा. चन्द्रप्रकाश; चित्रकार : प्रशांत सेन

Scanned with CamScanner



आओ बात करें

हजारों साल पहले हमारे देश का नाम आर्यावर्त था। यहां वीर और प्रतापी राजा दुष्यंत राज करते थे।

एक दिन राजा दुष्यंत शिकार को निकले। लाव-लश्कर भी साथ था। इधर-उधर घूमते-भटकते रहे, पर कोई शिकार हाथ न लगा।

सहसा राजा चौंक उठे। शेरों के गुर्राने की आवाज उनके कानों में पड़ी। उन्होंने साथियों को सावधान किया। उनके साथी चारों ओर फैल गए, ताकि शेरों को घेर सकें।

राजा दुष्यंत अपने एक सहायक को ले, एक ओर बढ़े। पास ही झाड़ियों में से आवाजें आ रही थीं। "अरे, लगता है, यहां कहीं शेर के बच्चे पास ही हैं।"—राजा बोले।

तभी राजा दुष्यंत ने अजब दृश्य देखा। नौ-दस साल का एक बालक शेर के बच्चों से खेल रहा था। शावक गुर्रा रहे थे, पंजे चला रहे थे। उस बालक को इसकी परवाह न थी। पास ही शेर-शेरनी भी बैठे थे। सहसा बालक शेर पर सवार हो गया। उसके जबड़ों को खोलने लगा। शेर नाराज हुआ, गरजा-गुर्राया, पर बालक नहीं माना। उसने शेर का मुंह जबरदस्ती खुलवा लिया। उसके दांत गिनने लगा। दांत गिन लिए, तो खुशी-खुशी शेर को छोड़ दिया।

दुष्यंत सांस रोके, यह देखे जा रहे थे। उन्हें पसीना आ गया। अब शेर-शेरनी एक ओर को चल दिए। बच्चे भी उनके पीछे-पीछे चले गए।

राजा झाड़ियों से निकले। बालक के पास पहुंचे। उस वीर बालक की पीठ थपथपाई। उसका नाम पूछा।

बालक बोला—"मेरा नाम भरत है। मैं कण्व ऋषि के आश्रम में रहता हूं।"

राजा दुष्यंत आश्रम में गए। वहां शकुंतला से मिले। उन्हें अब सब याद आ गया। भरत दुष्यंत का ही पुत्र था। ऋषि के शाप के कारण राजा शकुंतला को भूल गए थे।

शकुंतला और भरत को दुष्यंत हस्तिनापुर ले आए। भरत युवा होते-होते बेजोड़ बहादुर बना। वह राजा बना, तो दूर-दूर तक उसका राज्य फैला। युद्ध में कभी किसी से हारा नहीं। उन्होंने ही सबसे पहले इस बड़े देश को एक सूत्र में जोड़ा। उन्हीं के नाम पर यह देश भारत कहलाया। उन दिनों भारतीय संस्कृति की महक दूर-दूर तक फैली।

'नंदन' ने उस संस्कृति की सुगंध पाठकों तक पहुंचाई है। बढ़िया सामग्री और रंग-बिरंगी छपाई में भी मूल्य कम रखने की चेष्टा की है।

इन दिनों हर तरफ महंगाई बढ़ रही है। न चाहते हुए भी हमें 'नंदन' की कीमत बढ़ानी पड़ रही है। अक्तूबर अंक से एक प्रति का मूल्य चार रुपए होगा। विश्वास है, हमेशा की तरह 'नंदन' को तुम्हारा प्यार मिलता रहेगा।

तुम्हारे भइया—

जयप्रकाश भारती

Scanned with CamScanner

एक चौथाई

—श्रीनिवास वत्स

किसी गांव में लक्ष्मीदत्त नाम का एक महाकंजूस साहूकार रहता था । अपार धन-सम्पत्ति का स्वामी होने पर भी उसका लालच कभी दूर नहीं हुआ । एक पैसा खरचने में उसकी जान निकलती थी । उसके तीन बेटे थे । साहूकार ने उनका लालन-पालन तो प्यार से किया, खिलाने-पिलाने में कंजूसी बरती । अतः तीनों ही बेदम-से रहते थे ।

एक बार साहूकार की पत्नी बीमार पड़ी । बीमारी भी ऐसी वैसी न थी । इलाज में खर्चा था । साहूकार की कंजूसी यहां भी आड़े आई । बेचारी पत्नी महीना भर बीमार रहकर स्वर्ग सिधार गई ।

गांव के लोग साहूकार की कंजूसी से परिचित थे । वह किसी से पैसों के अलावा कोई बात ही नहीं करता था । न किसी के दुःख-सुख में शामिल होता ।और न किसी को अपने यहां बुलाता था ।

साहूकार के धन की चर्चा दूर-दूर तक फैली थी । डाकू शिवदान सिंह ने भी उसकी चर्चा सुनी । एक रात मौका पा, वह अपने गिरोह के साथ साहूकार की हवेली पर आ धमका । दो गोली आसमान में दागीं, तो गांव में आतंक फैल गया । साहूकार का डर के मारे बुरा हाल था । डाकुओं ने दरवाजा तोड़कर उसका सारा धन लूट लिया । गांव का कोई भी व्यक्ति साहूकार की सहायता के लिए नहीं आया । प्रत्येक को अपनी जान प्यारी थी । फिर साहूकार के लिए डाकुओं का मुकाबला करने से उनको मिलता भी क्या ?

दुःख के सागर में डूबा साहूकार समझ नहीं पा रहा था, क्या करे ! हवेली में बाकी बचे सामान को उसने इकट्ठा किया । जो थोड़ा-बहुत सोना-चांदी इधर-उधर छिपा रह गया था, उसे भी साहूकार ने निकालकर तिजोरी में रख लिया ।

उसके बड़े पुत्र ने सुझाया—''पिता जी, जो होना था, हो गया । अब इसी बचे हुए धन से पुनः व्यापार शुरू कराना चाहिए ।''

साहूकार ने कहा—''उस डाकू को हमारे घर का पता चल गया है । मैं व्यापार कर दोबारा धन इकट्ठा करूंगा, तो वह उसे भी लूट ले जाएगा । हमें कोई ऐसा उपाय करना चाहिए, जिससे वह हमें न लूट सके ।''

साहूकार कई दिन सोचता रहा, पर कोई उपाय उसकी समझ में न आया ।

एक दिन पड़ोसी गांव का एक सेठ उसके घर आया । सेठ अपनी पुत्री का विवाह साहूकार के बड़े लड़के से करना चाहता था । साहूकार ने सेठ को आपबीती सुनाई । सेठ को साहूकार का धन लुटने का दुःख हुआ । उसने भी साहूकार को पुनः व्यापार करके नुकसान की भरपाई करने को कहा । फिर बातों ही बातों में रिश्ते की बात चलाई ।

साहूकार का लड़का शादी योग्य था । उसने सेठ का प्रस्ताव मान लिया । दूसरे दिन उदास साहूकार सेठ के घर लड़की देखने गया । सेठ की लड़की श्वेता को देख, साहूकार बहुत प्रसन्न हुआ । धूमधाम से विवाह सम्पन्न हुआ । श्वेता बहू बनकर साहूकार के घर आई । अक्सर वह अपने श्वसुर को उदास देखा करती थी । एक दिन उसने उदासी का कारण पूछा, तो साहूकार बोला—''बेटी ! मेरे पास अपार धन था, जिसे डाकू लूट ले गए । लड़के कहते हैं कि जो धन बचा है, उससे पुनः व्यापार शुरू करूं । किंतु मैं डरता हूं कि



कहीं इसे भी डाकू लूट न ले जाएं। यह सोचता हूं, तो उदास हो जाता हूं।"

श्वेता कुछ सोचती हुई बोली—"मेरे मस्तिष्क में एक योजना है। उस पर आपकी आय का एक चौथाई धन खर्च होगा। फिर डाकू यहां नहीं आएंगे। आ भी गए, तो कुछ ले जा नहीं पाएंगे।"

साहूकार खुशी से उछल पड़ा। उसने शर्त मान ली। बाकी बचे धन से पुनः व्यापार प्रारम्भ कर दिया। कुछ ही दिनों में साहूकार का व्यापार फिर चल पड़ा। हर माह आय का हिसाब लगाकर साहूकार एक चौथाई धन श्वेता को दे देता। कहता—"तुम्हें अपना वायदा तो याद है न!"

उत्तर में श्वेता मुसकरा भर देती।

होते-होते श्वेता के पास काफी धन जमा हो गया। एक दिन साहूकार को बिना बताए, उसने सारे गांव वालों को चौपाल पर इकट्ठा किया। उनसे कहा—"मैं गांव की भलाई के लिए कुछ धन खर्च करना चाहती हूं।" गांव वालों ने सुना, तो हैरान रह गए। कंजूस साहूकार की पुत्र-बधू गांव की भलाई के लिए धन खर्च कर रही है।

लेकिन बात सच थी। श्वेता ने गांव की गलियां पक्की करवा दीं। पांच-छह अखाड़े बनवा दिए। वहां गांव के युवक व्यायाम करने आने लगे। उनके लिए पौष्टिक भोजन का भी प्रबंध करा दिया। बच्चों के लिए श्वेता ने एक स्कूल खुलवा दिया। वह गांव के गरीब किसानों की भी मदद करने लगी, ताकि वे पैदावार बढ़ा सकें।

कुछ ही दिनों में गांव की काया पलट गई। हर तरफ खुशहाली ही खुशहाली छा गई। श्वेता का नाम सारे गांव में आदर के साथ लिया जाने लगा। एक दिन श्वेता ने गांव के लोगों को फिर इकट्ठा किया। उन्हें समझाया—"यदि तुम चाहते हो कि हम सबकी खुशहाली बनी रहे, तो गांव की ओर आंख उठाने वाले डाकुओं का सामना करना होगा।"

गांव के हृष्ट-पुष्ट युवक एक साथ बोले—"हम उन्हें कच्चा चबा जाएंगे।"

श्वेता ने मुसकराते हुए कहा—"जो भी धन अब तक मैंने गांव की भलाई में खर्च किया है, वह मेरे ससुर की अब तक की आय का एक चौथाई हिस्सा है। यदि डाकू उनकी सम्पत्ति लूटते हैं, तो यह समझो वे तुम्हारा हिस्सा भी लूट रहे हैं। यदि हम सब मिलकर उनका सामना करें, तो उनकी इतनी हिम्मत नहीं कि वे हमारा एक तिनका भी ले जा सकें।"

गांव वाले एक साथ चिल्ला उठे—"हम अभी जंगल में जाकर उन डाकुओं को मार डालते हैं।"

—"ऐसे नहीं। उनके पास हथियार हैं। हमें उनके हथियारों का मुकाबला करने के लिए अपने हथियार भी तो तैयार करने होंगे।"

कुछ ही दिनों में पूरे गांव के लोग लाठी-बल्लम चलाना सीख गए।

एक रात शिवदान सिंह ने गांव में साहूकार को फिर लूटने की योजना बनाई। रात को वह अपने गिरोह के साथ गांव में घुसा। साहूकार की हवेली के पास आकर उसने आसमान में गोली दागी। उसने सोचा था—'गांव वाले सदा की तरह डरकर दुबक जाएंगे।' पर इस बार गांव के नौजवान लाठियां और बल्लम ले, गिरोह पर टूट पड़े। डाकू दल भौचक्का रह गया। उसे तो इस बात की सपने में भी आशा न थी। इससे पहले कि डाकू स्थिति समझ गोलियां चलातें, गांव वालों ने गिरोह पर लाठियां बरसानी शुरू कर दीं। कई डाकू मारे गए। शिवदान सिंह की दोनाली बंदूक लाठी के वार से नीचे गिर पड़ी। वह भागना चाहता था। पर गांव के पहलवानों ने उसे पकड़कर रस्सियों से बांध दिया। वे उसे घसीटते हुए साहूकार के पास ले गए। साहूकार हैरान था। वह श्वेता की ओर देखने लगा। श्वेता ने कहा—"पिता जी, असली धन तो यही भाई-चारा है, जिसे कोई डाकू नहीं लूट सकता। इसी के बल पर डाकू हार गए।"

शिवदान सिंह जान की भीख मांगने लगा। श्वेता को दया आ गई। उसने शिवदान सिंह को उसी गांव में बसा लिया। अब वह भी दूसरे ग्रामीणों की तरह मेहनत करके अपना पेट भरता था। ●

Scanned with CamScanner



स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है।

— लोकमान्य तिलक

Scanned with CamScanner

चले गए राजा

—वसंतकुमार भट्ट

उन दिनों कुमाऊं में राजा रुद्रचंद का शासन था। वह बड़े न्यायप्रिय और दयालु थे। प्रजा को पुत्र के समान समझते थे। प्रजा भी उन्हें बहुत चाहती थी।

ऐसे दयालु और प्रजा पालक राजा का इकलौता पुत्र रतनचंद था। वह बहुत उद्दंड था। अपने पिता के गुणों से बिलकुल विपरीत। बचपन में उसकी उद्दंडता देख, लोग यही सोचते थे—चलो, अभी राजकुमार बालक है। लाड़-प्यार ने उसे चंचल बना दिया है। बड़ा होने पर स्वयं समझ जाएगा।

मगर ऐसा हुआ नहीं। रतनचंद की अवस्था जैसे-जैसे बढ़ने लगी, वैसे-वैसे वह अधिक उद्दंड हो गया। राजमहल के सेवक उसके व्यवहार से बहुत दुखी थे। बिना बात दूसरों का अपमान करना जैसे उसकी आदत बन गई थी। राजमहल से बाहर आने पर राजकुमार किसी न किसी को तंग करने का अवसर खोजा करता था। उद्दंडता के इन कार्यों में उसके कई मित्र भी सहयोगी थे।

एक दिन रतनचंद अपने साथियों के साथ घोड़ों पर सवार होकर जा रहा था। घोड़े बाजार में भी सरपट भाग रहे थे। उसे आता हुआ देखकर लोग दूर से ही मार्ग छोड़कर हट गए थे।

मार्ग में एक बूढ़ा भी जा रहा था। उसे कम दिखाई देता था और कम सुनता था। उसे राजकुमार और उसके साथियों के घोड़ों की टापें भी नहीं सुनाई पड़ीं, इसीलिए रास्ते पर धीरे-धीरे चलता रहा।

राजकुमार चाहता, तो बूढ़े को बचाकर निकल सकता था। पर ऐसा करना तो उसकी शान के विरुद्ध होता। तेजी से भागते हुए घोड़े से टकराकर बूढ़ा धड़ाम से गिर पड़ा। वह पीछे आने वाले घोड़ों की टापों से कुचला गया। आसपास के लोगों ने आकर बूढ़े को उठाना चाहा, मगर तब तक उसके प्राण निकल चुके थे।

रतनचंद के इस व्यवहार से क्षुब्ध होकर लोगों ने निश्चय किया—'कल राजा के पास जाकर न्याय मांगा



Scanned with CamScanner

जाए। उनका विचार था कि राजा भले ही राजकुमार को कठोर दंड न दें, किंतु आगे से उसकी उद्दंडता पर कुछ अंकुश तो लगेगा।

अगले दिन राज दरबार में मृतक बूढ़े के पुत्र के साथ कुछ लोग आए। उन्होंने राजा रुद्रचंद के सम्मुख उस घटना का विवरण सुनाया। राजकुमार के ऐसे व्यवहार के बारे में जानकर राजा गंभीर हो उठे। उन्होंने अपना निर्णय देने के लिए एक माह बाद की तिथि घोषित कर दी।

राजा ने गुप्तचरों को राजकुमार की गतिविधियों के बारे में तथा उस दिन की घटना का विवरण जानने भेजा। कुछ दिन में गुप्तचरों ने उन्हें सारा विवरण लाकर दे दिया।

निश्चित दिन दरबार में बूढ़े का पुत्र और प्रजा न्याय पाने के लिए पहुंची। अपराधियों के लिए निर्धारित स्थान पर राजकुमार सिर झुकाए खड़ा था। राज दरबार के निकट बने प्रकोष्ठ में बैठी रानी भी परदे के पीछे से इस न्याय सभा का दृश्य देख रही थी।

दरबार में सन्नाटा था। न्यायमंत्री आचार्य श्रीधर को सम्बोधित करते हुए राजा ने पूछा—"आचार्य जी, मैंने आपको अभियुक्त रतनचंद के विरुद्ध एकत्र की गई सभी सूचनाएं भिजवा दी थीं। आप अपना निर्णय बताएं।"

आचार्य श्रीधर खड़े हुए और कहने लगे—"महाराज, कुमार रतनचंद. . . "

"कुमार रतनचंद नहीं, अभियुक्त रतनचंद कहिए।"—राजा ने टोका।

"ठीक है महाराज, अभियुक्त रतनचंद के विरुद्ध उद्दंडता के सभी आरोप प्रमाणित हो गए हैं। यह भी सही है कि उसकी सतर्कता बूढ़े के प्राण बचा सकती थी, किंतु यह अपराध उसने जानबूझ कर नहीं किया। इसे उसकी किशोरावस्था की अज्ञानता समझ, क्षमादान दिया जा सकता है।"—कहकर आचार्य मौन हो गए।

सारे दरबारी और प्रजाजन आचार्य की बात सुनकर राजा की ओर देखने लगे। वे राजा की प्रतिक्रिया जानने के लिए उत्सुक थे। सभी की धारणा



थी कि राजा भी अपने पुत्र की उद्दंडता के लिए क्षमादान का ही निर्णय लेंगे। कुछ क्षणों तक दरबार में निस्तब्धता छाई रही।

राजा ने अपना निर्णय सुनाते हुए कहा—"आचार्य जी, क्षमा करें। आपकी सहायता से हमने आज तक न्याय के इस ऊंचे आसन पर बैठकर जो भी निर्णय किए, उनसे चंद्रवंश की कीर्ति का विस्तार ही हुआ है, किंतु आज हम आपके निर्णय को अस्वीकार करने के लिए विवश हैं। रतनचंद को हम अपराधी मानते हैं। उसे नियमानुसार दंड देना चाहते हैं।"

"पर महाराज, रतनचंद युवराज हैं। इस पर विचार कीजिए।"— वयोवृद्ध प्रधानमंत्री नरोत्तम बोले।

"हां, मैंने इस पर भी विचार किया है।"—राजा ने आगे कहा—"हम रतनचंद को युवराज पद के लिए कुपात्र समझकर उसे अपने उत्तराधिकार से वंचित करते हैं। चूंकि अपनी संतान के पालन-पोषण में हुई चूक के लिए हम भी दोषी हैं, इसलिए हम भी स्वयं को इस सिंहासन के योग्य नहीं समझते। हम आज से गद्दी का त्याग करते हैं।"

प्रजा और दरबारियों ने बहुत रोका, किंतु अपना राजमुकुट सिंहासन पर रख, राजा राजपाट छोड़कर पता नहीं कहां चले गए। उनके वियोग में प्रजा दुखी थी। सैकड़ों साल बीत गए, मगर आज भी उनके न्याय को लोग सराहते हैं। ●

Scanned with CamScanner

सोने की मोहर

— जीवराम जोशी

एक नट था। तरह-तरह के खेल दिखाता। गांव-गांव और नगर-नगर फिरता। एक बार वह वेणु नगर पहुंच गया। नगर के चौराहे पर वह खेल दिखाने बैठा। लोगों की भीड़ जमा हो गई थी। समय की बात— राजकुमार उधर से गुजर रहा था। उसने भी उसका खेल देखा। वह बहुत प्रसन्न हुआ।

नट के पास एक चिड़िया और एक तोता था। नट ने दोनों को कई तरह के खेल सिखलाए थे। उनके करतब देखकर लोगों ने खूब तालियां बजाईं।

खेल खत्म हुआ, तो राजकुमार ने नट को अपने पास बुलवाकर कहा— "यह चिड़िया और तोता मुझे दे दो।"

नट ने उत्तर दिया— "राजकुमार, ये तो मेरे साथी हैं। कितने वर्षों से मैंने इन्हें पाला है। इन्हें मैं किसी को नहीं दे सकता।"

राजकुमार ने कहा— "बदले में जो चाहोगे, मिलेगा।"

नट ने जवाब दिया— "राज्य मिले, तो भी चिड़िया और तोता किसी को नहीं दूंगा।"

राजकुमार गुस्सा हो गया। सेवकों से कहा— "ले लो ये पिंजरे!"

नट चतुर था। उसने पिंजरों का दरवाजा खोल दिया। चिड़िया और तोता नट के इशारे से ही खेल दिखलाते थे। वे तुरंत बाहर निकले और उड़ गए।

नट बोला— "राजकुमार जी, मेरा तोता और चिड़िया आपसे डर गए, इसीलिए उड़ गए।"

राजकुमार ने कहा— "तो इन्हें पकड़ लाओ।"

नट बोला— "अभी पकड़कर लाता हूं।"

अपना सारा सामान वहीं छोड़कर दौड़ पड़ा नट। चिड़िया और तोता तो ऊंचे और ऊंचे उड़ते जा रहे थे। नट उसी तरफ दौड़ा जा रहा था। राजकुमार को लग रहा था, वह उन्हें पकड़ने के लिए दौड़ा जा रहा है, लेकिन नट तो वहां से दौड़ता-दौड़ता गायब हो गया। उसकी राह देखते-देखते राजकुमार थक गया। वह वापस महल में लौट आया। राजा से सारी बात बताई। नट ने राजकुमार को धोखा दिया था, इसलिए राजा ने उसे सजा देने का निश्चय किया।

राजा ने ढिंढोरा पिटवाया— 'नट को पकड़वाने वाले को पांच सौ सोने की मोहरें इनाम में दी जाएंगी।' जगह-जगह इसकी घोषणा की गई। भागते फिर रहे नट ने भी यह घोषणा सुनी। उसने नट की वेश-भूषा बदलकर एक गरीब मजदूर का रूप बना लिया।

एक बार नट इसी तरह कुछ काम-धंधे की तलाश में कहीं जा रहा था। तभी एक चीख सुनाई दी। देखा तो बारह-तेरह साल का एक लड़का रो रहा था। एक आदमी उसे धक्के मार-मारकर आगे चलने के लिए कह रहा था। लड़के के सिर पर लकड़ियों का भारी बोझ था। लड़का बैठ गया था। उससे भारी बोझ उठाकर चला नहीं जा रहा था। नट वहां पहुंचा। उस आदमी से बोला— "इस बेचारे लड़के को क्यों मार रहे हो?"

आदमी ने कहा— "बदमाश चलता नहीं है।"

नट बोला— "इतना भारी बोझ यह लड़का नहीं उठा पा रहा है।"

आदमी ने कहा— "मैं क्या करूं? मुफ्त में नहीं उठवा रहा हूं इससे।"

नट बोला— "तो मजदूरी मत देना।"

उसने बताया— "यह मजदूर नहीं है।"

"तो कौन है?"— नट ने पूछा।

"मेरे बंधवा मजदूर का लड़का है। इसके बाप को मैंने सौ सोने की मोहरें दी थीं। उनके बदले में वह मेरा काम करता था। वह मर गया और अब उसका यह लड़का उसके स्थान पर मेरा काम करता है।"— आदमी ने कहा।

नट को दया आई। बोला— "यह तो बहुत गलत बात है। सौ सोने की मोहरोंके बदले लड़के का बाप नौकर बनकर काम करता था और मर गया। उसके स्थान पर उसके इस नाजुक नन्हे लड़के से तुम काम करा रहे हो। यह तो अन्याय है।"

Scanned with CamScanner

वह आदमी निर्दयी था। उसमें दया थी ही नहीं। खीझकर बोला— "व्यर्थ बीच में न बोलो। दया आती हो, तो सौ सोने की मोहरें तुम्हीं दे दो। लड़के को ले जाओ।"

नट के पास सौ सोने की मोहरें नहीं थीं। उसने उस आदमी से कहा— "तुम्हें सौ के बदले पांच सौ सोने की मोहरें दूंगा। चलो, मेरे साथ और इस लड़के को छोड़ दो।"

पांच सौ सोने की मोहरें की बात सुन, उस आदमी को आश्चर्य हुआ। उसे यह बात सच नहीं लग रही थी। उसने नट से कहा— "ऐसी झूठी बातों से दूसरों को बहकाना। जाओ, अपना रास्ता देखो। मुझे देर हो रही है। तुम्हें दया आती है, तो उठा लो यह बोझ ! तुम्हीं हमारे नौकर बन जाओ। फिर यह लड़का भले ही मौज करे।"

नट कुछ सोचने लगा। लड़के की आंखों में आंसू भरे थे। नट की तरफ देखकर वह जोर-जोर से रोने लगा था। उसका कोई नहीं था। उसकी मां भी बचपन में मर गई थी।

नट बोला— "लाओ, मैं यह बोझ उठा लेता हूं। तुम्हारे घर पहुंचा देता हूं, लेकिन इस छोटे बालक को दुःख न दो।"

—"जाओ, जाओ ! तुम आज मेरा बोझ उठा लोगे, लेकिन कल कौन उठाएगा !"

— "कल भी मैं उठाऊंगा।"

वह आदमी बोला— "फिर ! क्या हमेशा तुम बोझ उठाओगे ? यह काम तो इस लड़के को ही करना पड़ेगा। तुम अपना रास्ता देखो।"

नट ने कहा— "भले आदमी ! मैं हर दिन तुम्हारा क़ाम करूंगा। लड़के को छोड़ दो।"

— "इस लड़के को छोड़ दूंगा। फिर तुम्हें कहीं जाने नहीं दूंगा।"

"नहीं जाऊंगा।"— नट ने कहा।

— "सारा दिन मेरा काम करना पड़ेगा।"

— "करूंगा।"

— "और यदि भाग गए तो..."

—"भागूंगा तो नहीं, लेकिन कब तक मुझे तुम्हारी नौकरी करनी होगी ?"

— "जब तक इस लड़के के बाप द्वारा ली गई मोहरें मुझे वापस नहीं दे दोगे, तब तक तुम्हें मेरी नौकरी करनी होगी।"

"ठीक है।"— नट ने मंजूर कर लिया।

लड़के के सिर से बोझ उतारा। लड़का सोच रहा था— 'यह राहगीर कितना दयालु है ? मेरा दुःख दूर करने के लिए स्वयं नौकर बनने को तैयार हो गया है।' वह उसकी तरफ स्नेहभरी नजर से देखता रहा।

नट ने उस लड़के से पूछा— "बेटा, तुम्हारा नाम क्या है ?"

तभी वह आदमी बोला— "इस बात से तुम्हें क्या मतलब ? चलो, बोझ उठाओ।"

नट ने कहा— "ओ, भले आदमी ! ..."

— "भला आदमी क्या होता है ? मैं तुम्हारा मालिक हूं और तुम मेरे नौकर !"

नट हंसते हुए बोला— "ओ हो ! मैं भूल गया। तुम मालिक और मैं तुम्हारा नौकर। लेकिन इस लड़के से एक बात कहनी है।"

— "कह लो, जल्दी।"

नट ने लड़के के कान के पास मुंह ले जाकर धीरे से कहा— "तुम जल्दी से राजा के पास जाकर कहो, तुम्हें नट का पता मालूम है। और मेरा पता बता देना। राजा तुम्हें पांच सौ सोने की मोहरें इनाम में देगा। उसमें से सौ सोने की मोहरें इस आदमी को दे देना। फिर तो तुम छूट जाओगे। मैं भी छूट जाऊंगा।"



उस व्यक्ति ने नट की बात नहीं सुनी थी।

लड़के को आश्चर्य हुआ। उसने सोचा कि नट को राजा पहचानता होगा। उसका पता पाकर खुश होगा। पांच सौ सोने की मोहरें इनाम देगा। वह चल पड़ा राजमहल की तरफ।

नट ने बोझ उठा लिया। वह भी उस व्यक्ति के साथ चला गया।

लड़का दौड़ता-दौड़ता राजमहल पहुंच गया। चौकीदार ने उसे अंदर नहीं जाने दिया। लड़के ने कहा— "मुझे राजा से मिलना है।"

चौकीदार बोला— "जा पगले ! राजा से मिलकर तू क्या करेगा !"

— "लेकिन, मुझे राजा से एक बात कहनी है। मुझे जाने दो।"

किंतु चौकीदार ने उसे महल में नहीं जाने दिया। लड़का दूर जाकर बैठ गया। सोच रहा था— 'राजा महल से बाहर आएंगे, तब उन्हें बताऊंगा।' दोपहर बीत गई। शाम हुई। राजा रथ पर घूमने निकले। लड़का दौड़ पड़ा— "राजा जी... राजा जी... !"

चौकीदार ने रोका, लेकिन राजा ने देख लिया था। रथ रुकवाकर पूछा— "कौन है यह लड़का ?"

चौकीदार लड़के को राजा के पास ले आया। लड़के ने कहा— "राजा जी, उस नट का पता बताऊं ?"

राजा ने पूछा— "वही चिड़िया-तोते वाला ?"

"जी, हां।"— लड़के ने कहा।

"बताओ, तुम्हें इनाम मिलेगा। कहां है, वह ?"— राजा ने पूछा।

—"उसे एक आदमी ने अपना नौकर बना रखा है। सिपाहियों को भेजकर उसे बुलवा लें।"

राजा ने सिपाहियों को आज्ञा दी— "जाओ, इस लड़के के साथ और नट को पकड़ लाओ।"

सिपाही लड़के के साथ गए। उस व्यक्ति के घर पहुंचे। नट वहीं था। वह आदमी उससे काम करवा रहा था।

सिपाहियों ने उससे पूछा— "तुम्हीं नट हो ?"

— "जी, हां !"

उस आदमी ने कहा— "नहीं, यह तो मेरा नौकर है।"

सिपाही ने कहा— "चाहे जो हो, हम इसे राजा के पास ले जाएंगे।"

सिपाही उसे राजमहल ले आए। नट को देखकर राजा ने उसे मौत की सजा देने की आज्ञा दी।

यह सुनते ही वह लड़का रोने लगा— "नहीं, नहीं, नहीं ! इसे मौत की सजा न दें।"

राजा ने आश्चर्य से पूछा— "क्यों ?"

लड़के ने सारी बात बताते हुए कहा— "इस भले नट ने ही मुझे दुःख से छुड़ाया है। मेरे बदले स्वयं नौकर बना है। उसने ही मुझे कहा कि राजा को यह सूचना देकर पांच सौ सोने की मोहरें पा लूं।"

राजा ने नट से पूछा— "तुमने ऐसा क्यों किया ?"

वह बोला— "महाराज, मैंने इस लड़के को छुड़ा तो दिया, लेकिन यह कहां जाएगा, क्या करेगा ? इसका कोई नहीं है। इसलिए मैंने सोचा कि यह मुझे पकड़वा दे, तो इसे पांच सौ सोने की मोहरें मिल जाएंगी। उसमें से सौ सोने की मोहरें अपने मालिक को दे देगा, तो यह छूट जाएगा बंधन से। शेष चार सौ सोने की मोहरों से अपनी कोई जीविका चला सकेगा।"

पूरी कहानी सुनकर राजा ने सोचा— 'यह नट तो दया का पात्र है। एक लड़के को छुड़ाने के लिए स्वयं नौकर बना। लड़के को सुखी बनाने के लिए स्वयं को पकड़वाया और मरने के लिए तैयार है।'

दया और प्रेम दूसरे का मन जीत लेते हैं। राजा ने कहा— "तुमने दूसरे के लिए इतना सब किया है। तुम्हारी भलाई से मैं खुश हूं। जाओ, मैं तुम्हें छोड़ देता हूं। ये पांच सौ सोने की मोहरें भी तुम्हें इनाम देता हूं। हां, उस आदमी को मैं जरूर सजा दूंगा।"

राजा को प्रणाम कर, नट तथा वह लड़का पांच सौ सोने की मोहरें लेकर खुशी-खुशी चल पड़े।

(अनुवादक : गोपालदास नागर)



खरा आदमी

— संजीव शर्मा

समरपुर का राजा था महीपाल सिंह। जैसा नाम, वैसा ही वीर, धीर और साहसी। आसपास के राजा उसका नाम सुनकर थर-थर कांपते। उसकी तलवार का सामना करने का साहस किसी में न था।

एक बार महीपाल सिंह अपनी सेना के साथ युद्ध भूमि से लौट रहा था। पड़ोस के राजा तिलकचंद को उसने बुरी तरह हराया था। राजा को भी मामूली चोटें आई थीं। लेकिन जीत की खुशी में वह अपने घावों को भूल चुका था। तिलकचंद ने बहुत-सी धन-सम्पदा और हीरे-जवाहरात दे, संधि की थी। महीपाल को इस बात का गर्व था। जीत की खुशी जो ठहरी। ढोल, तुरही की आवाजों से आसमान गूंज रहा था।

चलते-चलते एक जगह महीपाल की आंखें चौंधियाईं। सामने से एक तेजस्वी साधु चला आ रहा था। वह तुरंत घोड़े से उतरा। साधु को प्रणाम किया। साधु बोला— "राजन, मेरा आशीर्वाद है, तुम्हारा यश दूर-दूर तक फैलेगा। तुम्हारे पास धन-सम्पत्ति, महल-दुमहले बहुत हैं। अब सच्चे रत्नों की तलाश करो। तुम्हें उन्हीं की जरूरत है।"

"सच्चे रत्न! मैं आपकी बात समझा नहीं।"— राजा ने सिर झुकाकर कहा।

साधु बोला— "बेशक महल-दुमहले खड़े करो, लेकिन ऐसे दो-चार व्यक्ति जरूर तलाश करो, जो हर हाल में तुम्हारा साथ दें।"

राजा साधु को प्रणाम करके आगे चल दिया। समरपुर पहुंचने पर उसका भव्य स्वागत हुआ। प्रजा ने जय-जयकार किया। लेकिन महीपाल सिंह खोया-खोया-सा था। साधु की बात उसके मन को कचोट रही थी।

महीपाल ने इसके बाद एक-एककर, राज्य के सभी प्रमुख व्यक्तियों को परखा। लेकिन उसे एक भी ऐसा नहीं दिखाई पड़ा, जो बुरे वक्त में उसका साथ दे सके। राजा की चिंता बढ़ गई।

एक बार राज दरबार में दो नवयुवक आए। उन्होंने राजा से प्रार्थना की— "महाराज, हमें अपनी सेवा में रख लीजिए।"

राजा ने गौर से उन्हें देखा। पूछा— "आप में ऐसा क्या गुण है?"

दोनों नवयुवक एक साथ बोले— "देशभक्ति और ईमानदारी! आप चाहें, तो परीक्षा लेकर देख लें।"

उन नवयुवकों के नाम थे— सोनल और भीमल। राजा ने दोनों को दरबार में रख लिया।

कुछ दिन बाद राजा महीपाल को गुप्तचर ने आकर सूचना दी— "महाराज, बहुत बुरी खबर है। हमारे राज्य पर दो ओर से आक्रमण की तैयारियां चल रही हैं। एक ओर से तिलकचंद, दूसरी ओर से उसके मित्र जोरावर ने हमला करने की योजना बनाई है।"

सुनकर राजा गंभीर हो गया। कुछ सोचकर उसने कहा— "दो शत्रुओं से एक साथ भिड़ना हमारे लिए मुश्किल है। एक ही रास्ता है। आधी सेना उत्तर में

रहे, आधी दक्षिण में। मैं उत्तर में लड़ूंगा। दक्षिण में मेरा वेश धारण कर कोई और व्यक्ति लड़े। बताइए, आपमें से कौन तैयार है?"

सुनकर जैसे सभी को सांप सूंघ गया हो। किसी ने उत्साह नहीं दिखाया। तभी वे दोनों युवक एक साथ खड़े हुए।

भीमल बोला— "महाराज, उत्तर और दक्षिण दोनों मोर्चे पर आपका रूप धारण कर हम लड़ेंगे। आप मित्र देशों से जाकर सहायता मांगिए। आपके आने तक हम शत्रुओं को रोक सके, तो ठीक है। नहीं तो लड़ते-लड़ते मातृभूमि के काम आएंगे।"

राजा को यह सुझाव पसंद आया। सोनल और भीमल को समरपुर की रक्षा का भार सौंप, महीपाल रातों-रात पड़ोसी राजाओं से मिलने चल पड़ा। कई राजाओं ने सहायता देने का वचन दिया। राजा का मित्र शूरसेन तो तुरंत सेना लेकर साथ चल पड़ा।

जब महीपाल शूरसेन के साथ समरपुर आया, तो देखा, भयानक युद्ध छिड़ चुका था। सोनल और भीमल महीपाल का वेश धारण कर लड़ रहे थे। बुरी तरह घायल हो चुके थे। फिर भी उनका उत्साह कम नहीं हुआ था। दोनों शत्रु राजा समझ रहे थे, राजा महीपाल खुद युद्धभूमि में है, इसलिए वे पूरी हिम्मत से नहीं लड़ पा रहे थे।

राजा महीपाल ने आते ही उत्तरी मोर्चा खुद संभाला। दक्षिण की ओर शूरसेन चल पड़ा। समरपुर की सेना में नया जोश आ गया। शत्रु राजा तिलकचंद और जोरावर को बुरी तरह मुंह की खानी पड़ी।

युद्ध समाप्त हुआ, तो राजा महीपाल को सोनल और भीमल का ख्याल आया। दोनों के शरीर छलनी हो चुके थे। इलाज कराया गया, तो ठीक होने में कई महीने लग गए।

सोनल और भीमल राज दरबार में आए, तो राजा ने स्वयं उनका स्वागत किया। गदगद स्वर में बोला— "ये हमारे राज्य के सच्चे रत्न हैं। धन-दौलत, महल-दुमहलों से कही बड़ा है खरा और देशभक्त आदमी।" ●

रेत में जल

—कमला चमोला

अवंतिपुर के राजा शुभ्रक बड़े ही दानी तथा परोपकारी थे। कोई भी याचक उनके दरबार से खाली हाथ नहीं लौटता था। राजा की दान-वीरता की ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई थी। राजकोष के धन को भी वह परोपकार में लगाते थे। उनकी प्रजा प्रसन्न तथा खुशहाल थी।

एक दिन दरबार में कोई महात्मा आए। बोले—"राजन्, हम तुमसे कुछ मांगने आए हैं।"

"आप आज्ञा करिए महात्मन! आपकी जो भी इच्छा होगी, पूरी की जाएगी।" राजा शुभ्रक ने महात्मा से कहा।

राजा की बात सुनकर ऋषि कुछ देर असमंजस की स्थिति में खड़े रहे। फिर बोले—"मैं जो मांगू, मुझे मिलेगा, इसमें मुझे संदेह है।"

"हमारे महाराजा की दान-वीरता पर संदेह है?"—पास बैठा मंत्री मुसकराया। राजा बोले—"लगता है, आप हमारे राज्य में नए आए हैं, वरना इस तरह की बात नहीं करते। अगर आपको देने लायक वस्तु हमारे पास होगी, तो अवश्य देंगे। दान और परोपकार हमारे जीवन के अविभाज्य अंग बन चुके हैं।"

राजा शुभ्रक की बात सुनकर महात्मा बोले—"क्या आप शंखचूड़ और विनयहरि से भी अधिक परोपकारी और दानी हैं?"

"शंखचूड़ और विनयहरि कौन हैं?"—राजा शुभ्रक ने विस्मय से पूछा।

—"उन्हें जानना है, तो आपको साधारण आदमी बनकर अकेले ही उनके पास जाना होगा। उनसे मिलकर यदि लगे कि आप उनसे भी बड़े परोपकारी हैं, तभी मैं आपसे कुछ मांगूगा।"

"ठीक है, महात्मन!"—राजा शुभ्रक बोले—"आप तब तक राजमहल के अतिथि गृह में ठहरिए। मैं अवश्य शंखचूड़ और विनयहरि से

मिलूंगा। आप मुझे उनका पता-ठिकाना बता दीजिए।''

महात्मा से दोनों का पता मालूम कर, राजा शुभ्रक चल पड़े। शंखचूड़ राज्य की पूर्वी सीमा से लगे विशाल रेगिस्तान में रहते थे। राजा घोड़े पर सवार अकेले ही चले जा रहे थे। जब रेतीला इलाका प्रारंभ हुआ, तो उन्हें घोड़े की जगह ऊंट की सवारी लेनी पड़ी। सूरज अंगारे उगल रहा था। दूर-दूर तक सिवाए रेत के और कुछ न था। प्यास से राजा का कंठ सूख रहा था। फिर भी शंखचूड़ से मिलने की उत्कंठा में वह आगे बढ़ते जा रहे थे। शाम तक राजा शुभ्रक के पास का पानी समाप्त हो गया। उन्हें लगा, यदि वह शीघ्र ही अपनी मंजिल पर न पहुंचे, तो अवश्य प्यास से बेहोश हो जाएंगे। तभी उन्हें दूर पानी का चश्मा और दो-चार हरे पेड़ नजर आए। वह समझ गए कि अब अपने गन्तव्य पर पहुंच गए हैं। चश्मे के पास पहुंचकर वह ऊंट से उतरे और सामने बनी एक झोपड़ी में गए। वहां एक बूढ़ा बैठा था, जो राजा शुभ्रक को देखकर बोला—''आओ, बैठो पथिक! मुंह-हाथ धोकर आराम कर लो।''

राजा शुभ्रक ने मुंह-हाथ धोए। फिर पानी पीकर तरोताजा हो गए। वह उस वृद्ध शंखचूड़ के पास जाकर बोले—''बाबा, इस विशाल रेगिस्तान में भला आप अकेले क्यों रहते हैं?''

राजा की बात सुनकर शंखचूड़ हंस पड़े। चश्मे की ओर इशारा करके बोले—''इस पानी के चश्मे के कारण मैं यहां हूं। वैसे रंगपुर में मेरी हवेली और नौकर-चाकर हैं।''

''उन सब सुख-सुविधाओं को छोड़कर आप भला इस चश्मे से क्यों बंधे हैं। क्या है इसमें ऐसा?'' —राजा ने विस्मय से पूछा।

''इस चश्मे की रक्षा करता हूं। यहां अक्सर रेत के अंधड़ चलते हैं। टीले के टीले रेत उड़कर एक जगह से दूसरी जगह पहुंच जाती है। मीलों तक फैले इस रेगिस्तान में पानी सिर्फ इसी चश्मे में है। कई बार रेत का अंधड़ इसे भी रेत के नीचे दबा देता है। मैं ऐसे में तुरंत फावड़े से रेत हटाकर चश्मे के पानी को बचा लेता हूं। यदि मैं ऐसा न करता, तो यह पानी का भरा चश्मा कभी का रेत के नीचे दबकर समाप्त हो गया होता।''

—''पर इससे आपको क्या लाभ?''

—''मुझे तो नहीं, पर तुम जैसे पथिकों को तो है। राहगीरों का कारवां अक्सर यहां से गुजरता रहता है। उनकी प्यास इसी चश्मे से बुझती है।''

शंखचूड़ की बात सुनकर राजा शुभ्रक आश्चर्य से जड़ रह गए। अपने घर बार और सुखों का परित्याग कर, कोई इस रेगिस्तान में सिर्फ राहगीरों के सुख के लिए जी रहा हो, यह उनके लिए अकल्पनीय था। राजा शुभ्रक सोचने लगे—'मैं जो परोपकार करता हूं, वह राजकोष के धन से करता हूं। किसी की मदद करनी हो, तो सेवकों के द्वारा करवाता हूं। अपने सुखों का परित्याग करके मैंने कभी किसी के लिए कुछ नहीं किया। सचमुच शंखचूड़ के परोपकार के समक्ष तो मेरा दान और सेवा कुछ भी नहीं।' वह उसी समय





वापस लौट पड़े। दरबार में आकर वह महात्मा के चरणों में गिर पड़े और बोले—''आपने मेरी आंखें खोल दीं। मेरे अंदर का अहंकार दूर कर दिया। सचमुच शंखचूड़ के त्याग के सामने मेरा त्याग कुछ भी नहीं। कल मैं विनयहरि से भी मिलूंगा।''

अगले दिन राजा शुभ्रक विनयहरि ब्राह्मण का पता पूछते-पूछते आगे बढ़ रहे थे। अंत में मछुआरों के एक मौहल्ले में विनयहरि का पता चला। विनयहरि एक चबूतरे पर बैठे थे। नीचे जमीन पर गरीब मछुआरों के बच्चे उनसे पढ़ रहे थे। राजा शुभ्रक चुपचाप वहां खड़े रहे। कुछ देर बाद विनयहरि ने बच्चों को पढ़ाई का काम दिया और स्वयं टहलने लगे। विनयहरि की विद्वता से राजा शुभ्रक बड़े प्रभावित हुए। बोले—''महोदय, आप तो बड़े ही विद्वान लग रहे हैं, परंतु मछुआरों के गरीब बच्चे भला आपको बदले में क्या दे पाते होंगे?''

—''मैं विद्या दान के बदले कुछ नहीं लेता। मैं बहुत गरीब हूं, परंतु भगवान ने मुझे विद्या दी है। उसी को मैं निःशुल्क बांटता हूं।''

—''आप नगर के सेठों के बच्चों को पढ़ाएं, तो आपको काफी धन प्राप्त हो सकता है। आप उन लोगों को क्यों नहीं पढ़ाते?''

राजा शुभ्रक की बात सुन विनयहरि मुसकराने लगे। बोले—''उन्हें पढ़ाने वाले बहुत हैं, परंतु इन गरीब मछुआरों को कोई नहीं पढ़ाता, क्योंकि ये बदले में कुछ नहीं दे सकते। इन्हें मेरी आवश्यकता है।''

''लेकिन फिर आपका गुजारा कैसे चलता है?''—राजा ने पूछा।

—''एक छोटा-सा खेत का टुकड़ा है। उसी की ऊपज से जीवन यापन हो रहा है।''

—''आपको राजा शुभ्रक के दरबार में जाकर उनसे कुछ मांगना चाहिए। वह अवश्य आपकी मदद करेंगे।''

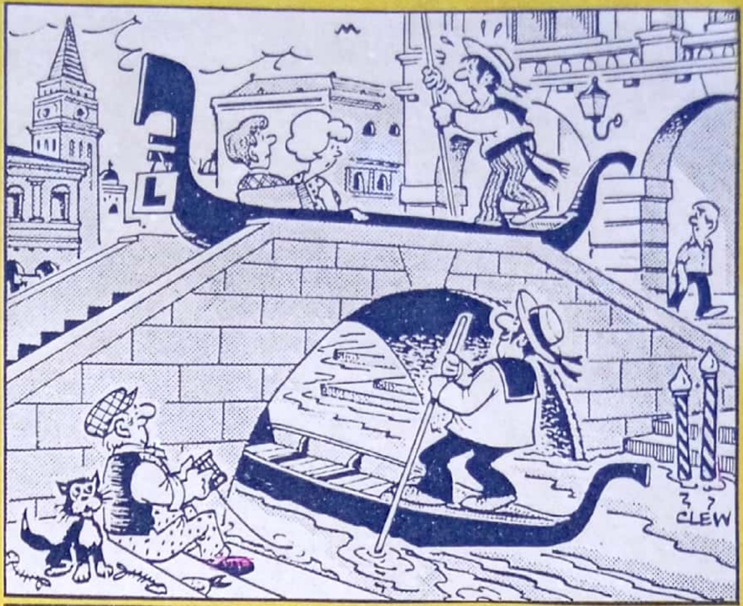
राजा की बात सुनकर विनयहरि गंभीरता से बोले—''हमारे राजा ने लोगों को दान दे-देकर अकर्मण्य बना दिया है। जब भी किसी के ऊपर कोई विपदा आती है, तो वह परिस्थितियों से लड़ने के बजाए, राजा के दरबार में याचक बनकर चला जाता है। राजा इसी तरह बिना सोचे-विचारे दान करते रहे, तो एक दिन सारी प्रजा निठल्ली और बेकार हो जाएगी। कोई भी पुरुषार्थी नहीं रहेगा। लोग मेहनत से जी चुराने लगेंगे।''

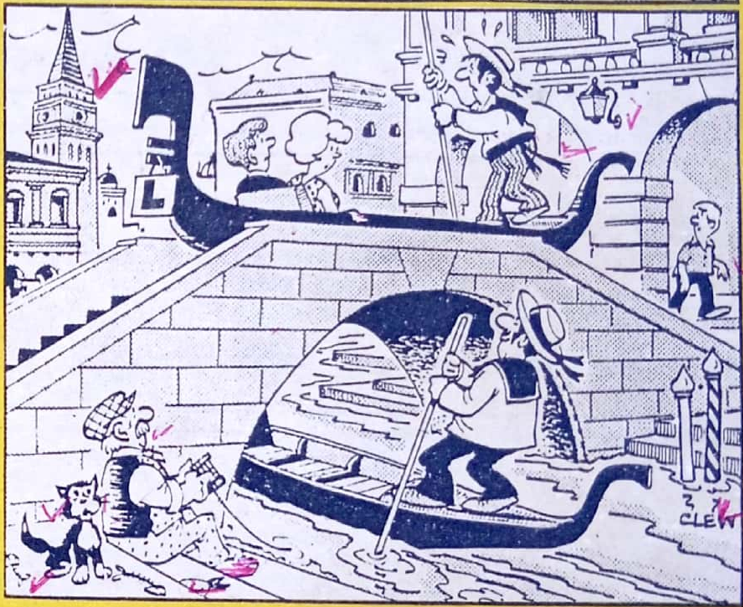
विनयहरि की बात सुनकर राजा शुभ्रक की आंखें खुल गईं। वह समझ गए—'यूं दोनों हाथों से बिना सोचे-समझे दान देने से कोई फायदा नहीं। अपने आपको बड़ा दानी कहलाने के लिए ही मैं ये दान दिया करता हूं, जबकि विनयहरि जैसे लोग निःस्वार्थ भाव से विद्या का दान दे रहे हैं, जो मेरे दान से कहीं ऊंचा और श्रेष्ठ है। मैं तो सचमुच अपने ही हाथों अपनी प्रजा को आलसी बना रहा हूं।' राजा शुभ्रक महल में लौटे, तो सेवक ने उन्हें बताया कि साधु बिना कुछ कहे चुपचाप चले गए हैं। राजा जान गए कि साधु के रूप में उनका कोई हितचिंतक ही उन्हें सही मार्ग दिखाने आया था। इस घटना का राजा पर बहुत प्रभाव पड़ा। अब दान देने की जगह, वह अपने राज्य में कई लाभकारी योजनाएं बनाने में धन व्यय करने लगे, ताकि प्रजा को श्रम करने की आदत पड़े और रोजगार भी मिले। ●

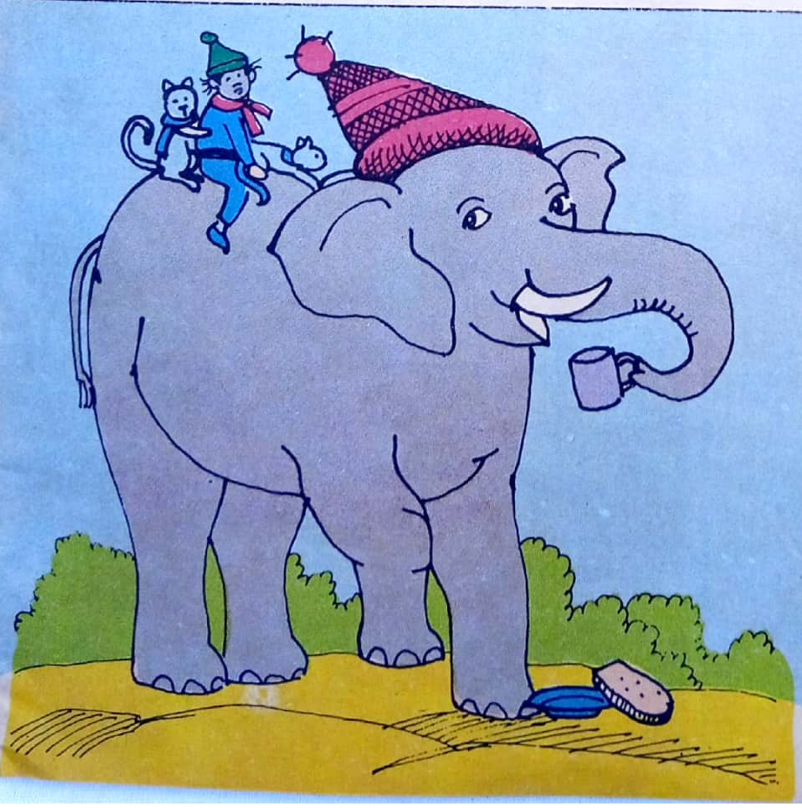
आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियां कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है। १० गलतियां ढूंढ़ने वाला **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित **समय— १५ मिनट।**







कहानी-लिखो : ७०

सामने बने चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए। उसे १० सितम्बर '८९ तक 'नंदन' कार्यालय में भेज दीजिए। पसंद की गई कहानी को पुरस्कृत कर प्रकाशित किया जाएगा। **परिणाम : नवम्बर '८९ अंक**

चित्र-पहेली : ७०

'मेरा प्रिय खेल' विषय पर रंगीन चित्र बनाइए। उसे १० सितम्बर '८९ तक **'सम्पादक 'नंदन', हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-१०००१** के पते पर भेज दीजिए। चुना गया चित्र 'नंदन' में छपेगा। इनाम भी मिलेगा। **परिणाम : दिसम्बर '८९ अंक**

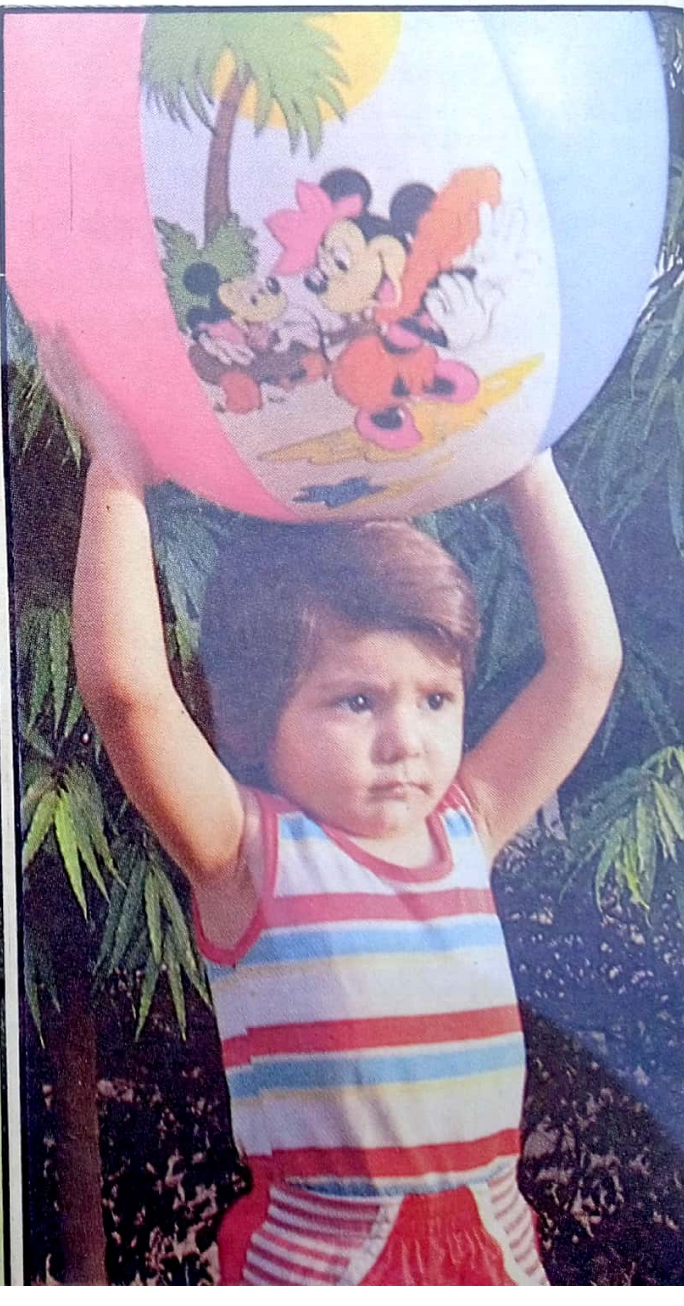
Scanned with CamScanner

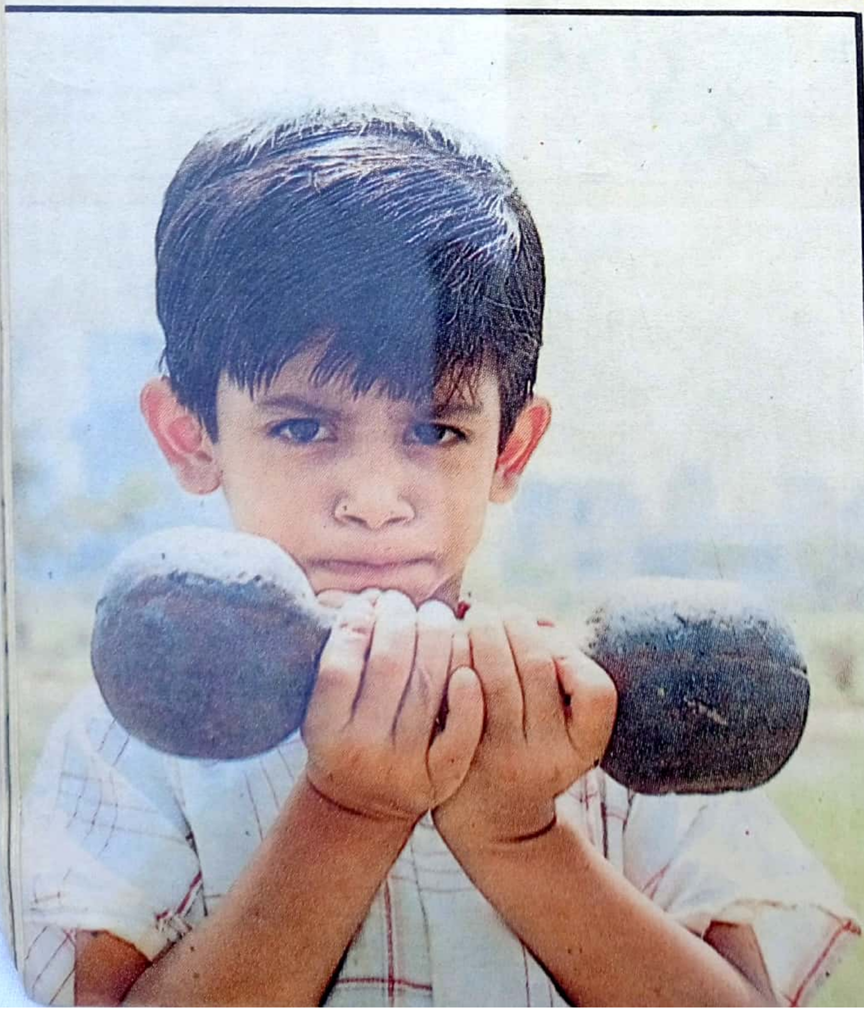




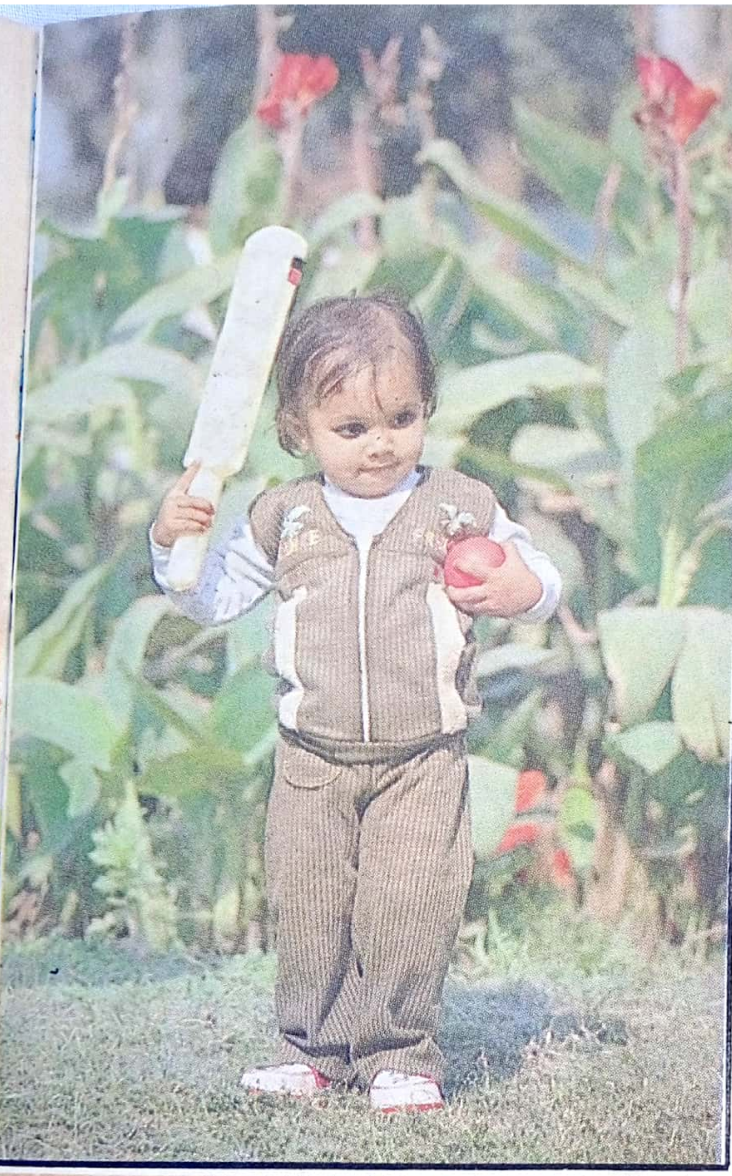
आए दिन खेल के

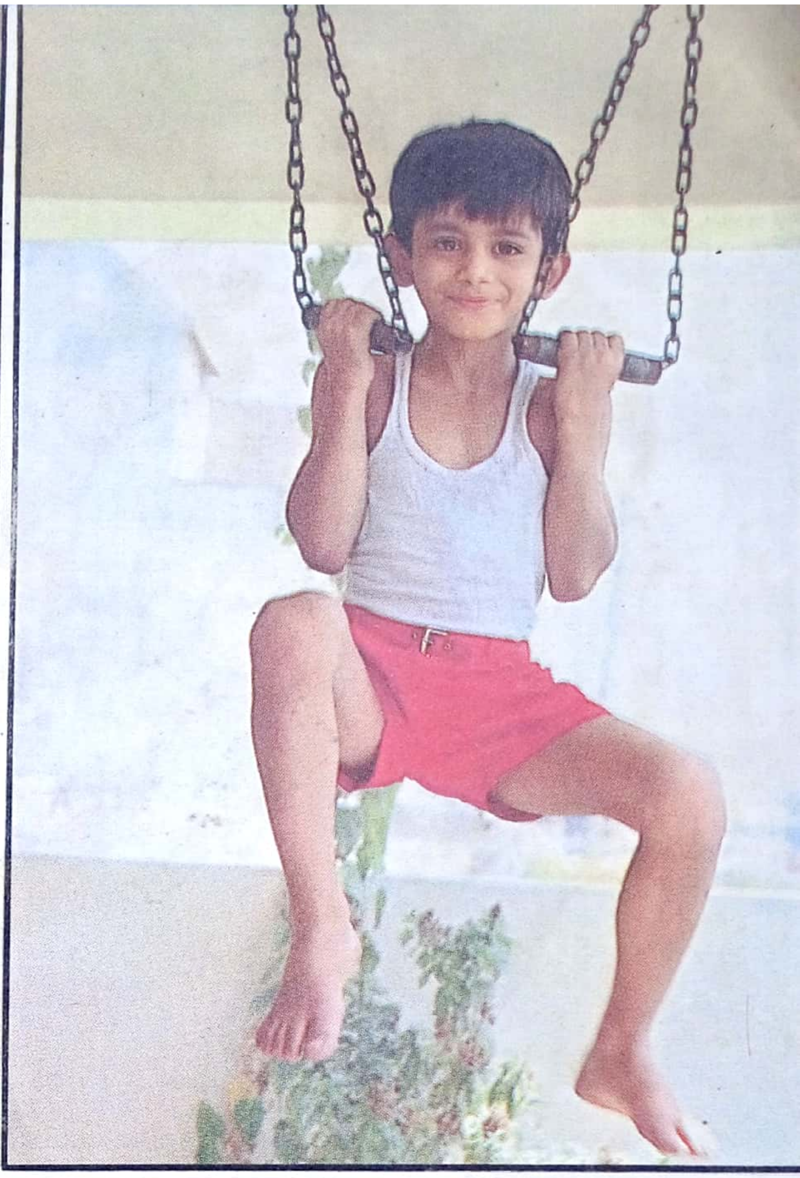
चित्र : शमशेर ए. खान, क्लाउन, ज्ञान दीक्षित

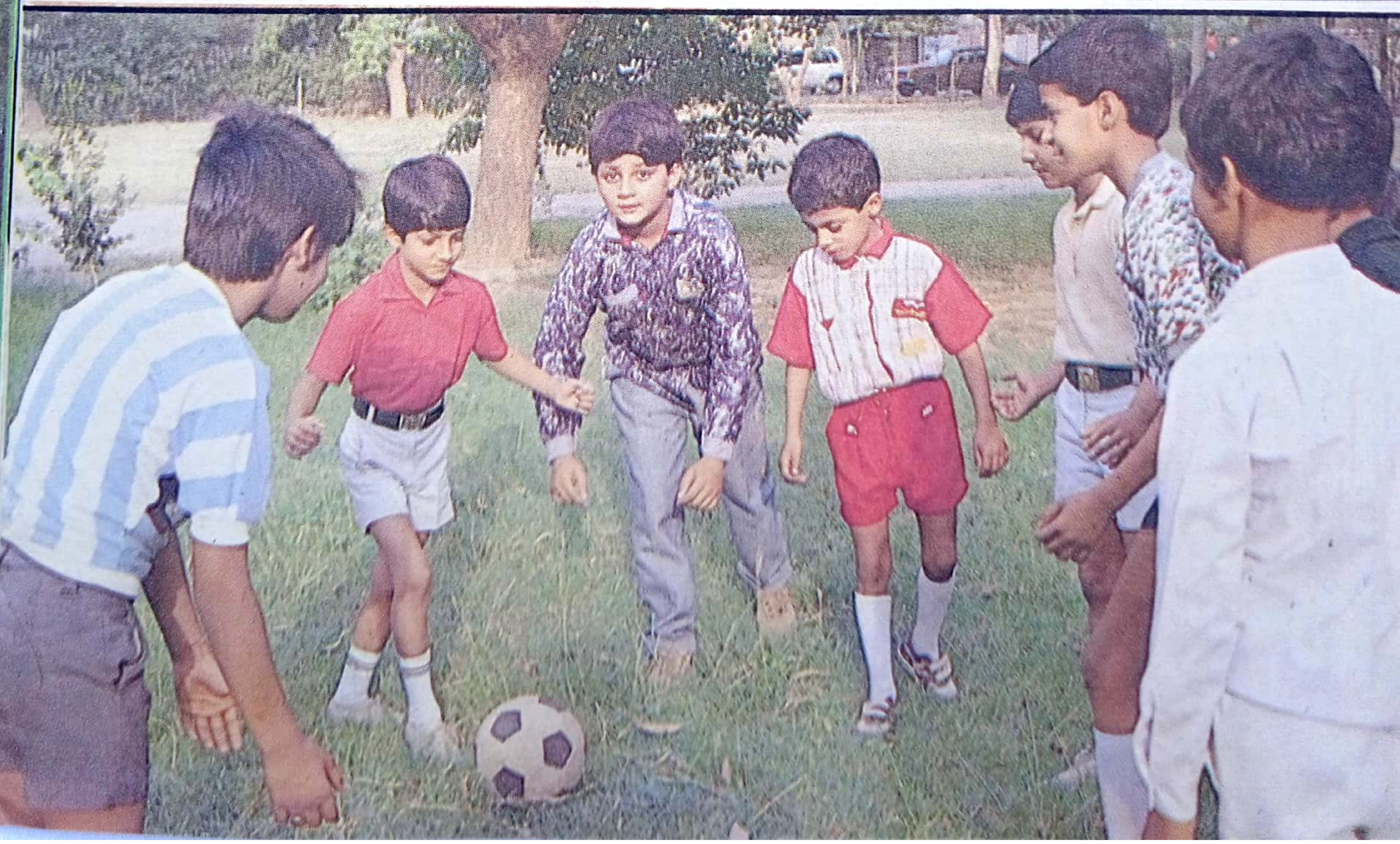




Scanned with CamScanner







Scanned with CamScanner



दीवार पर चित्र

—महाकवि राजशेखर

महाराजा विद्याधर मल्ल कलचुरी देश के राजा थे। उनकी सेना शक्तिशाली थी। उन्होंने कई राज्यों पर विजय प्राप्त की थी। उनका मंत्री था—भागुरायण। भागुरायण महारानी मदनावती का भाई था। राजकाज का सारा काम वही देखता था।

विद्याधर मल्ल ने भागुरायण से आसपास के छोटे-छोटे राज्यों की व्यवस्था करने को कहा। भागुरायण ने सुझाया—"महाराज, जीते हुए राज्यों को सामंतों में बांट दीजिए। इससे शासन की अच्छी व्यवस्था हो जाएगी।"

मंत्री की बात मान, राजा ने राज्यों को सामंतों में बांट दिया। चंद्र वर्मा को लाटदेश का सामंत बना दिया गया। वह भी महारानी का रिश्ते में दूर का सम्बंधी था।

चंद्र वर्मा के कोई संतान न थी। एक दिन वह चिंता में डूबा हुआ था, तभी द्वारपाल ने किसी के आने की सूचना दी। आने वाले कोई महात्मा थे। सामंत ने उठकर वंदना की। महात्मा उनकी चिंता का कारण समझ गए। बोले—"आप चिंता न करें। कुछ दिनों में आपको संतान सुख मिलेगा। हां, ध्यान रहे, उसका पालन-पोषण सावधानी से करना।" कहकर महात्मा चले गए।

कुछ दिन बाद चंद्र वर्मा के घर पुत्री ने जन्म लिया। वह सोचने लगा—'पुत्र होता, तो मेरा उत्तराधिकारी बनता। शायद कुछ दिन बाद पुत्र उत्पन्न हो जाए। तब तक मैं इस कन्या को ही पुत्र मानकर

पालन करूं ।' उसने बेटी का नाम भी लड़के जैसा मृगांक वर्मा रख दिया । चंद्र वर्मा ने महल में रहने वाले नौकरों से पुत्री के उत्पन्न होने का समाचार गुप्त रखने को कहा । उन्हें बताया—'यदि कोई पूछे, तो कहना पुत्र पैदा हुआ है ।'

मृगांक वर्मा का पालन-पोषण लड़के की तरह होने लगा । चंद्र वर्मा ने उसे समझा दिया कि वह सबसे लड़के जैसा ही व्यवहार करे । किसी को सच्चाई न बताए ।

एक दिन चंद्र वर्मा अपने कक्ष में आराम कर रहा था । दरबान ने किसी ज्योतिषी के आने की सूचना दी । आदर-सत्कार के बाद चंद्र वर्मा ने ज्योतिषी से आने का कारण जानना चाहा । वह बोला—"मैं तुम्हें पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद देने आया हूं । हां, मैं आपकी कन्या को भी देखना चाहता हूं ।"

"आप क्या कह रहे हैं ?"—सुनकर चंद्र वर्मा चौंका ।

—"हां, मैं सच्चाई जानता हूं । जल्दी कन्या को बुलवाइए । मुझे जल्दी वापस जाना है ।"

चंद्र वर्मा क्या करता ! उसने तुरंत कन्या को बुलावा भेजा । कन्या को देखते ही ज्योतिषी बोला—"यह कन्या बहुत ही सौभाग्यशाली है । इसके भाग्य में तो चक्रवर्ती राजा की पत्नी बनना लिखा है । आप सावधानी रखिएगा । राज्य को उत्तराधिकारी भी मिलेगा ।" इतना कहकर वह चला गया ।

मृगांक वर्मा की सुंदरता व वीरता सबका मन मोह रही थी । यह चर्चा भागुरायण के कानों में पहुंची । वह सोचने लगा—'चंद्र वर्मा के घर लड़की उत्पन्न होने की भविष्यवाणी सुनी जा रही थी । लेकिन यहां तो लड़का पैदा हुआ । अब मैं राजा को चक्रवर्ती राजा कैसे बनाऊंगा ? ज्योतिषी ने बताया था, चंद्र वर्मा के घर उत्पन्न होने वाली कन्या का जिससे विवाह होगा, वह चक्रवर्ती राजा बनेगा । अब क्या किया जाए ?' भागुरायण इसी उधेड़-बुन में बैठा था, तभी महारानी मदनावती वहां पहुंची । चिंता का कारण पूछने पर भागुरायण ने कहा—"बहन, चंद्र वर्मा के घर पुत्र पैदा हुआ है । कुछ दिन वहां रहकर मन बहलाने की सोच रहा हूं । अच्छा होगा, आप भी साथ चलो ।"

महारानी बोली—"तुम ही चले जाओ । हो सके तो लड़के को यहीं ले आना । अकेले में मेरा मन नहीं लगता । साथ रहेगा, तो समय आराम से कट जाएगा ।"

भागुरायण चंद्र वर्मा के घर पहुंचा । चंद्र वर्मा ने उसका खूब आदर-सत्कार किया । भागुरायण ने मृगांक वर्मा से बातचीत करनी चाही, पर वह उनके पास रुका ही नहीं । भागुरायण ने अंदाज लगाया—लगता है, मुझसे सच्चाई छिपाई जा रही है । कहीं लड़की को लड़के के वेश में तो नहीं रखा हुआ है !

कुछ दिन वहां रहकर वह लौटने की सोचने लगा । चंद्र वर्मा से बोला—"मैं अब लौटना चाहता हूं। चलते समय महारानी मदनावती ने मृगांक वर्मा को साथ लाने को कहा था । उसे हमारे साथ भेज दीजिए ।"

चंद्र वर्मा ने कहा—"आप एक दिन और ठहर जाइए । मैं उसे आपके साथ भेज दूंगा ।"





रात हो गई । चंद्र वर्मा की आंखों में नींद कहां वह सोच रहा था—'मृगांक वर्मा को मदनावती के पास छोड़ना क्या ठीक होगा ? मृगांक वर्मा चला जाएगा, तो सच्चाई यहां के लोगों से छिपी रहेगी । समय आने पर सब ठीक हो जाएगा । क्या पता, विद्याधर मल्ल की नजर भी उस पर पड़ जाए और उसका विवाह उनसे ही हो जाए ।'

अगले दिन चंद्र वर्मा ने भागुरायण के साथ मृगांक वर्मा को भेज दिया । मृगांक वर्मा की सेवा में एक दासी नियुक्त कर दी गई । उसका नाम था—विचक्षणा । भागुरायण ने उसे समझाया कि वह मृगांक वर्मा पर पल-पल नजर रखे । सारी सूचना उस तक पहुंचाती रहे ।

मंत्री भागुरायण को कुछ दिन बाद विचक्षणा ने बताया—"मृगांक वर्मा लड़का नहीं, लड़की है ।" मंत्री ने उसे पुरस्कार देते हुए कहा—"यह बात तुम किसी से न कहना ।"

सच्चाई जान, भागुरायण का मन प्रसन्न हो उठा । वह विद्याधर मल्ल का विवाह लड़का बनी मृगांक वर्मा से कराने का उपाय सोचने लगा । उसने अपने प्रिय शिष्य हरदास को बुलाया । उसे सारी बात बताई । दोनों ने काफी देर तक विचार-विमर्श किया ।

महाकवि राजशेखर—संस्कृत के प्रतिभा सम्पन्न रचनाकार । इनका जन्म लगभग एक हजार वर्ष पूर्व हुआ था । विदर्भ निवासी थे । कर्पूर मंजरी, बाल रामायण, बाल भारत, विद्धशाल भंजिका तथा काव्य मीमांसा प्रमुख रचनाएं हैं । 'विद्धशाल भंजिका' की कथा संक्षेप में दे रहे हैं ।—सं.

एक दिन की बात है । राजा सोकर उठे, तो अपने मित्र चारायण को बुलवाया । उससे अपने सपने की बात बताई । चारायण के पूछने पर राजा ने सपने में देखी गई कन्या के बारे में बताया । चारायण ने राजा से कुछ नहीं कहा ।

चारायण मंत्री भागुरायण के पास पहुंचा । राजा के सपने की उसे जानकारी दी । मंत्री ने सोचा—'लगता है, हमारे राजा जल्दी ही चक्रवर्ती राजा बनने वाले हैं ।'

अगले दिन मंत्री ने हरदास से कहा—"उद्यान के समीप एक सुंदर भवन बनाओ ।" हरदास ने कुछ ही दिन में भवन बनवा दिया । भवन में एक से बढ़कर एक सुंदर प्रतिमाएं लगाई गईं । उसकी दीवार में एक सुंदर नारी का चित्र बनाया गया । चित्र बहुत बेजोड़ था ।

चारायण सैर के बहाने राजा को उद्यान में ले गया । राजा ने भवन में प्रवेश किया । सुंदर प्रतिमाओं ने उनका ध्यान खींचा । तभी चारायण बोला—"यहां तो कुछ भी नहीं है । दीवार में बना चित्र तो देखो ।"

राजा दीवार की ओर बढ़े । चित्र देखते ही बोले—"अरे, यह तो उसी कन्या का चित्र है, जिसे मैंने स्वप्न में देखा था । पर यह कोई अप्सरा लगती है ।" कहकर राजा उस चित्र को देर तक एकटक देखते रहे । चारायण कुछ आगे बढ़ गया । वह छिपकर राजा को देखने लगा । उसने समझ लिया, राजा इस कन्या पर मोहित हो गए हैं । यह खबर उसने मंत्री भागुरायण को दी ।

इधर मृगांक वर्मा को पाकर रानी बड़ी खुश थी । वह उसे खेल-खेल में स्त्री की वेश-भूषा पहना देती । उससे हंसी-मजाक करती । सच्चाई से अभी दूर थी ।

एक दिन रानी के कानों में खबर पड़ी कि महाराजा, चंद्रसेन की कन्या कुवलयमाला से विवाह करने की सोच रहे हैं। मदनावती यह कैसे बरदाश्त करती। उसने राजा का मजाक उड़ाने की सोची। वह ताक में लगी रहती कि मौका पाकर राजा को कैसे छकाया जाए।

इधर भागुरायण ने चालाकी से ऐसे अवसर खोजे, जिससे राजा व मृगांक वर्मा का मिलना-जुलना बढ़ गया।

'राजा का विवाह कुवलयमाला से नहीं होने दूंगी।'—महारानी ने तय कर लिया था। उसने एक उपाय सोचा—'मृगांक वर्मा का विवाह कुवलयमाला से करा दिया जाए, तो रास्ते का कांटा साफ हो सकता है।'

पर यह हो कैसे ? इसके लिए रानी ने एक दासी को अपनी तरफ मिलाया। सारी बातें समझा दीं। कुछ दिन बाद, रानी ने सारी योजना समझाकर उसे राजा के पास भेज दिया।

एक दिन दासी राजा से बोली—"महाराज, आपको महारानी ने उद्यान में बुलाया है। आपका विवाह होगा।" राजा की समझ में कुछ न आया। उसने अपने मित्र चारायण को रानी का संदेश बताया।

चारायण बोला—"आप वहां जरूर जाओ। आज आपका विवाह उस कन्या से हो जाएगा, जिसे आपने सपने में देखा था।"

राजा उद्यान में पहुंचे। रानी ने बहुत-से लोगों को पहले से ही वहां इकट्ठा किया हुआ था। भागुरायण व चारायण भी वहां थे।

रानी ने मजाक-मजाक में मृगांक वर्मा को स्त्री की वेश-भूषा पहनाई। वह उसे लेकर राजा के सामने आई। दोनों ने एक-दूसरे के गले में पुष्पमाला डाल दीं। दोनों का विवाह सम्पन्न हो गया। यह होने पर रानी मन ही मन हंस रही थी—'कैसे एक लड़के के साथ विवाह कर, राजा को मूर्ख बनाया।'

तभी चंद्र वर्मा का दूत वहां आया। वह बोला—"महाराज, चंद्र वर्मा के घर पुत्र उत्पन्न हुआ है। उन्होंने कहलवाया है कि रानी जी मृगांक वर्मा का विवाह कर दें।"

रानी ने कुवलयमाला को बुलाने का आदेश दिया। सोचा—'मृगांक वर्मा एवं कुवलयमाला की जोड़ी अच्छी रहेगी।'

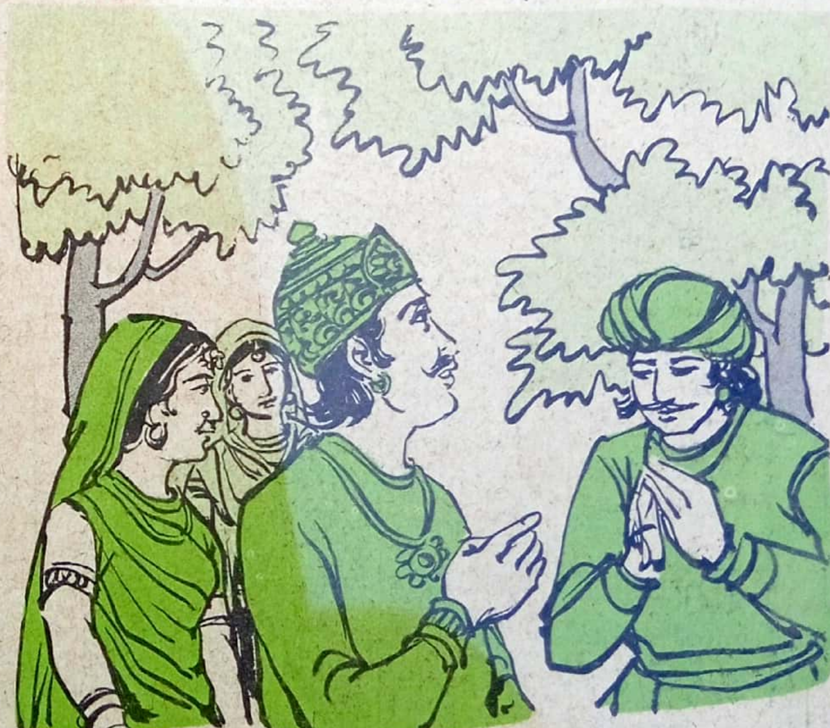
मंत्री बोला—"महारानी जी, आपने राजा का विवाह मृगांक वर्मा से कर दिया है। मृगांक वर्मा लड़का नहीं, लड़की है। इसका नाम है—मृगांकावली।"

"मैं ठगी गई !"—कहकर रानी नाराज होने लगी।

चारायण ने कहा—"यह सब खेल आपने ही रचाया था। इसमें हमारा क्या दोष ? अब आप नई रानी को आशीर्वाद दीजिए।"

रानी आशीर्वाद देने को आगे बढ़ी थी, तभी कलचुरी का सेनापति वहां उपस्थित हो गया। उसने कहा—"महाराज, आपकी सेना ने दक्षिण के शत्रुओं को हरा दिया है। अब आप चक्रवर्ती राजा बन गए हैं।"

'महाराज की जय हो !' के नारे से सारा उद्यान गूंज उठा। मृगांकावली को मदनावती ने गले लगा लिया। चारों ओर प्रसन्नता छा गई थी। ●



एक के तीन

—डा. जयनारायण कौशिक

एक बार भयंकर अकाल पड़ा। सब ओर त्राहि-त्राहि मच गई। पशुओं का तो क्या, आदमियों को भी भोजन के लाले पड़ गए। किसानों ने अपने पशुओं से छुटकारा पाने के लिए उन्हें सस्ते में बेचना शुरू कर दिया। भरतू किसान ने भी अपने बैल को पशु मेले में बेचने का निश्चय किया।

भरतू ने खूंटे से बैल का रस्सा खोला और उसे पुचकारता-टटकारता मेले की ओर चल दिया। मेले में सभी प्रकार के लोग आते हैं— अच्छे, भले, चोर और ठग भी। भरतू के पीछे ठग लग गए।

पहले ठग ने कहा— "क्यों भाई, बैल बिकाऊ है ? है तो तेरा बैल बूढ़ा, पर हमारी हलकी गाड़ी तो घसीट ही लेगा।"

भरतू ने कहा— "बैल बिकाऊ तो हैं, पर तूने मेरे बैल को बूढ़ा कैसे बता दिया ! अभी तो यह पूरी जवानी में है। भरी गाड़ी को अकेला खींच सकता है। पूरे सौ रुपए में बेचूंगा। अकाल न होता, तो पांच सौ का बेचता।"

ठग हंसा। बोला— "मैं तो दस रुपया लगाता हूं। बोलो, सौदा पक्का ? बूढ़े बैल के दस रुपए कम नहीं हैं, अकाल के दिन है।"

किसान को गुस्सा तो बहुत आया, लेकिन चुप रहा। वह आगे चल दिया। थोड़ी देर बाद उसे दूसरा ग्राहक मिला। बैल को देखते ही बोला— "हां, भई! क्या बूढ़ा बैल बिकाऊ है ?"

किसान ने नाराजगी प्रकट की— "बैल तो बिकाऊ है, पर इसे बूढ़ा मत कहिए। अभी तो यह भरी जवानी में है।"

ग्राहक ने हंसकर कहा— "बूढ़े को तो बूढ़ा ही कहा जाएगा। नए रस्से में बांधने से बूढ़ा बैल जवान थोड़े ही हो जाएगा।"

"कुछ भी हो, सौ रुपए लूंगा। लेना हो तो लो, नहीं तो अपना रास्ता नापो।"— किसान ने कहा।

"पूरे पांच रुपए दूंगा। देना है तो दो, नहीं तो इसका रस्सा हाथ में लिए घूमते रहो।"— ग्राहक ने कहा—"बूढ़े बैल के पांच रुपए कोई कम नहीं हैं।"

भरतू ने एक नजर बैल पर डाली। उसे टटकारता हुआ मेले की ओर बढ़ गया। उसे बैल की चाल में बुढ़ापे का एक भी लक्षण नजर नहीं आया। रास्ता चलते बैल थोड़े ही बूढ़ा हो गया।

वह थोड़ी ही दूर गया था कि उसे एक और ग्राहक टकराया। ग्राहक ने पूछा—"क्यों भाई, बूढ़ा बैल बिकाऊ है ? बोलो, कितने में सौदा पटेगा ?"

भरतू ने खीजकर कहा— "जवान बैल बूढ़ा नजर आता है। अपनी आंखें धो लो, फिर बात करना।"

ग्राहक बोला— "बाबा, मेरी आंखें तो ठीक हैं। मेले की धूल से तुम्हारी आंखें धुंधला गई हैं। पास के कुएं पर इन्हें धो लो। बैल के पूरे तीन रुपए दूंगा। बोलो, सौदा पक्का ?"

किसान ने बैल की ओर देखा। उसे सहलाया और ग्राहक से कहा—"पूरे सौ रुपए लूंगा।"

थोड़ी दूर पर एक कुआं था। कुएं के साथ घनी छाया थी। किसान वहां गया। बैल को पानी पिलाकर पेड़ से बांधा और विश्राम करने लगा। थोड़ी देर में वे तीनों ग्राहक भी वहां आ पहुंचे। वे फिर बैल खरीदने की बात करने लगे।

वहां एक बूढ़ा आदमी चुपचाप लेटा था। ग्राहकों ने कहा— "भई, किसी को पंच बना लेते हैं। जो कीमत पंच लगाए, उस पर अपना बूढ़ा बैल बेचकर इससे पिंड छुड़ाओ।"

भरतू को पंच के फैसले पर विश्वास था। उसने कहा— "चलो, पंच से फैसला करा लो।"

तीनों ग्राहकों ने बूढ़े आदमी को पंच मान लिया। वह झट, पालथी मारकर बैठ गया। बैल को सींग से पूंछ तक परखा। दाएं-बाएं झांका और कहा— "भाई किसान, सूखे के दिनों में इस बूढ़े बैल की कीमत ढाई रुपया है।"

Scanned with CamScanner

किसान बूढ़े पंच की बात सुनकर हक्का-बक्का रह गया। वह ग्राहकों को जबान दे चुका था। अतः उसने हार मानकर ढाई रुपए में सौदा मान लिया। लेकिन उसे लगा कि वह ठगों के हाथों ठगा गया है। उसने मन ही मन कहा— 'अपने बैल की मुंहमांगी कीमत से तीन गुना कीमत न लेकर छोड़ी, तो मेरा नाम भी भरतू किसान नहीं।'

भरतू ने दबे पांव ग्राहकों का पीछा किया। उसे पता चल गया कि पहले तीनों ग्राहक बूढ़े आदमी के लड़के हैं। कुछ सोचता हुआ वह घर आ गया।

अगले दिन किसान ने स्त्री का वेश बनाया और घूंघट निकाल कर, बूढ़े ठग के दरवाजे पर जा बैठा। बूढ़े व्यक्ति के तीनों लड़के अविवाहित थे। स्त्री को घर के दरवाजे पर बैठा देख, तीनों की बांछें खिल गईं। उस स्त्री ने कहा— "मैं तुम तीनों में से उसके साथ विवाह करूंगी, जो सब से तेज दौड़ता है। यहां से पांच कोस की दूरी पर पीले जल का एक तालाब है। जो उससे पानी की बाल्टी भरकर पहले लौटेगा, मैं उस जल से स्नान करके उसी के साथ विवाह करूंगी।"

तीनों लड़कों में होड़ लग गई। बाल्टी हाथ में लेकर वे तालाब की ओर दौड़ पड़े। उधर किसान ने जनाने कपड़े उतारे और बूढ़े को ललकारा— "झूठे पंच, क्या मेरा बैल ढाई रुपए का था?"

बूढ़ा ठग कांप गया। किसान ने उसकी खूब पिटाई की। सौ रुपए लेकर ही उसका पीछा छोड़ा।

उधर लड़के पानी की बाल्टी लेकर आए, तो वे यह जानकर निराश हुए कि वह स्त्री घर में नहीं है। बूढ़े ठग ने अपनी पिटाई की सारी कहानी कह सुनाई।

अगले दिन वह किसान वैद्य का वेश बनाकर उस गांव में आया। जोर-जोर से आवाज लगाने लगा— 'चोट-मोच का इलाज करा लो!'

बूढ़े ठग ने यह आवाज सुनी, तो वैद्य को इलाज के लिए बुलवाया। वैद्य ने उन-उन स्थानों को छुआ, जहां-जहां उसने चोट मारी थी। बूढ़े ने समझा— 'वैद्य बहुत कुशल है। जल्दी ही मेरी चोट ठीक हो जाएगी।'

वैद्य ने तीनों लड़कों को बुलाकर कहा— "पास के अमुक-अमुक तीन शहरों में एक-एक औषधि मिलती है। तुम तीनों एक-एक शहर में जाओ और औषधि लाओ।"

ठग के तीनों लड़के औषधि लेने तीन दिशाओं में दौड़ पड़े। उधर किसान ने ललकारा— "बूढ़े ठग, क्या मेरा बैल ढाई रुपए का था?"

बूढ़ा कांप उठा। पिटाई से बचने के लिए उसने सौ रुपए देकर उसे विदा किया। लड़के औषधि लेकर लौटे, तो बूढ़े ने आपबीती कह सुनाई।

भरतू किसान अब भी पूरी तरह संतुष्ट नहीं हुआ था। उसने एक बार बूढ़े ठग को फिर मजा चखाने का निश्चय किया। अगले दिन उसने गांव के कुछ युवकों को इकट्ठा किया और कहा— "तुम में से सबसे तेज कौन दौड़ता है? मैं तेज दौड़ने वाले को पांच रुपए



दूंगा। बस अमुक आदमी के घर के सामने यह कहकर दौड़ जाना है— बूढ़े ठग, क्या मेरा बैल ढाई रुपए का था?"

एक युवक ने यह चुनौती स्वीकार की। उसने ज्योंही कहा— "बूढ़े ठग, मेरा बैल ढाई रुपए का था?" किसान के तीनों लड़के उसे पकड़ने दौड़े। उधर भरतू किसान फिर बूढ़े ठग के घर आ धमका और कहा— "बूढ़े, क्या मेरा बैल ढाई रुपए का था?" बूढ़े ठग ने हाथ जोड़े। बोला—"बाबा, मेरा पीछा छोड़ो। अब मैं किसी से ठगी नहीं करूंगा। ये लो, सौ रुपए। मुझे क्षमा करो।"

बूढ़े ठग के तीनों लड़के निराश होकर घर लौटे, तो उसने अपने लड़कों को फिर आपबीती कह सुनाई। बूढ़े के साथ-साथ तीनों लड़कों ने भी निश्चय कर लिया कि वे आगे से कभी ठगी का धंधा नहीं करेंगे। ●

(हरियाणवी लोक-कथा)

बोरी में हीरा

—गिरीश भंडारी

पुरानी बात है । विंध्य प्रदेश में राजा बुद्धिराज राज्य करते थे । बहुत प्रतापी राजा थे वह । उनके दान की चर्चा दूर-दूर तक फैली थी । जो भी सहायता के लिए आता, उनके दरबार से कभी खाली हाथ न लौटता ।

एक दिन उनके दरबार में गुजरात से तीन व्यापारी आए । वे राजा से प्रार्थना करते हुए बोले—''महाराज, हमारी रक्षा करें । हम रत्नों के व्यापारी हैं । आप रत्नों के पारखी हैं, इसलिए आपके पास रत्नों की पेटी लेकर आ रहे थे । रास्ते में डाकुओं ने हमें लूट लिया । हमने आसपास के लोगों से डाकुओं को पकड़ने के लिए सहायता मांगी, पर उन्होंने कोई सहायता नहीं की । हमारा सब कुछ लुट गया । पास में कौड़ी भी नहीं है । निःसहाय होकर हम अब आपके दरबार में आए हैं ।''

व्यापारियों ने सोचा था कि राजा उनकी धन से सहायता करेगा । राजा ने उनकी बात ध्यान से सुनी । कुछ सोचा । फिर आदेश दिया—''व्यापारियों को एक-एक बोरी गेहूं देकर विदा कर दिया जाए ।'' यह सुनकर व्यापारी आश्चर्य में पड़ गए । वे गेहूं लेकर जाने लगे, तो राजा ने उनसे कहा— ''एक बात गौर से सुनो ! इस गेहूं को तुम्हें खुद ही साफ करना पड़ेगा । यह राज्य का गेहूं है । खाने के लिए इसका उपयोग करते समय तुम किसी और की मदद नहीं ले सकते । जाओ, और एक महीने बाद हमसे आकर फिर मिलना ।''

व्यापारी चले गए । उनमें से दो व्यापारी आलसी थे । उन्होंने थोड़ा गेहूं तो साफ किया । बाकी एक चक्की वाले को बेच दिया ।

तीसरा व्यापारी ईमानदार और मेहनती था । उसने सारा गेहूं बोरी से निकाला । उसे अच्छी तरह साफ किया । जब वह खाली बोरी झाड़ रहा था, तो बोरी के अंदर से पत्थर का एक टुकड़ा निकला । व्यापारी ने पत्थर की झलक देखी, तो चौंक पड़ा । यह मामूली

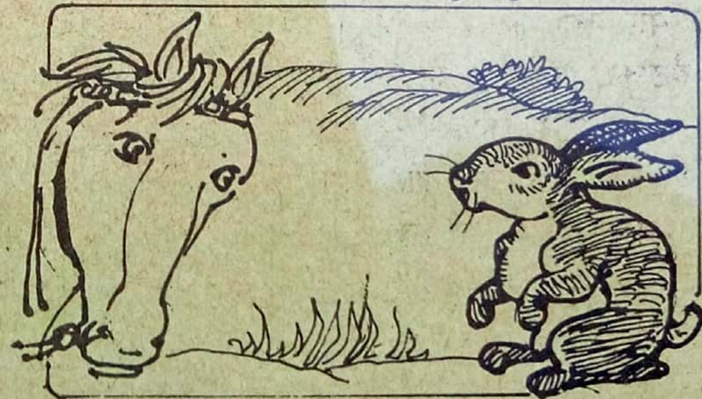
धोबी की बकरी

—हीरालाल नंदा 'प्रभाकर'

एक गाय और एक घोड़े में बड़ी घनिष्ठ मित्रता थी । वे वन में साथ-साथ चरने जाया करते थे । दोनों ही एक किसान के पालतू जानवर थे । किसान के पड़ोस में एक धोबी रहता था, जिसके पास एक गधा और एक बकरी थी । धोबी इन दोनों जानवरों को घोड़े और गाय के साथ चरने के लिए छोड़ देता था । इस प्रकार इन चारों में खूब मित्रता हो गई । ये चारों मिलकर जंगल में जाते और शाम को एक साथ ही अपने-अपने घर को लौटते थे ।

जिस वन में ये सब चरने जाया करते, वहां बहुत-से छोटे-बड़े जानवर रहते थे । इन्ही में एक नन्हा-सा खरगोश था । धीरे-धीरे खरगोश से इन चारों जानवरों की गाढ़ी दोस्ती हो गई । खरगोश बड़ा प्रसन्न रहने लगा । उसने सोचा चलो अब इन शक्तिशाली जानवरों के रहते शिकारी कुत्तों का भय भी दूर हो गया ।

इसी तरह बहुत दिन बीत गए । एक दिन वन में न जाने कहां से एक शिकारी कुत्ता आ धमका । खरगोश को देखकर वह उसके पीछे दौड़ा । बेचारा खरगोश दौड़ा-दौड़ा गाय के पास पहुंचा । बोला—''हे माता, एक दुष्ट कुत्ता मेरे पीछे पड़ गया है । मुझे मार डालना चाहता है । आपके बड़े-बड़े सींग हैं । आपको देखते ही वह दुष्ट कुत्ता फौरन भाग



पत्थर का टुकड़ा नहीं था, एक अनगढ़ा हीरा था। उसने ध्यान से उलट-पलट कर देखा। वह एक जौहरी के पास गया। वहां स्वयं हीरे को तराशा। एक सप्ताह के बाद वह हीरा खूब चमकने लगा।

निश्चित समय तीनों व्यापारी राजा के दरबार में आए। राजा ने व्यापारियों से उनके समाचार पूछे। दोनों व्यापारियों ने बताया कि उनका गेहूं खत्म हो गया है। उनको और गेहूं चाहिए, ताकि अपना पेट भर सकें।'' सुनकर राजा मुसकराए।

उन्होंने तीसरे व्यापारी से उसका हाल पूछा। उसने राजा को प्रणाम कर एक हीरा भेंट किया। उसकी चमक से सारे दरबारी चौंक गए। पहले दोनों व्यापारी आश्चर्य में थे। वे सोच रहे थे—'इसके पास यह हीरा कहां से आया ?'

राजा के पूछने पर तीसरे व्यापारी ने कहा—''राजन, यह हीरा मुझे गेहूं की बोरी में मिला। आपने मुझे सिर्फ गेहूं दिया था। इसलिए यह हीरा आपका है। रत्नों का व्यापारी होने के नाते मुझे हीरा तराशना आता है। मैंने सोचा कि आप जैसे दयालु राजा को मैं एक तराशा हुआ हीरा भेंट करूं।''

उसकी बात से राजा प्रसन्न हो गए। राजा ने व्यापारियों से कहा— ''मुझे पता है, तुम लोगों ने गेहूं अपने आप साफ नहीं किया। ये देखो, ये दो हीरे जो तुम्हारी बोरियों के नीचे छिपे थे। ये चक्की वाले ने मुझे लाकर दिए। मैं तुम्हारे आलसी स्वभाव को पहचान गया था, इसीलिए सिपाहियों को तुम्हारे पीछे लगा दिया था, ताकि हीरे गुम न होने पाएं। तीसरे व्यापारी ने मेहनत की। इसीलिए उसे हीरा मिल गया। इसकी ईमानदारी ने मुझे प्रभावित किया। इसलिए मैं इसे सहायता दूंगा, ताकि यह जौहरी की दुकान खोल सके।''

राजा की बात सुन, दोनों व्यापारी बहुत शर्मिंदा हुए। उन्होंने राजा से माफी मांगी। राजा ने उन्हें थोड़ी सहायता देकर विदा कर दिया, मगर तीसरे व्यापारी को राजा ने प्रोत्साहित किया। कुछ ही दिनों में वह नगर का एक बड़ा जौहरी बन गया।

जाएगा।'' गाय ने कहा ''बात तो ठीक है। लेकिन तुम मेरे पास थोड़ी देर से आए हो। मेरे लौटने का समय हो गया है। मेरा बछड़ा भूखा होगा। वह मेरी राह देख रहा होगा। बार-बार मुझे पुकारता होगा। मुझे घर जाने की जल्दी है। तुम घोड़े के पास चले जाओ। वह तुम्हारी सहायता जरूर करेगा।''

खरगोश भागा-भागा घोड़े के पास गया। बोला— ''घोड़े भाई, मैं आपका मित्र हूं। आज एक दुष्ट कुत्ता मेरे पीछे पड़ा हुआ है। आप चाहें, तो मुझे उससे बचा सकते हैं। मुझे आप अपनी पीठ पर बैठाकर, कहीं दूर निकल चलें।''

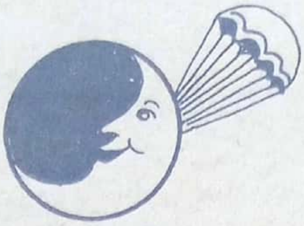
घोड़े ने कहा—''आजकल मेरे खुर बहुत बढ़े हुए हैं। तुम्हें अपनी पीठ पर बैठा, शिकारी कुत्ते के मुकाबले तेज भी नहीं भाग सकता। मुझे दोस्त होने के नाते तुमसे पूरी हमदर्दी है। लेकिन आज मैं तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर पाऊंगा। क्षमा करना, भाई !''

घोड़े से निराशा मिलने पर खरगोश तुरंत गधे के पास पहुंचा। उसे भी अपनी आपबीती कह सुनाई। गधा बोला— ''भाई, मैं तो रोज घोड़े और गाय के साथ शाम को घर लौटता हूं। यदि मैं तुम्हारी रक्षा के लिए जंगल में रुक गया, तो मेरा मालिक मुझे कड़ा दंड देगा। विवश हूं। मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर पा रहा, इसका मुझे बहुत दुःख है।''

अंत में खरगोश बकरी के पास पहुंचा। बकरी उसे देखते ही बोली— ''भइया, आज मुझसे जरा दूर रहना। तुम्हारे पीछे कुत्ता पड़ा हुआ है। कहीं वह मेरे पीछे पड़ गया तो खैर नहीं। मैं तो तुम्हारी तरह तेज भाग भी नहीं सकती।''

अब खरगोश ने हिम्मत बांधी और चौकड़ी भरते हुए एक झाड़ी में जा छिपा। कुत्ते ने उसे बहुत खोजा। जब वह नहीं मिला और कुत्ता थक गया, तो खरगोश को छोड़कर वह वहां से चला गया।

Scanned with CamScanner



खीर

चंदा मामा पहन एक दिन
जूता, मोजा, टाई, सूट,
उतरे नीचे धीरे-धीरे
लिए हाथ में पैराशूट।

बोले— नहीं खिलाते मुझको
टाफी, बिस्कुट, पूरी, खीर,
कभी न लेने दूंगा तुमको
मैं अपनी भोली तसवीर।

गुल्ली, डंडा खेला करते
सब दिन लूडो, कैरम, ताश,
नहीं खिलाते हो पर मुझको
इसीलिए हूं बहुत उदास।

अच्छा, चलता हूं अब बच्चो
कहीं न हो जाऊं मैं लेट,
देखोगे जब आसमान में
होगी तुमसे प्यारी भेंट!

—विंदेश्वरी गुप्ता

आम और नीम

मैं हूं मीठा-मीठा आम
मुझको खाते लोग तमाम,
और बताओ भाई नीम!
तुम किनके आते हो काम?

कहा नीम ने— भाई आम!
मैं आता रोगों में काम,
सब कहते हैं, सौ हकीम
के बराबर होता नीम!

—मदनेन्द्र



इंद्रधनुष

नभ में इंद्रधनुष देखा तो
बालक मां से जिद कर बैठा,
मां, मुझको लाकेट मंगा दे
सतरंगा हो, लगे अनूठा।

निकलूं जब लाकेट पहनकर
बन जाऊं मैं नभ-सा सुंदर,
फिर कोई सुंदर-सी कविता
लिख डालूं मैं इंद्रधनुष पर।

जैसे सात रंग ले सूरज
सारी दुनिया को चमकाता,
और कभी इनको बिखराकर
नभ में इंद्रधनुष रच जाता!

—प्रदीपकुमार पाठक





ताक रहा

बड़े सवेरे आता कौवा,
हमको रोज जगाता कौवा।
बैठा रहता है छप्पर पर
अपनी आंख नचाता कौवा।
देख, उठाते ही कंकड़ को
झट-से है उड़ जाता कौवा।
ताक रहा मुन्नी का बिस्कुट,
अपनी चोंच घुमाता कौवा।
जब तक मुन्नी बिस्कुट खाती
आंगन पर मंडराता कौवा।
गुड्डू जब गुलेल ले आता,
हार मान, उड़ जाता कौवा।

—रवीन्द्र कंचन

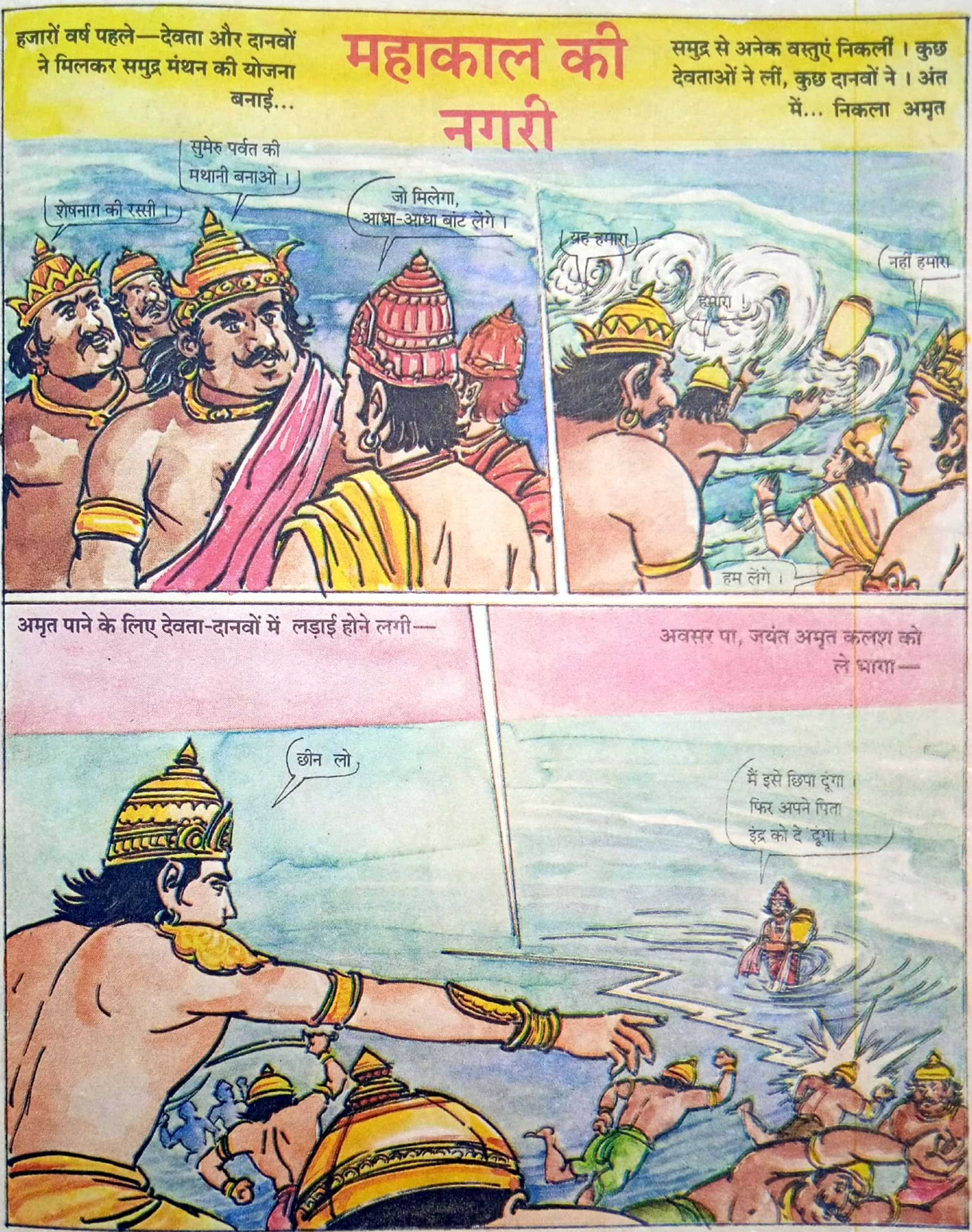
सूप का गीत

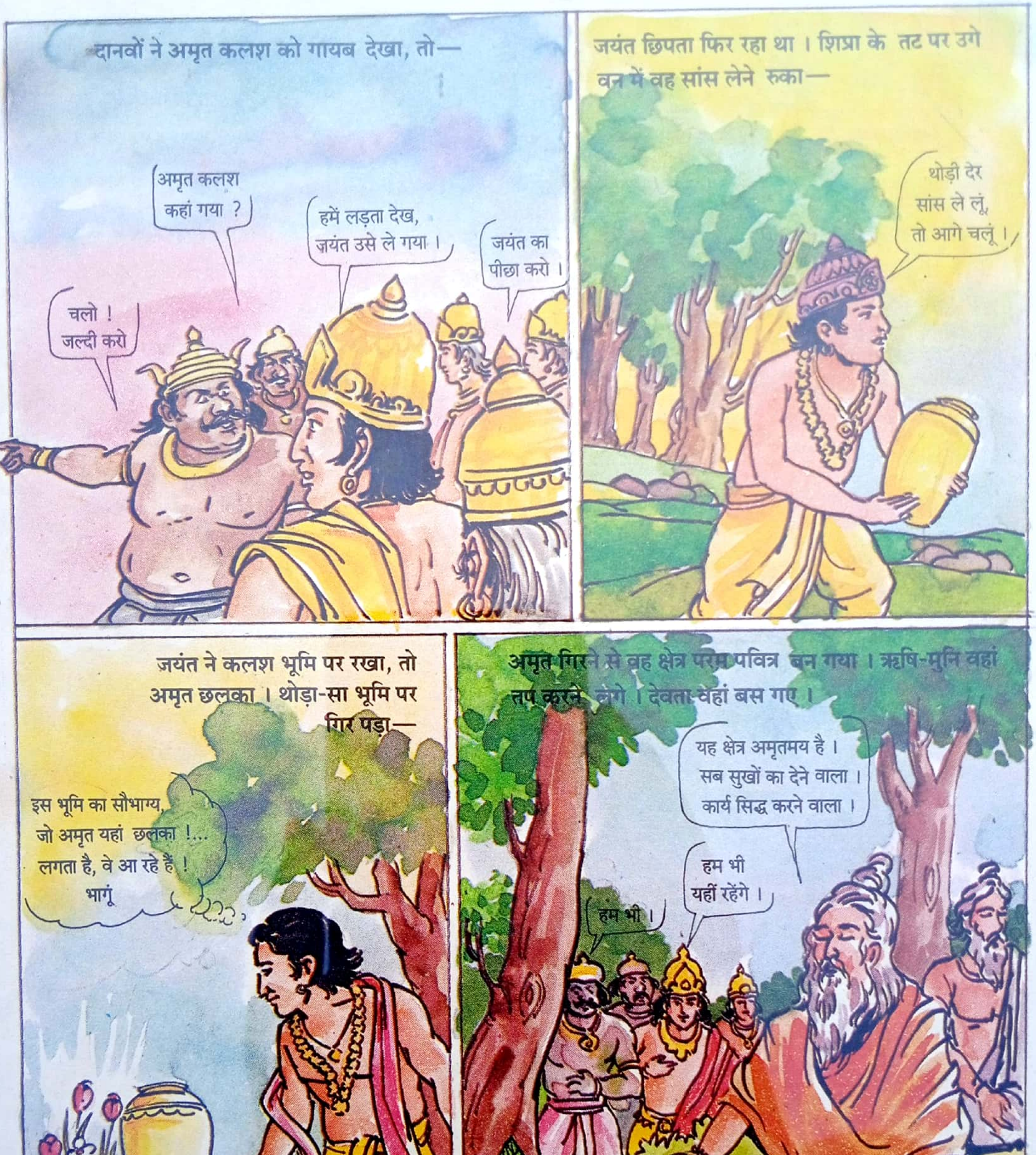
सूप पुराना बड़े काम का,
खूंटी पर जो रहा लटक।
गीत सुनाता है यह हमको,
बड़ा सुहाना जौ-फटक।
छ...छ...छ... फटक।
छ...छ...छ... फटक!

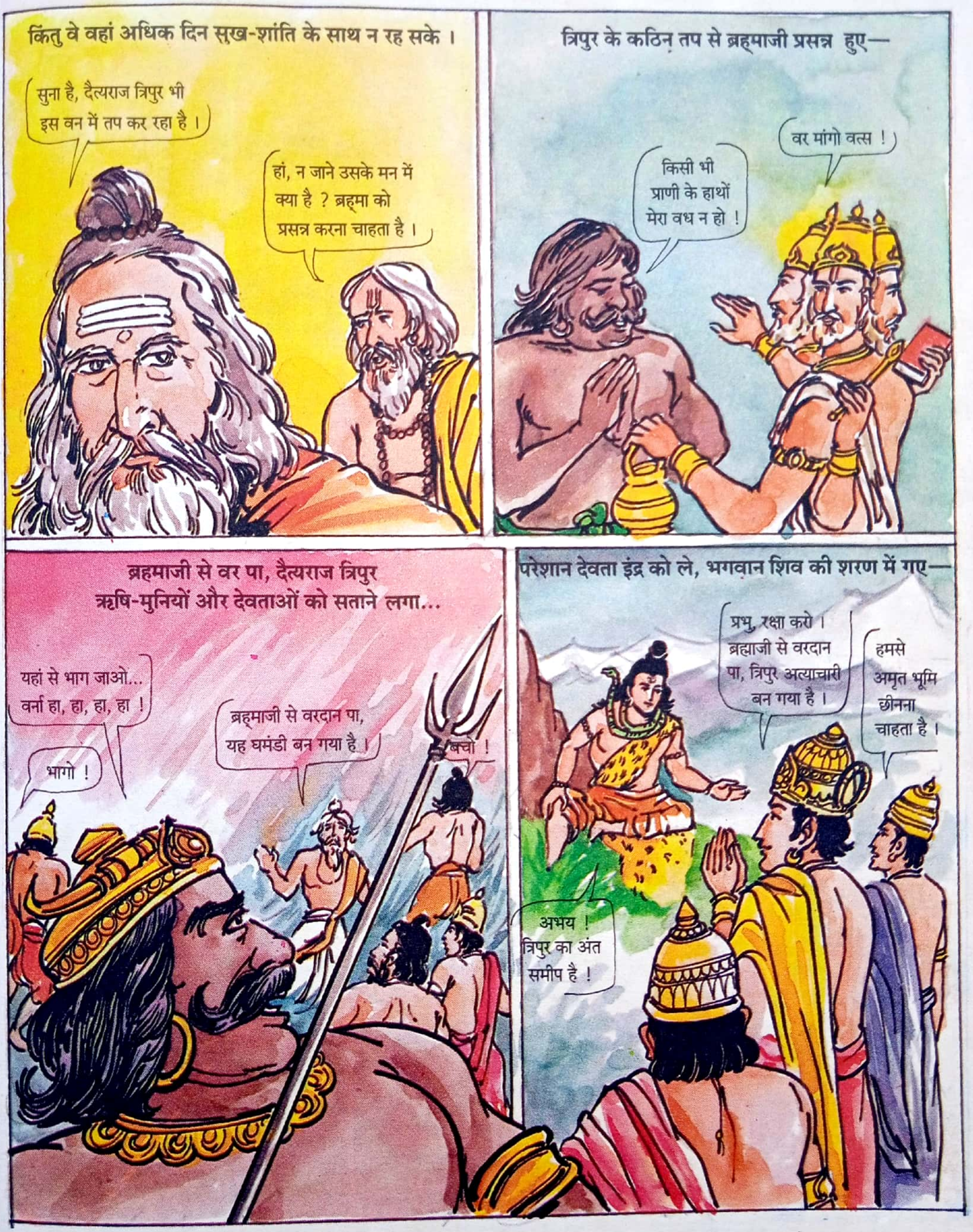
साफ-साफ यह कर देता जौ,
कूड़े को देता झटक।
इसके आगे आती चुहिया
भागे अपनी राह भटक।
इससे दादी पंखा झलतीं,
गरमी को देतीं पटक।
छ...छ...छ... फटक!
छ...छ...छ... फटक!

—रावेंद्रकुमार 'रवि'

Scanned with CamScanner


हजारों वर्ष पहले—देवता और दानवों ने मिलकर समुद्र मंथन की योजना बनाई...
महाकाल की नगरी
समुद्र से अनेक वस्तुएं निकलीं । कुछ देवताओं ने लीं, कुछ दानवों ने । अंत में... निकला अमृत
शेषनाग की रस्सी ।
सुमेरु पर्वत की मथानी बनाओ ।
जो मिलेगा, आधा-आधा बांट लेंगे ।
यह हमारा
हमारा ।
नहीं हमारा
हम लेंगे ।
अमृत पाने के लिए देवता-दानवों में लड़ाई होने लगी—
छीन लो
अवसर पा, जयंत अमृत कलश को ले भागा—
मैं इसे छिपा दूंगा । फिर अपने पिता इंद्र को दे दूंगा ।


दानवों ने अमृत कलश को गायब देखा, तो—
अमृत कलश कहां गया ?
हमें लड़ता देख, जयंत उसे ले गया ।
जयंत का पीछा करो ।
चलो ! जल्दी करो
जयंत छिपता फिर रहा था । शिप्रा के तट पर उगे वन में वह सांस लेने रुका—
थोड़ी देर सांस ले लूं, तो आगे चलूं ।
जयंत ने कलश भूमि पर रखा, तो अमृत छलका । थोड़ा-सा भूमि पर गिर पड़ा—
इस भूमि का सौभाग्य, जो अमृत यहां छलका !... लगता है, वे आ रहे हैं ! भागूं
अमृत गिरने से वह क्षेत्र परम पवित्र बन गया । ऋषि-मुनि वहां तप करने लगे । देवता वहां बस गए ।
यह क्षेत्र अमृतमय है । सब सुखों का देने वाला । कार्य सिद्ध करने वाला ।
हम भी यहीं रहेंगे ।
हम भी ।



Scanned with CamScanner


अभयदान दे, भगवान शिव महाकाल रूप में त्रिपुर के सम्मुख प्रकट हुए—
तुम्हारा अंत आ गया। मैं तुम्हें देव रूप में नहीं, इसी रूप में मारूंगा !
?
हुआ भी यही। त्रिपुर मारा गया—
उफ ! बचाओ ! मरा !
चारों ओर हर्ष छा गया। ऋषि-मुनियों और देवताओं ने शिव की वंदना की—
हे त्रिपुरारि ! आप यहीं वास करें !
तथास्तु !
शिव वहीं स्थापित हो गए। वह क्षेत्र उज्जयिनी कहलाया। महाकालेश्वर मंदिर में महाकाल लिंग के दर्शन का विशेष महत्व है।
हजारों वर्ष से महाकाल लिंग के पास दो दीपक निरंतर जलते हैं।
एक घी का, दूसरा तेल का

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क :
एक वर्ष : ३५ रुपए
दो वर्ष : ६५ रुपए

वर्ष २५, अंक ११, नई दिल्ली; सितम्बर' ८९, श्रावण-भाद्रपद, शक सं. १९११

चांद के बाद अब मंगल की ओर

''यह मानव का छोटा-सा कदम है, पर मानवता के लिए बड़ी छलांग है।''— ये शब्द नील आर्मस्ट्रांग ने कहे थे। चंद्रतल पर चलने वाले वह पहले इंसान हैं।

बीस बरस हो गए— चांद पर पहली बार इंसान पहुंचा था। इसकी याद में जगह-जगह समारोह हुए। एक समारोह में प्रथम चंद्र यात्री ने कहा— ''इंसान को चांद तक पहुंच कर ही नहीं रुकना। उसे अब मंगल पर पहुंचने की तैयारी करनी चाहिए।''

चंद्रतल से धरती बहुत बड़ी, सुंदर और चमकीली दिखाई देती है। कोई किसी भी देश या जाति का हो, वह इस 'चमकदार पृथ्वी' के गोले पर रहता है। इसे साफ-सुथरा और सुरक्षित रखना है। आज के बालक ही कल इस गोले को संभालेंगे।

चंद्र विजय के समारोह में कहा गया— पृथ्वी पर शांति रहे। कोई बालक किसी भी देश में रहता हो, उसे जरूरी चीजें मिलें। उसे शिक्षा दी जाए। बालक बेसहारा न रहे। इंसान को आपसी झगड़े मिटाने हैं। अब वह दिन भी दूर नहीं, जब दो पड़ोसी आपस में बातचीत करके कहा करेंगे— 'हम घूमने जा रहे हैं, चांद पर।' अभी चाहे यह कल्पना लगे, लेकिन एक हवाई जहाज कम्पनी के पास चांद पर जाने वाले लोगों के नाम दर्ज हैं। इनकी संख्या तिरानवे हजार है।

वैसे अमरीकी वैज्ञानिक सन् २००५ तक चांद पर एक स्थायी अड्डा बना लेंगे। यहां पांच लोग एक साथ ठहर सकेंगे।

आदमी कब बोला

येरुशलम। अभी तक समझा जाता था कि आदमी दस हजार वर्ष पहले बोलता था। लेकिन अब खोजों से पता चला है कि साठ हजार वर्ष पहले भी मनुष्य बोल सकता था।

कितने नोट गिने

पुणे। यहां पर नोट गिनने की प्रतियोगिता हुई। संजय अथवाले नाम के व्यक्ति ने ढाई मिनट में ८,३५२ रुपए गिने। भाग लेने वाले ११५ प्रतियोगियों में वह प्रथम स्थान पर रहे।

खर्राटे और खर्राटे

बर्गा। स्पेन में अनोखी प्रतियोगिता हुई। कौन बिस्तर पर लेटते ही सो जाता है और सबसे लम्बे समय तक खर्राटे लेता है। लेकिन प्रतियोगिता जैसे ही शुरू हुई, एक व्यक्ति की चारपाई टूट गई। गुस्से में उसने दूसरे व्यक्ति पर तकिया फेंका। फिर क्या था— सोने वाले जाग गए। किसी ने दूसरे पर तकिया फेंका, तो कोई दूसरे की बिछी हुई चादर खींचने लगा। जैसे-तैसे इस मारधाड़ को रोका गया।

पेट में मोमजामा

कानपुर। यहां चिड़ियाघर में नीले बैल की मृत्यु हो गई। उसकी श्वास नली में मोमजामा फंस गया था। उसके पेट में मोमजामे के चौबीस थैले निकले।



लव कुश आए

'नंदन' कार्यालय में नन्हे लव-कुश आए। दूरदर्शन पर उत्तर रामायण में बाल लीला करने वाले इन दोनों बच्चों का असली नाम लव-कुश ही है। उम्र है साढ़े पांच वर्ष। रामानंद सागर जिन दिनों लव-कुश की तलाश कर रहे थे, उन दिनों इन बच्चों के पिता की गाड़ी पर उन्होंने 'लव-कुश' लिखा देखा। उन्होंने बच्चों के पिता से बातचीत की। बाद में इन दोनों को चुन लिया। दोनों बच्चों ने अपनी भूमिका बखूबी निभाई। इन्हें अभिनय के लिए ग्यारह-ग्यारह सौ रुपए का विशेष पुरस्कार मिला। इन बच्चों को 'रामायण' और 'महाभारत' धारावाहिक बहुत पसंद हैं। बम्बई की बातें याद कर उन्होंने बताया — ''हमें अभिनय करने से पहले और बाद में पांच-पांच चॉकलेट मिलती थीं।' गुरु वाल्मीकि के आश्रम में क्या करते थे? लव-कुश ने बताया कि पालथी मार कर बैठ जाते थे, और गायत्री मंत्र सुना देते थे। ये दोनों न्यू दिल्ली पब्लिक स्कूल, फतेहनगर के छात्र हैं।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें।

Scanned with CamScanner

राजा को विचार कर और सेवक को सुनकर बोलना चाहिए।— विदुर-नीति

फेल कौन पास कौन

बालक परीक्षा में बैठता है। पास होता है, तो कभी फेल भी हो सकता है। राजधानी में ऐसे स्कूल हैं, जो फेल हुए अपने छात्र को दोबारा दाखिला नहीं देते। यानी छात्र में उनकी दिलचस्पी नहीं है। उनकी रुचि है, चमक-दमक में या 'रिजल्ट' ऊंचा दिखाने में। ज्यादातर ऐसे स्कूल अंग्रेजीदां हैं। माता-पिता ऐसे स्कूलों में भर्ती कराने के लिए बावले हुए रहते हैं। कई बार धन भी देते हैं।

जो स्कूल अपने छात्र से लगाव नहीं रखते, वहां पढ़े बच्चे पिछड़ जाते हैं। वे अक्सर जीवन की दौड़ में पीछे छूट जाते हैं। जो अध्यापक या प्रधानाचार्य 'फेल' बच्चे को सफलता की दिशा में नहीं ले जा सकते, उन्हें क्या कहें— फेल या पास!

गुल्ली-डंडा और कंचा

नई दिल्ली। 'गुल्ली-डंडा' तथा कंचों को अखिल भारतीय ग्रामीण खेलों की सूची में शामिल किया जाए—यह मांग की गई है। पिछले दिनों विजयवाड़ा और गुंटूर में इन खेलों की प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थीं। इसमें हजारों लोगों ने भाग लिया। आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, गुजरात, पंजाब, जम्मू-कश्मीर तथा हिमाचल प्रदेश की सरकारें पहले ही इन खेलों को मान्यता दे चुकी हैं।

आम ही आम

सहारनपुर। यहां आम उत्सव मनाया गया। इसमें ५०१ किस्म के आम रखे गए। प्रतियोगिता में मेरठ का 'अनवर रटौल' आम प्रथम आया।

कुकड़ू-कूं और लड़ाई

मनीला। यहां का सबसे प्रिय खेल है—मुर्गों की लड़ाई। जबकि बहुत-से देशों में इसे क्रूर खेल माना जाता है। और इस पर प्रतिबंध भी है। फिलीपींस में रविवार या छुट्टी के दिन जगह-जगह पर यह लड़ाई होते देखी जा सकती है। लोग मुर्गों को लड़ाने के लिए खूब खिलाते-पिलाते हैं।

गाय क्या खाएं

न्यूयार्क। वैज्ञानिकों ने गायों को प्रशिक्षित करना शुरू किया है। इसमें वे गायों को जहरीले पौधों और घास की पहचान करना बताते हैं। वैज्ञानिकों को आश्चर्य है कि सिखाई हुई गाएं इसको अच्छी तरह से याद रखती हैं।

राजिंदर सिंह प्रथम

बर्लिन। पूर्वी जर्मनी में टाइप करने की प्रतियोगिता हुई। इस प्रतियोगिता में ५० देशों के ८०० लोगों ने भाग लिया। इसमें हिमाचल प्रदेश के राजिंदर सिंह ने लगातार तीसरी बार प्रथम स्थान प्राप्त किया।

सियार के लिए

कोटद्वार। पिछले दिनों एक सियार कोलतार में फंस गया। उछल-कूद करने से उसके सारे शरीर में कोलतार चिपक गया। अगले दिन स्कूल जाते दो बच्चों ने जब सियार की यह हालत देखी, तो वे उसे बचाने गए, लेकिन वे दोनों भी फंस गए। बच्चों को फंसा देखकर बहुत-से लोग वहां जमा हो गए। न केवल उन्होंने बच्चों को ही बचाया, सियार को भी बाहर निकाल लिया।

पुलिस के कुत्ते

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस के खोजी कुत्ते हैं—चेतक और यमुना। पिछले दिनों एक हत्या का मामला नहीं सुलझ रहा था। दोनों कुत्ते मौके पर मिली चप्पल को सूंघकर पास के खेतों में गए। वहां से वे झोंपड़ियों में गए। झोंपड़ियों में उन्होंने दो लोगों के कपड़े पकड़ लिए। बाद में उन दोनों व्यक्तियों ने अपराध स्वीकार कर लिया।

चावल से स्वागत

जयपुर। राष्ट्रपति आर. वेंकटरमण यहां आए। उन्हें चावल का एक दाना भेंट किया गया। जिस पर लिखा था—'महामहिम राष्ट्रपति आर. वेंकटरमण का गुलाबी नगरी हार्दिक स्वागत करती है।' चावल पर तारीख और सन् भी पड़ा था। राष्ट्रपति इस कलाकारी को देखकर बहुत खुश हुए।

मौसमी और गणित

कलकत्ता। ७ वर्ष की है मौसमी। गणित और विज्ञान के सवाल पलक झपकते ही हल कर लेती है। सन् १९९१ में वह दसवीं कक्षा की परीक्षा देगी। उसे शिक्षा विभाग की तरफ से विशेष अनुमति दी गई है।

महाभारत से आय

बम्बई। महाभारत सीरियल से पहले दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले विज्ञापनों से भारी आय हो रही है। प्रत्येक कड़ी पर दूरदर्शन को साठ लाख, पचास हजार रुपए मिलते हैं।

नया खेलगांव

नई दिल्ली। १९८१ में होने वाले अफ्रो एशियाई खेलों के लिए दक्षिण दिल्ली के एंड्रूजगंज में खेल गांव बनाया जाएगा। इसमें साढ़े तीन सौ फ्लैट्स तथा छह सौ लोगों के ठहरने के लिए होस्टल बनाया जाएगा।

Scanned with CamScanner

छह स्वर्ण पदक

कुआलालम्पुर। मलयेशियाई ओपन एथलेटिक चैम्पियनशिप में भारत ने छह स्वर्ण पदक जीते। मेज़बान मलयेशिया ने पांच स्वर्ण पदक जीते। पी. टी. उषा ने चार सौ मीटर व दो सौ मीटर दौड़ में स्वर्ण पदक जीते।

पुराने जहाज : विदेशी मुद्रा

मास्को। सोवियत संघ के समुद्र तटों पर पचासों पुराने नौ सैनिक जहाज खड़े हैं। अब तय किया गया है कि इन्हें बेचकर विदेशी मुद्रा कमाई जाए।

हाथी दांत पर प्रतिबंध

नई दिल्ली। हाथी दांत की ऊंची कीमत के कारण सैकड़ों हाथियों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ता था। अब भारत, अमरीका, स्विटजरलैंड, केन्या आदि देशों में हाथी दांत के व्यापार पर प्रतिबंध लगा दिया गया है।

नया ड्राइविंग कालेज

नई दिल्ली। राजधानी में पहला आधुनिक मोटर ड्राइविंग कालेज खोला गया है। इसमें ऊबड़-खाबड़ रास्तों से लेकर रेतीली जमीन और पांच तरह की सड़कों पर गाड़ी चलाना सिखाया जाएगा।

पेड़ नहीं कटेंगे

हिसार। घर में दरवाजे, खिड़कियों आदि के लिए लकड़ी की जरूरत पड़ती है। इसके लिए पेड़ काटे जाते हैं। लेकिन यहां के रोहना कस्बे में अब एक नया कारखाना लगाया जाएगा। इसमें लकड़ी का विकल्प तैयार किया जाएगा। इसे कपास के सूखे पौधे और खर-पतवार से तैयार किया जाएगा। भारत में इस तरह का यह पहला और विश्व में दूसरा कारखाना है। पहला कारखाना थाईलैंड में है।

क्रिस एवर्ट का अनोखा सम्मान

लंदन। मशहूर लान टेनिस खिलाड़ी क्रिस एवर्ट ने 'बिम्बलडन' से विदा ली। उनका तैल चित्र बनाकर 'बिम्बलडन संग्रहालय' में टांगा गया है। यह सम्मान प्राप्त करने वाली क्रिस एवर्ट दूसरी खिलाड़ी हैं।

बैटमैन और रिकार्ड

वाशिंगटन। चमगादड़ आदमी यानी कि बैटमैन। अमरीकी बच्चों में यह पात्र बहुत लोकप्रिय है। अब इस पर एक फिल्म बनी है। इसने लोकप्रियता के सारे रिकार्ड तोड़ दिए हैं। प्रदर्शित होने के दस दिन बाद ही इस फिल्म ने दस करोड़ डालर कमाए।

कछुए मत पकड़ो

रियाद। सऊदी अरब में कछुए पकड़ने पर पाबंदी लगा दी गई है। मछुआरों को आदेश दिए गए—'मछली पकड़ते वक्त कोई कछुआ पकड़ा जाता है, तो उसे वापस समुद्र में छोड़ दिया जाए।'

बहादुर चालक

न्यूयार्क। विमान चालक ने सूचना दी कि उसके सीने में तेज दर्द है। दो जहाज उसे बचाने भेजे गए। लेकिन विमान समुद्र में गिर पड़ा। आश्चर्य यह कि गिरे विमान से चालक बाहर निकला और तैरकर किनारे आ लगा। वहां आकर बेहोश हो गया। उसे तुरंत अस्पताल पहुंचाया गया।

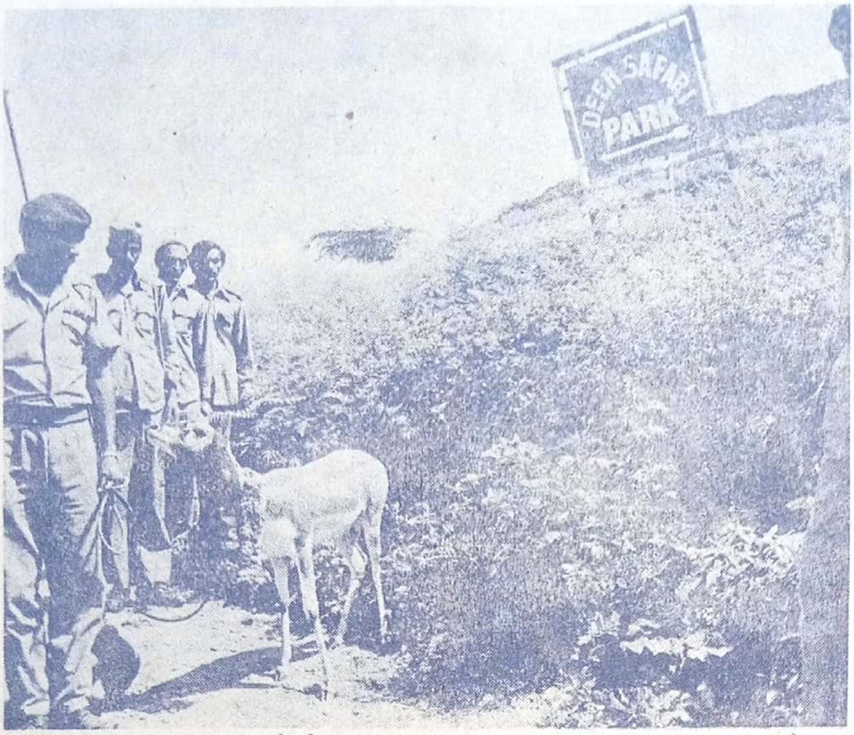
हाथी की जान बची

कोलम्बो। जंगली हाथी को एक किसान ने गोली मार दी। गांव वाले घायल हाथी के लिए गुड़ और रोटी लाए। मगर उसके दर्द को कैसे ठीक करते? उन्होंने श्रीलंका में मौजूद भारतीय शांति सेना के जवानों को खबर की। जवान अपने साथ डाक्टर ले आए। डाक्टर ने हाथी की गोली निकाली, मरहम-पट्टी भी की।

नन्हे समाचार

- ☐ १९०३ में बनी एक कार इंग्लैंड में बिक्री के लिए रखी गई, तो लोगों ने उसे बहुत पसंद किया। उसमें इंजन के आगे बेंत की बनी एक कुर्सी लगी थी।
- ☐ १३ वर्ष के अखिल देसाई ने १५ घंटे तैरकर फ्रांस और इंग्लैंड के बीच इंग्लिश चैनल समुद्र पार कर दिखाया।
- ☐ देश में ऐसे एक लाख स्कूल हैं, जहां केवल एक ही अध्यापक है।
- ☐ राजस्थान सरकार ने अपने विभागों से कहा है कि वे बैंकों से हिंदी में पत्र व्यवहार करें।
- ☐ स्विट्ज़रलैंड के बेसिल नगर का एक होटल कक्ष विचित्र ढंग से सजाया गया है। उसकी छत से किताबें ही किताबें लटकी हुई हैं।
- ☐ इटली का एक व्यक्ति सारी उम्र खिलौना रेलगाड़ियां और जहाज जुटाता रहा। पिछले दिनों उसने अपना अद्‌भुत संग्रह २ करोड़ से अधिक रुपयों में बेच दिया।
- ☐ एक खेल प्रतियोगिता में भगदड़ मची तो एक बच्चा अपनी गाड़ी से गिर गया। एक खिलाड़ी ने देखा, तो दौड़कर बच्चे को गाड़ी समेत सिर पर उठा लिया और काफी दूर तक भागता चला गया। बच्चे के प्राण बच गए।
- ☐ स्विट्ज़रलैंड में सौर ऊर्जा से चलने वाली कारों की रेस हुई! दर्शकों ने इसमें बहुत रुचि दिखाई।
- ☐ पश्चिमी जर्मनी में एक परमाणु बिजली घर का विरोध करने का विचित्र तरीका निकाला गया। वहां अनेक संगीतकार आ जुटे और गाने-बजाने लगे।
- ☐ तोक्यो में फोटो प्रतियोगिता हुई। इसमें बाईस देशों ने भाग लिया। भारत को नौ इनाम मिले।

सचित्र समाचार



↑ जम्मू-कश्मीर में पशु-पक्षियों के संरक्षण के लिए आठ विश्राम गृह बनाए गए हैं ।

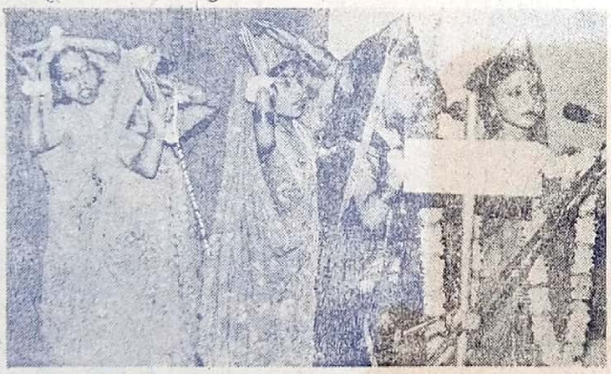


इटली में १९९१ में होने वाली विश्व ↑ फुटबाल कप का प्रतीक

बोरिस बेकर और स्टेफी ग्राफ ने इस वर्ष बिम्बलडन प्रतियोगिता जीती : दोनों खिलाड़ी पश्चिम जर्मनी के हैं । ↓







↑ मोदीनगर के जैमिनी पब्लिक स्कूल में बच्चों के रंगारंग कार्यक्रम ।



↑ गुड़िया दादी : अस्सी साल पुरानी इस गुड़िया को फ्रांस के एक संग्रहालय के लिए खरीदा गया है । इतनी कीमत पर कोई गुड़िया आज तक नहीं बिकी ।

चांद पर मनुष्य का पहला कदम ↓





साहित्य कला परिषद का बाल नाट्य ↑ समारोह । 'जंगल में मंगल' नाटक का दृश्य ।

Scanned with CamScanner



Scanned with CamScanner



Scanned with CamScanner



Scanned with CamScanner


एक दिन उज्जयिनी के कुछ राज पुरुष कहीं जा रहे थे । मार्ग में—
इस मूर्ख को महाराज के पास ले चलते हैं ।
और कुछ नहीं, तो मनोरंजन ही होगा ।
क्या नाम है तेरा ?
कालिदास !
किंतु कालिदास ने महाकाली की उपासना करके इतना ज्ञान प्राप्त किया कि महाकवि बन गए । उनकी आराध्या देवी का मंदिर है—गढ़ कालिका—
उज्जयिनी में सभी देवी-देवताओं के मंदिर हैं, तो यंत्र महल, भर्तृहरि गुफा, कालियादह महल जैसे प्राचीन स्मारक भी—
जय शिप्रा !
स्त्रियां महानदी शिप्रा की पूजा करती हैं । धूप-नैवेद्य व, नारियल चढ़ाती हैं । दीपदान करती हैं । महाकालेश्वर के दर्शन से पहले शिप्रा के स्नान का विशेष महत्व है ।
जय शिप्रा !



सुनहरी पोशाक

—रैन बोस्सिलेक

एक था राजा, एक थी रानी और एक था राजकुमार। रानी की मृत्यु हो गई। राजा ने दूसरा विवाह कर लिया। नई रानी राजकुमार से घृणा करती थी। वह उससे छुटकारा पाने का उपाय सोचने लगी।

राजकुमार के पास एक सफेद टट्टू था, जिसके माथे पर तारे का निशान बना हुआ था। हर शाम वह अपने टट्टू के साथ बिताता था। एक शाम टट्टू ने राजकुमार से कहा— "सौतेली मां तुम्हारी हत्या करना चाहती है। आज रात जो भोजन तुम्हारे लिए भेजा जाएगा, उसमें जहर मिला होगा। तुम उसे मत खाना।"

रात हुई। नौकरों ने भोजन परोसा। राजकुमार ने रोटी और नमक खाने की इच्छा प्रकट की। नौकरों ने आदेश का पालन किया। राजकुमार ने नमक के साथ रोटी खाई, पानी पिया और सो गया।

अगली शाम टट्टू ने उसे सावधान किया— "आज रात पलंग पर मत सोना। चादर के नीचे छुरियां छिपाकर रख दी गई हैं।" राजकुमार उस रात फर्श पर सो गया। मृत्यु के मुंह में जाने से बच गया।

तीसरी शाम टट्टू ने उसे फिर आगाह किया— "राजकुमार, इस बार तुम्हारी सौतेली मां ने तुम्हारे तकिए के नीचे सांप रख छोड़ा है। इसलिए आज रात सोने से पहले उस सांप को मार डालना।" राजकुमार ने वैसा ही किया।

सुबह उसे जीवित देख, रानी सोच में पड़ गई। उसने राजकुमार के बारे में जानकारी हासिल की। उसे पता चला कि राजकुमार रोज शाम को अस्तबल जाता है। अपने टट्टू के साथ समय बिताता है। वह ताड़ गई कि हो न हो, यह कोई चमत्कारी टट्टू है। उसने उसे मारने की योजना बनाई। अगले ही दिन रानी ने बीमार होने का ढोंग रचा। दिन बीतते गए। रानी की बीमारी से राजा चिंतित रहने लगा। एक दिन रानी ने राजा से कहा— "महाराज, अस्तबल में एक सफेद टट्टू है। ज्योतिषी ने बताया है, उसके मरते ही मैं ठीक हो जाऊंगी।"

"मगर वह टट्टू तो मेरे बेटे के पास है। वह उसे अपने प्राणों से भी ज्यादा प्यार करता है। फिर भी मैं राजकुमार से बात करता हूं। शायद वह मान जाए।"— राजा ने कहा।

रानी गुस्से में भरकर चिल्लाई— "जो मर्जी आए, कीजिए। आप कैसे राजा हैं? क्या राजकुमार को आप आदेश नहीं दे सकते?"

राजा, राजकुमार के पास गया और बोला— "बेटे, तुम्हारी मां बीमार है। उसके इलाज के लिए तुम्हारे टट्टू को मरवाना पड़ेगा।"

"ठीक है, पिता जी!"— राजकुमार ने जवाब दिया—"आप मेरे लिए, सूर्य-सी चमचमाती सुनहरी पोशाक सिलवा दें और मेरे टट्टू के लिए सोने की एक काठी बनवा दें। मैं सुनहरी पोशाक पहनकर, आखिरी बार अपने प्यारे टट्टू की सवारी करना चाहता हूं। अगर आपको आशंका हो कि मैं भाग जाऊंगा, तो आप महल के तमाम द्वार बंद करवा दें।"

राजा मान गया। शाम को राजकुमार टट्टू के पास गया। उसे रानी के षड्यंत्र के बारे में बताया। टट्टू ने कहा— "निश्चिंत रहो, राजकुमार! हमारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। तुम्हारे एड़ लगाते ही मैं सरपट दौड़ना शुरू कर दूंगा और अपनी व तुम्हारी रक्षा करूंगा।"

सुनहरी पोशाक सिलवा ली गई। सोने की काठी भी बनवा ली गई। राजकुमार ने नई पोशाक पहनी, टट्टू पर सोने की जीन कसी। उसे महल के आंगन में ले आया। फिर उसने राजा की ओर देखा। वहां एकत्र लोगों पर नजर डाली और उछलकर टट्टू पर चढ़ गया। एड़ लगाते ही टट्टू सरपट दौड़ने लगा। उसने शाही उद्यान के कुछ चक्कर लगाए। राजकुमार ने अयालों को कसकर पकड़ लिया और उसकी पीठ से चिपक गया। अचानक टट्टू हवा की गति से उछला और पलक झपकते ही महल की ऊंची दीवार को फांदकर भाग निकला। देखते ही देखते दोनों अदृश्य हो गए।

आखिरकार वे एक अन्य राज्य में पहुंचे। राजकुमार ने अपनी चमचमाती पोशाक उतारी और काठी से बांध दी। टट्टू ने उसे तीन बाल दिए और कहा— ''जब भी तुम्हें मेरी जरूरत पड़े, इन्हें आग में गरम करना। मैं तुरंत तुम्हारे पास पहुंच जाऊंगा।'' यह कहकर वह जंगल में जाकर छिप गया।

राजकुमार ने एक गड़रिए से कुछ फटे-पुराने कपड़े खरीदे। उन्हें पहन, उस अजनबी राज्य की राजधानी की ओर चल दिया। सौभाग्य से उसे राजमहल में शाही उद्यानों की देखभाल का काम मिल गया। अब वह राजा का नौकर था— एक साधारण माली। दिन भर वह गोड़ने, बोने, रोपने, निराई करने और फूल व पौधों को पानी देने में जुटा रहता। उसकी मेहनत रंग लाई और शाही उद्यान की खूबसूरती में चार चांद लग गए।

एक शाम उसने जादुई बालों को आग में गरम किया। तुरंत टट्टू वहां पहुंच गया। राजकुमार ने अपनी सुनहरी पोशाक पहनी और रात भर उद्यान में टट्टू को दौड़ता रहा। पौ फटते ही उसने अपनी पोशाक उतारी, उसे काठी से बांधा और टट्टू को वापस जंगल में भेज दिया।

संयोग से जब वह उद्यान में टट्टू को दौड़ा रहा था, महल की खिड़की से राजकुमारी की दृष्टि उस पर पड़ी। हैरानी से वह उसे टट्टू की सवारी करते, रात भर



देखती रही।

अगले दिन सुबह, शाही उद्यान की दुर्दशा देखकर सभी चौंक उठे। फूलों, पौधों और घास को किसी ने बुरी तरह रौंद डाला था। खबर मिलने पर राजा क्रुद्ध हो उठा। उसने माली बने राजकुमार से पूछा— ''इस उद्यान को किसने उजाड़ा है?''

—''एक गुमनाम योद्धा ने महाराज!''

''गुमनाम योद्धा! क्या बकते हो?''— राजा ने गरजकर आदेश दिया— ''फौरन मेरी आंखों से दूर हो जाओ।'' और राजा ने उसे भगा दिया।

लेकिन राजा की पुत्री उस नवयुवक माली के लिए आंसू बहाने लगी। वह उससे शादी करना चाहती थी। राजा को यह सुनना तक गवारा न था। रोते-रोते राजकुमारी की आंखें सूज गईं। वह बीमार पड़ गई। राजा हैरान और परेशान! आखिरकार उसका हृदय पसीज गया। वह राजकुमारी के पास गया और बोझिल मन से बोला— ''बेटी, अगर तुम्हारी यही इच्छा है, तो तुम उससे शादी कर लो, मगर मुझे कभी अपनी शक्ल मत दिखाना।''

विवाह हो गया। राजा की अनुमति से नवदम्पति जीने के नीचे बनी एक कोठरी में रहने लगे। काफी समय बीत गया। राजा का एक अन्य राजा से युद्ध छिड़ गया। सेना युद्ध क्षेत्र की ओर चल पड़ी। मार्ग में सैनिकों को राजा का दामाद दिखाई दिया। वह एक लंगड़े गधे पर सवार था। हर कोई उसका मजाक उड़ाने लगा। रास्ते में दलदल था। उसने गधे को दलदल में हांक दिया। गधा दलदल में धंस गया।



अब वह हिलडुल नहीं सकता था ।

कुछ सैनिकों ने राजा के दामाद से कहा— "अरे, भाई ! लगता है, तुम तो तुम, तुम्हारा गधा भी राजा की सहायता करेगा ।"

गुमनाम योद्धा चुपचाप गधे पर बैठा रहा । जब फौज आगे निकल गई, तो उसने टट्टू के दिए हुए बालों को गरम किया । पलक झपकते ही टट्टू प्रकट हो गया । उसने सुनहरा लिबास पहना, टट्टू पर सवार हो, युद्धक्षेत्र में जा पहुंचा । घमासान युद्ध हो रहा था । राजा शत्रुओं से घिरा हुआ था । शत्रु उसको मार ही डालते कि उन पर गुमनाम योद्धा बिजली की तरह टूट पड़ा । उसकी सुनहरी तलवार के वार शत्रु झेल नहीं पाए और भाग खड़े हुए ।

राजा की जान बच गई, किंतु युवा योद्धा की सबसे छोटी अंगुली जख्मी हो गई । राजा ने अपना रूमाल घाव पर बांध दिया । रूमाल पर सुनहरी जरी से बेल-बूटे कढ़े हुए थे ।

एकाएक वह योद्धा गायब हो गया । वह दलदल के पास पहुंचा । सोने सी-दमकती पोशाक उतारी । उसे काठी से बांध, टट्टू को जंगल में भेजा और गधे पर सवार हो गया । इस बीच राजा की सेना भी वहां आ पहुंची । एक बार फिर सैनिकों ने राजा के दामाद का मखौल उड़ाया । किसी ने कहा— "ओ वीरपुरुष ! तुम जीत गए । अब घर लौट जाओ ।" राजा को भी हंसी आ गई । अंतिम सैनिक के वहां से गुजरते ही, राजा का दामाद गधे को लेकर चल दिया । लंगड़ाता हुआ, ढेंचू-ढेंचू करता हुआ गधा महल की ओर चल पड़ा । घर पहुंचकर उसने अपनी पत्नी से कहा— "मुझे तीन दिन तक न जगाना ।" और सो गया ।

अगले दिन राजा ने सेना का मुआयना किया । वह जानना चाहता था कि कितने सैनिक मारे गए और कितने जख्मी हुए ? अचानक उसे अपने दामाद की याद आई । उसने उसे बुला भेजा । सोचा— 'कुछ मनोरंजन हो जाएगा ।' एक के बाद एक कई लोग राजा के दामाद को बुलाने गए, लेकिन खाली हाथ लौट आए । उन्होंने राजा को बताया— "आपका दामाद सो रहा है । राजकुमारी का कहना है कि उसके पति को तीन दिन तक न जगाया जाए ।"

सुनकर राजा को गुस्सा आ गया । वह स्वयं अपने दामाद की कोठरी में जा धमका । मगर आश्चर्य ! उसके दामाद की अंगुली पर उसका अपना रूमाल बंधा हुआ था । राजा ने अपने दामाद को जगाया और पूछा— "बेटे, यह रूमाल तुम्हारी अंगुली पर किसने बांधा ?"

दामाद की आपबीती सुनकर राजा की आंखें खुल गईं । वह उसे महल में ले गया और सिंहासन पर बैठाकर राज्य की बागडोर उसके हाथों में सौंप दी । राजा बनते ही दामाद ने बालों को जलाया । टट्टू तुरंत प्रकट हुआ । और फिर उसने अपने प्रिय टट्टू के लिए सोने का एक विशाल और भव्य अस्तबल बनवाया ।

प्रस्तुत : विनोद शर्मा

Scanned with CamScanner

राम आ गए

—पीयूष वर्मा

देवपुर के राजा वीरमणि जितने वीर थे, उतने ही धार्मिक भी। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शंकर ने उन्हें वर दिया था—'भगवान राम के अश्वमेध यज्ञ होने तक, मैं स्वयं तुम्हारी और तुम्हारे राज्य की रक्षा करूंगा।'

आखिर वह दिन आ ही पहुंचा। भगवान राम ने अश्वमेध यज्ञ किया। उनकी चतुरंगिणी सेना चारों तरफ विजय की पताका फहराती एक दिन देवपुर की सीमा पर पहुंची।

राजा वीरमणि के पुत्र रुक्मांगद ने अश्वमेध यज्ञ के घोड़े को देखा, तो पकड़ लिया। घोड़े के पीछे शत्रुघ्न के साथ भरत के पुत्र पुष्कल और हनुमानजी थे। राम की सेना रुक्मांगद की सेना पर टूट पड़ी। देखते-देखते भयानक युद्ध छिड़ गया। इस युद्ध में वीरमणि के साथ स्वयं भगवान शंकर ने युद्ध की कमान संभाल रखी थी।

राम की सेना वीरमणि की सेना पर भारी पड़ रही थी। भगवान शंकर ने यह देखा, तो अपने प्रमुख गण वीरभद्र के साथ राम की सेना पर टूट पड़े। परिणाम यह हुआ कि वीरभद्र ने पुष्कल को घायल कर दिया। उधर भगवान शंकर ने शत्रुघ्न को मूर्च्छित कर दिया।

यह देखकर हनुमान जी के क्रोध का ठिकाना न रहा। उन्होंने शत्रुघ्न जी एवं पुष्कल को एक रथ में लिटाया। उनकी रक्षा की व्यवस्था कर, स्वयं युद्ध के मैदान में कूद पड़े।

भगवान शंकर ने हनुमान जी के उस भयंकर युद्ध को देखा, तो स्वयं उनसे युद्ध करने आ गए। भगवान शंकर को शत्रु पक्ष में देख, हनुमानजी का गुस्सा और भड़क उठा।

"मैंने तो सुना था, आप भगवान राम के भक्त हैं, किंतु आज कुछ और देख रहा हूं।"—हनुमानजी ने व्यंग्य से कहा।

"भक्त की मर्यादा के लिए सभी कुछ करना पड़ता है कपि!"— भगवान शंकर बोले— "वीरमणि मेरा अनन्य भक्त है। उसकी तथा उसके राज्य की रक्षा का वर मैंने उसे दे रखा है। इसलिए मुझे आना पड़ा।"

"तो फिर उसका फल भी चखिए।"—कहते हुए हनुमानजी ने भगवान शंकर को अपनी पूंछ में लपेट लिया। यह दृश्य देखकर नंदी भयभीत होकर भाग खड़ा हुआ। भगवान शंकर मुसकराकर बोले—"महावीर हनुमान, मैं तुमसे प्रसन्न हूं। मांगो, क्या वर मांगते हो।"

"मांगता तो वह है, जिसके पास कुछ न हो। मेरे पास प्रभु का दिया सब कुछ है।"

"फिर भी मैं तुम्हारी वीरता से प्रसन्न हूं। कुछ तो मांगना ही पड़ेगा।" —भगवान शंकर ने कहा।



—"यदि आप देना ही चाहते हैं, तो फिर आप अपने गणों के साथ मेरे मृत सैनिकों को भी जीवित कर दें। मैं तब तक द्रोण पर्वत से शत्रुघ्नजी एवं पुष्कल आदि के घावों को भरने के लिए औषधि ले आऊं।"

"एवमस्तु।"—कहते हुए भगवान शंकर मुसकराए। तभी हनुमानजी औषधि लेने द्रोण पर्वत की ओर बढ़ चले।

द्रोण पर्वत पर पहुंचकर हनुमानजी ने शीघ्र ही मृत संजीवनी बूटी ढूंढ़ी। उसे लाकर शंकरजी को दे दिया। शंकरजी ने राम-सेना के मृतकों को जीवित कर दिया। फिर क्या था—जीवित होते ही एक बार फिर भयानक युद्ध शुरू हो गया। शत्रुघ्नजी ने भगवान शंकर को आड़े हाथों लिया और हनुमानजी तथा पुष्कल ने अन्य योद्धाओं को।

फिर भी भगवान शंकर के प्रहारों को झेलना शत्रुघ्न के लिए कठिन हो रहा था। उनकी यह हालत देखकर हनुमानजी ने कहा—"मेरी मानिए तो भगवान राम का स्मरण करिए।भगवान शंकर को हराना आपके लिए संभव नहीं।"

शत्रुघ्न भी युद्ध करते-करते थक चुके थे। वह तुरंत भगवान राम का स्मरण करने लगे। कुछ ही देर बाद भगवान राम उनके सामने थे।

भगवान राम को आया देख, सेना में खुशी की लहर दौड़ गई। शत्रुघ्न तथा हनुमान ने भगवान के चरणों की वंदना की। वे दूने उत्साह से युद्ध क्षेत्र की ओर बढ़ चले।

उधर भगवान शंकर ने भगवान राम के आने का समाचार सुना, तो वीरमणि से बोले—"वीरमणि, मैंने तुम्हारी रक्षा का जो वचन दिया था, उसका समय पूरा हो गया।" इतना कहकर उन्होंने अपना त्रिशूल एक तरफ रख दिया। नंगे पांव ही भगवान राम से मिलने चल पड़े।

वीरमणि ने जब देखा, स्वयं भगवान शंकर राम की वंदना कर रहे हैं, तो उन्होंने भी हथियार डाल दिए। अश्वमेध यज्ञ का जो घोड़ा पकड़ रखा था, उसे छोड़ दिया। ●

दरवाजा खुल गया

— क्षमा शर्मा

लाल परी के बच्चे थे— रूपिका और ऋग। परी लोक में तरह-तरह के फूल थे, संगीत था। मीठे-मीठे फल और स्वादिष्ट भोजन की भी कमी न थी। लाल परी की सखियां और दूसरी परियां भी रूपिका और ऋग को बहुत प्यार करती थीं। वे दोनों जो कुछ चाहते, पलक झपकते ही हाजिर हो जाता।

जब रात हो जाती, रूपिका और ऋग की आंखें मुंदने लगतीं, तब परियां उन्हें लोरियां सुनातीं। थपकियां देतीं और जल्दी ही बच्चे मीठे सपनों में खो जाते।

लेकिन अक्सर जब वे जागते, अपनी मां को न पाते। उनकी समझ में न आता कि मां रात को उनके पास क्यों नहीं रहती? वह कहां चली जाती है? मां की दूसरी सहेलियां भी नजर नहीं आतीं। रूपिका बड़ी थी। उसने ऋग से कहा— "यह मां और मौसियां रोज कहां जाती हैं?"

—"हां दीदी, मां के न रहने से हमें डर भी लगता है।"

"चलो, ढूंढ़ें मां को।"— रूपिका बोली।

ऋग और रूपिका ने महल का कोना-कोना छान मारा। मगर मां वहां होती तो मिलती। मां— लाल परी तो अपनी सहेलियों के साथ कमल सरोवर में नाच-गा रही थी। ढूंढ़ते-ढूंढ़ते बच्चे परी नगर के फाटक पर आ गए। उन्होंने फाटक को जरा-सा धक्का दिया, तो वह खुल गया। ऊंघते चौकीदार को इस बात का पता तक न चला। बच्चे बाहर आए।

आज तक वे कभी परी नगर के फाटक से बाहर नहीं आए थे। चौकीदार को सख्त हिदायत थी कि बच्चों को फाटक से बाहर न जाने दिया जाए। लेकिन आज तो चौकीदार को पता तक न चला और रूपिका, ऋग बाहर निकल आए।

थोड़ी ही देर में वे दोनों यह भूल गए कि मां को ढूंढ़ना है। वे इधर-उधर उड़ने लगे। अपने

Scanned with CamScanner



नन्हे-नन्हे पंखों को फैलाते-सिकोड़ते उन्हें आनंद आ रहा था।

अचानक उन्हें लगा, जैसे वे नीचे की तरफ खिंचते चले जा रहे हैं। उन्होंने ऊपर उड़ने की बहुत कोशिश की, लेकिन उड़ न सके। उन्हें महसूस हो रहा था, जैसे कोई बहुत वेग से उन्हें अपनी तरफ खींच रहा था।

"दीदी, मुझे बचाओ। न जाने कौन मुझे नीचे लिए जा रहा है?"— ऋग चिल्लाया।

"ऋग, मुझे भी कोई खींच रहा है। पता नहीं अब क्या होगा? हम जिंदा भी रहेंगे कि नहीं। अपने घर भी कभी लौट सकेंगे या नहीं।"— रूपिका घबराई हुई-सी बोली।

जल्दी ही वे दोनों घास के मैदान पर गिर पड़े। गिरने से पहले उन्होंने अपने को संभाल लिया, इसलिए चोट ज्यादा नहीं लगी। चारों ओर सुनसान और अनजान जगह, दोनों बच्चों का घबराहट के मारे बुरा हाल था। उन्हें मां याद आने लगी। शायद मां इसीलिए कहती थी कि कभी फाटक से बाहर न जाना।

ऋग बुरी तरह से रो पड़ा।

"रोते क्यों हो ऋग? जैसे ही मां को पता चलेगा, हम बिस्तर पर नहीं हैं, वह हमें ढूंढ़ने निकल पड़ेगी। जल्दी ही हम उसे मिल जाएंगे।"— रूपिका ने उसे ढाढ़स बंधाया।

धीरे-धीरे चिड़ियां चहकने लगीं। जैसे-जैसे रोशनी बढ़ी, बच्चों की घबराहट भी बढ़ती गई। एक तो अनजान जगह, दूसरे सूरज के ताप को भला ये परी नगर के बच्चे कैसे सहन कर पाते?

तभी गांव के दो लोग उधर से गुजरे। उनकी नजर उन बच्चों पर पड़ी। बच्चों ने उन्हें देखकर भागना चाहा, तो उन्होंने उन्हें दौड़कर पकड़ लिया।

बच्चे चिल्लाने लगे, मगर उन दोनों आदमियों ने उनकी एक न सुनी। वे दोनों बच्चों को उठाकर गांव में ले आए।

इन दोनों विचित्र बच्चों को देखकर गांव में भीड़ लग गई।

"अरे, ये कौन हैं? आधे मनुष्य, आधे पक्षी।"— एक आदमी बोला

"अगर हम इन्हें चिड़िया घर को बेच दें, तो इन अद्भुत जीवों के अच्छे पैसे मिल जाएंगे।"— किसी दूसरे ने कहा।

रूपिका और ऋग इन लोगों की कोई बात समझ नहीं पा रहे थे, लेकिन परेशान थे। रूपिका सोच रही थी— 'न जाने अब क्या होगा? मां उन्हें कहां-कहां ढूंढ़ती होगी। काश, मां को खोजने न निकले होते।' लेकिन रूपिका अपने मन की बात ऋग को भी नहीं बता सकती थी। वह तो था भी छोटा। ऐसी बातें सुनकर और अधिक घबरा जाता।

अब तक बहुत-से गांव वाले जमा हो गए थे। उन सबको लग रहा था— इन्हें चिड़िया घर को बेच देने से अच्छे पैसे मिल जाएं, तो क्या बुरा है?

तभी एक बूढ़ा वहां आया। उसने एक नजर सहमे हुए बच्चों पर डाली, फिर गांव वालों की बात सुनने लगा।

सुनकर बोला— "अरे मूर्खो, पैसे के लालच ने तुम्हें अंधा कर दिया है। क्या अपने बच्चों को भी कोई बाजार में बेचता है?"

"लेकिन ये हमारे बच्चे कहां हैं? ये न तो पक्षी हैं, न मनुष्य।"— बहुत-से लोगों ने कहा।

—"ये न पक्षी हैं, न मनुष्य। ये तो परियों के बच्चे हैं।"— बूढ़ा बोला— "तुम्हें पता है! मेरे दादा बताते थे, बहुत पहले जब यहां अकाल पड़ा था। खेतों में अन्न का एक दाना तक नहीं उगा था। सारे नदी, तालाब, कुएं सूख गए थे। तब परियों ने

इस गांव के लोगों की बहुत मदद की थी। इतने भीषण अकाल में भी इस गांव का कोई आदमी भूखा-प्यासा नहीं मरा था।''

''ठीक है, बाप-दादों की सहायता गुजरे जमाने की बात हो गई। ऐसे हम किस-किसके अहसान को ध्यान में रखें।''— गांव वाले एक साथ बोले।

अब तक सूरज चढ़ आया था। दोनों बच्चे घबराहट के मारे बेहोश होने लगे। बूढ़े से उनकी हालत देखी नहीं गई। वह बोला— ''ठीक है, तुम लोगों की जो मर्जी। देखो, जैसे-जैसे गर्मी बढ़ेगी, इन बच्चों की तकलीफ बढ़ेगी। सो इन्हें अंधेरे में और पानी के पास रखो।'' कहकर बूढ़ा वहां से चला गया। वह बहुत दुखी था। नन्हे बच्चों की तकलीफ उससे देखी नहीं जा रही थी।

धीरे-धीरे शाम हो गई। शाम रात में बदली। चंद्रमा निकला और चारों ओर चांदनी फैल गई। एकाएक बूढ़ा कमल सरोवर की तरफ चल दिया। इस सरोवर में रंग-बिरंगे ढेरों कमल खिलते थे। दूर तक उनकी भीनी सुगंध फैली हुई थी। बूढ़े ने सुना था, अक्सर परियां इस सरोवर में उतरा करती थीं। बूढ़ा बहुत देर इंतजार करता रहा, मगर वहां कोई परी नहीं उतरी।

निराशा में वह जोर-जोर से पुकारने लगा— ''अरे परियो! सुनो, तुम न जाने कहां नाच गा रही हो? इधर तुम्हारे बच्चे कैद हैं, परेशान हैं। अगर तुम तक मेरी बात पहुंच रही है, तो जल्दी आओ। मैं तुम्हारे बच्चों का पता बता सकता हूं।''

थोड़ी देर बाद बूढ़े को लगा, जैसे हवा में कमल की सुगंध के अलावा दूसरी सुगंध भी उठ रही है। कुछ ही देर में रुन-झुन सुनाई दी। बूढ़े को अपनी आंखों पर विश्वास न हुआ। उसके सामने सचमुच पांच परियां खड़ी थीं। वे सभी बहुत उदास थीं।

उनमें से एक बोली— ''बाबा, क्या सचमुच तुम्हें मालूम है, हमारे बच्चे कहां हैं? हम तो उन्हें ढूंढ़-ढूंढ़कर परेशान हो गई हैं। न जाने वे किस हाल में हैं। हमारी यह सहेली तो रो-रोकर बेहाल है।''

बूढ़े ने देखा— एक परी की आंखों से आंसू झर रहे थे।— 'शायद यही है बच्चों की मां-लाल परी।'

''आप सब समय न गंवाएं। जल्दी ही सुबह हो जाएगी, फिर बच्चों की खैर नहीं। जल्दी आइए मेरे साथ।''— बूढ़ा बोला।

बूढ़ा परियों को लेकर वहां पहुंचा, जहां बच्चे कैद थे। गांव के कुछ लोग अब भी वहां जमा थे। वे पहरा दे रहे थे। हंस-बोल रहे थे। रोते-बिसूरते उन दोनों बच्चों की उन्हें कोई परवाह न थी।

''देखो, उस कमरे में बच्चे बंद हैं। मगर हम उन्हें निकालेंगे कैसे? इन लोगों ने तो लगता है रात भर जागने की कसम खाई है।''— बूढ़े ने चिंतित स्वर में कहा।

अचानक लाल परी कुछ बुदबुदाई। यह क्या! जो जहां था, वहीं का वहीं लुढ़क गया। वे सब गहरी नींद में डूब गए। अब परियां ताला लगे कमरे की तरफ बढ़ीं। जैसे ही वे दरवाजे के निकट पहुंचीं, दरवाजा अपने आप एक ओर खिसक गया। रूपिका और ॠग ने अपने सामने मां और मौसियों को देखा, तो वे उनसे लिपट गए। रोने लगे। परियों ने उन्हें गोद में उठाया और बाहर आईं। दरवाजा फिर पहले की तरह हो गया। बंद, ताला लगा।

बूढ़े ने यह चमत्कार देखा। लाल परी ने कहा— ''बाबा, तुमने हमारे बच्चों की मदद की है। उनका पता बताया है। अपनी कोई एक इच्छा बताओ। हम उसे पूरा करेंगी।''

—''मेरी कोई इच्छा नहीं है। बस, यही कि आप इस गांव के लोगों को माफ कर दें। फिर कभी यदि वे मुसीबत में फंसें, तो उनकी मदद करें।''

बूढ़े की बात सुन परियां उड़ गईं। अब वे हंस रही थीं।

सुबह जब गांव वाले उठे, तो उन्होंने देखा, कमरे में बच्चे नहीं थे। जबकि ताला पहले जैसा ही लगा, हुआ था। उन्हें लगा, शायद बूढ़ा ठीक कहता था— वे परियों के बच्चे थे। चमत्कारी बच्चे।●

Scanned with CamScanner

चटपट

- लोग— जल्दी वर्षा के लिए प्रार्थना शुरू कीजिए।

  पुजारी— प्रार्थना करने से पहले, आप अपने-अपने छाते तो खोल लीजिए।

- एक मित्र— आप कैसे कह सकते हैं कि जानवर मनुष्य से अधिक समझदार होते हैं?

  दूसरा मित्र— अब देखो न, पांच घोड़े दौड़ रहे हैं और उनको देखकर पांच हजार आदमी चिल्ला रहे हैं।

- कमल— तुमने मेरे गाने की तारीफ की। काश, मैं भी तुम्हारी तारीफ कर सकता।

  विमल— कर क्यों नहीं सकते? बस मेरी तरह थोड़ा-सा झूठ बोलना सीख लो।

- मोटा आदमी— घोड़े पर मेरी बीस किलोमीटर की यात्रा सफल रही।

  मित्र— पर बेचारे घोड़े का क्या हाल है?

- गीता— मित्र और ब्रेक एक जैसे कैसे हो सकते हैं?

  नीता— असलियत जानने के लिए दोनों की परीक्षा लेनी पड़ती है।

- बबलू— मुझे देखकर तुम्हें अपने पूर्वजों की याद कैसे आती है?

  डबलू— आखिर हम दोनों के ही पूर्वज बंदर थे।

- कमलेश— तुम्हारे स्नान घर में एक टब गर्म पानी का, दूसरा ठंडे का और तीसरा...

  विमलेश— तीसरा खाली तब के लिए, जब नहाने का मन न कर रहा हो।

- थानेदार— यह अंगूठी तुम्हें दौड़ में प्रथम आने पर मिली है। तुम्हारे साथ और कौन-कौन दौड़ा था?

  चोर— दो सिपाही और अंगूठी का मालिक।

- जज— अब किसी ने शोर मचाया, तो उसे अदालत से बाहर कर दिया जाएगा।

  तभी कठघरे में खड़ा कैदी जोर-जोर से चीखने-चिल्लाने लगा।

- महिला— इतनी मिठाइयां देखकर क्या तुम्हारा खाने को मन नहीं करता?

  हलवाई का बच्चा— नहीं, मैं तो उन्हें चाटकर ही काम चला लेता हूं।

- मालकिन— काम तो कर रहे हो, मगर आवाज सुनाई नहीं दे रही।

  पुताई वाला— आपने कूंची को भी हथौड़ा समझ रखा है क्या?

- लड़का— क्यों, भविष्य का अर्थ क्यों नहीं समझूंगा?

  दुकानदार— समझता है तो सुन, भविष्य में यहां फिर कभी न आना।



तेनालीराम २५८

समझौता



एक बार दरबार में राजा कृष्णदेव राय ने कहा—"हमारे राज्य के कलाकार सुंदर कलाकृतियां बनाते हैं। क्यों न इन्हें देश-विदेश में बेचा जाए। इससे कलाकारों को लाभ होगा। राज्य का नाम भी फैलेगा, लाभ भी पहुंचेगा।"

सभी ने इस सुझाव का अनुमोदन किया। मंत्री को यह काम सौंपा गया कि वह प्रतिनिधि मंडल के साथ जाए, पड़ोसी राज्यों से समझौता करके आए। मंत्री ने खजाने से ढेर-सा रुपया लिया। प्रतिनिधि मंडल में अपने आदमी रखे। यात्रा पर निकल पड़ा।

महीने भर बाद लौटा, तो राजा को बताया कि इस बार केवल बातचीत हुई। अगले महीने कई प्रतिनिधि मंडल हमारे यहां आएंगे। तभी अंतिम समझौता होगा।



अगले महीने दूसरे राज्यों के प्रतिनिधि मंडल आए। वार्ताएं हुई। भोज हुए। व्यापार संधि पर हस्ताक्षर भी हुए। मगर काफी दिन बीतने पर भी राजा को व्यापार शुरू होने की सूचना नहीं मिली। उनका माथा ठनका। तेनालीराम को बुलाकर कहा—"जाकर पता करो। व्यापार शुरू क्यों नहीं हुआ ?"

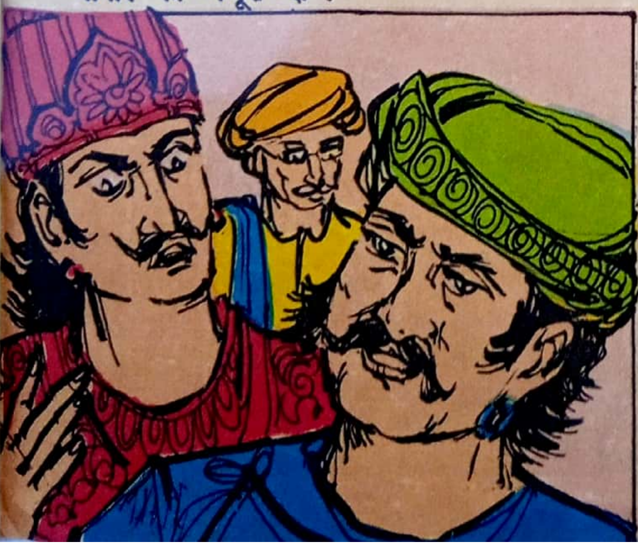
तेनालीराम कई दिन तक दरबार में नहीं आया। खोज-खबर करवाई गई। पता चला, हाथ-पैरों में पट्टियां बांधे, वह खाट पर पड़ा है। राजा ने उसे बुलाया, तो लंगड़ाता हुआ आया।



—"क्यों, यह दशा कैसे हुई ? जो काम तुम्हें सौंपा था, उसका क्या हुआ ?"

—"महाराज, कलाकृतियों का व्यापार शुरू हो गया है। राज्य की ओर से एक को मंजूरी भी दे दी गई है। उसी के गोदाम पर गया था। पर, मुझे देखते ही वहां के कर्मचारी मुझ पर टूट पड़े। किसी तरह जान बचाकर भागा।"

राजा क्रोध से बोले—"कौन-सी फर्म है वह ? किसने उसे व्यापार की मंजूरी दी ?"



तेनालीराम बोला—"महाराज, मंजूरी देने वाला और लेने वाला एक ही है।"

"तुम क्या कहना चाहते हो ?"—राजा ने तेनालीराम से पूछा।

तेनालीराम ने मंत्री की ओर संकेत करते हुए कहा—"महाराज, इन्हीं ने यह फर्म बनाई है। लाखों रुपया हजम कर चुके हैं। ये कलाकारों को उनकी मेहनत का आधा भी नहीं देते। अपनी यात्रा में जो बहुमूल्य उपहार लाए, उन्हें भी घर में छिपाए बैठे हैं।"

राजा ने खोज कराई, तो तेनालीराम की बात सच निकली। मंत्री को राज्य के साथ छल करने के कारण भारी जुर्माना चुकाना पड़ा।

Scanned with CamScanner



जादूनगरी रंगों

आओ चलें वहां, खिलते रंग जहां.

कितने सपने, कितनी कल्पनायें तुम्हारे मन में रोज़ उभरती होंगी... हैं न? कॅमल रंगों की सहायता से इन्हें बेरोकटोक उड़ने दो.

कॅमल के रंग पास में हों तो सपने अपने आप रंग-बिरंगे रूप लेने लगते हैं.

और कल्पना की फुलबारी खिलती चली जाती है.

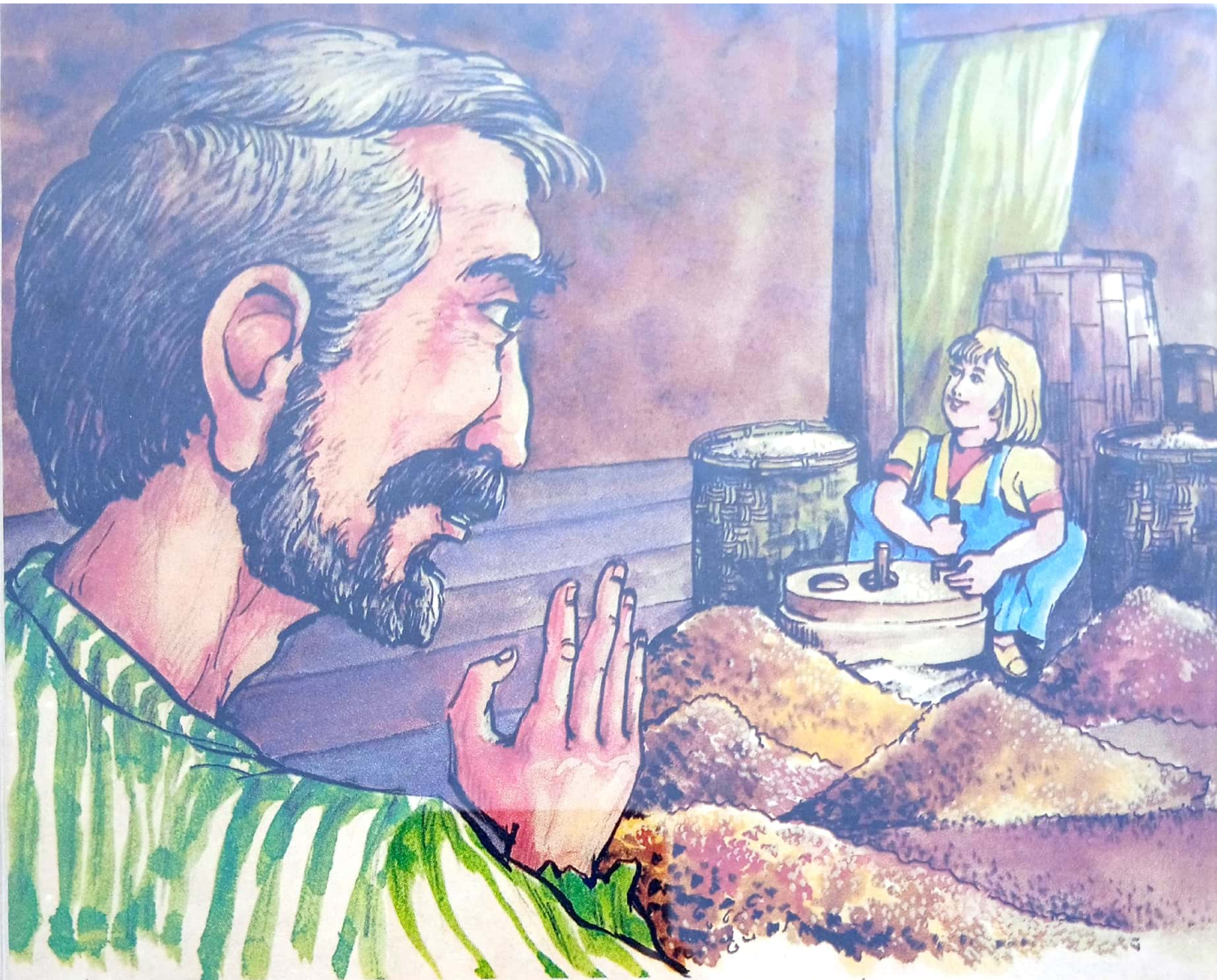
फिर कॅमल के पास रंग भी तो इतने सारे हैं कि तुम्हारे हर सपने को उसका रंग मिल जायेगा.

बस कॅमल रंग उठाओ और रंगों की जादूनगरी में खो जाओ.

कॅमल

२५ वर्षों से हर रंग में आपके संग.


की
कॅमलिन लिमिटेड
आर्ट मॅटेरियल डिविज़न
बंबई-४०० ०५९.
प्लास्टिक क्रेयॉन
केल्लास
वॉटर कलर
ब्रश पेन
कलर क्रेयॉन
पोस्टर कलर
camel STUDENTS' POSTER
Vision-CL-4



लो रूमाल

—ब्रह्मप्रकाश गुप्त

बात बहुत पुरानी है। समुद्र के किनारे एक गांव था। वहां एक अनाथ लड़की रहती थी। दुबली-पतली, कमजोर-सी। नाम था लिंडा। गांव में घर-घर जाकर काम करती थी। किसी के छोटे बच्चों को खिलाना। किसी के पशु-पक्षियों का दाना-पानी व देखभाल। यही उसका काम था। इसके बदले किसी ने फटे-पुराने कपड़े दे दिए। किसी ने घिसे-पिटे जूते-चप्पल दे दिए, वे पहन लिए। नहीं तो नंगे पैर ही घूमती फिरती थी। जो कुछ रूखा-सूखा खाने को मिल जाता, उसी से पेट भर लेती।

उसी गांव में एक धनी विधवा रहती थी—हुल्डा। उसने तरस खाकर उसे अपने यहां सोने की जगह दे रखी थी। लेकिन उसे सोना पड़ता था घर के बाहर आंगन में। गर्मियों में धान के ढेर पर, सर्दियों में गऊओं की परछी में। लेकिन लिंडा को यह बहुत भारी पड़ता था। फसल के दिनों में तो उसकी मुसीबत ही थी। पूरे-पूरे दिन खड़े होकर धान कूटने से हाथ छलनी हो जाते। अगले दिन सुबह उठकर फिर उसी में जुट जाती। उन दिनों और किसी का काम करने का तो सवाल ही नहीं था। पूरी तरह हुल्डा के सहारे पर रहती।

रात को सोने-रहने की जगह तो जरूरी थी। इसलिए उसे सब कुछ सहना पड़ता था। जितना काम करती, उसी के हिसाब से हुल्डा उसे खाने को देती।

Scanned with CamScanner

हुल्डा जितनी धनी थी, उतनी ही कंजूस भी थी। एक दिन एक बूढ़ा भिखारी उसके द्वार पर आया। उसने उसे झिड़ककर भगा दिया। धड़ाम से दरवाजा बंद कर लिया। बूढ़ा निराश होकर बाहर की ओर चल दिया। बाहर के द्वार तक पहुंचते-पहुंचते किसी दर्द भरी धुन के बोल उसके कानों में पड़े। उसने इधर-उधर झांककर देखा। ध्यान से कान लगाकर सुना कि आवाज किधर से आ रही थी। आवाज के सहारे उसकी झोंपड़ी तक जा पहुंची।

बूढ़े भिखारी को अंदर झांकते देखकर पहले तो लिंडा घबरा ही गई। फिर ध्यान से देखा, तो बाबा की आंखों में करुणा की झलक दिखाई दी। उसने साहस बटोरा। बाबा को झोंपड़ी के अंदर बुला लिया।

बाबा ने धान का भारी गट्ठर देखा। उसे धुनने की चक्की छोटी-सी थी। बाबा को लिंडा पर दया आ गई। उसने पूछा— "बिटिया, इतनी छोटी-सी चक्की में इतना सारा धान कब तक कूट पाओगी ? थककर चूर नहीं हो जाओगी ?"

—"हां, बाबा ! थककर चूर तो हो ही जाती हूं। लेकिन यह तो रोज का धंधा है। करना ही पड़ता है।"

लिंडा की दीन दशा देख-सुनकर बाबा की संवेदना जाग उठी। फिर कुछ सोचते हुए उसने अपनी झोली से मक्की के कुछ दाने निकाले। उन्हें लिंडा की ओर बढ़ाते हुए कुछ भारी से मन से कहा— "बिटिया, भूख के मारे मेरा भी बुरा हाल है। अपना काम पूर्ण करके इन्हें भी कूट दोगी, तो मुझ पर तुम्हारा बहुत उपकार होगा।"

दुखी को दुखी का ही सहारा होता है। लिंडा ने बाबा के हाथ से दाने झपट लिए। उन्हें कूट-पीसकर उनका आटा बनाया। फिर उसे भूनकर बाबा को खाने को दिया।

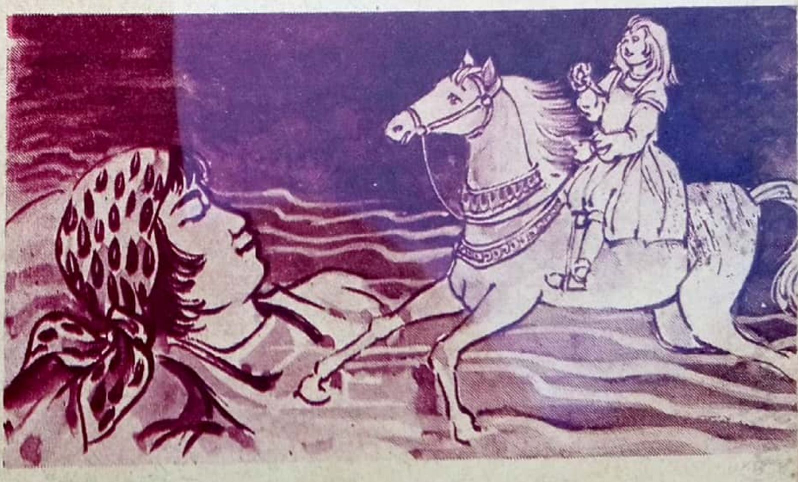
बूढ़ा बोला— "बिटिया, तुमने मुझ पर बहुत उपकार किया है।" यह कहकर उसने अपनी झोली में हाथ डाला। झोली में से एक विचित्र-सा कढ़ा हुआ रूमाल निकाला। रूमाल बहुत सुंदर था। वह रूमाल लिंडा को देते हुए बाबा ने कहा— "रात को सोते समय इसे अपने सिर पर बांध लेना। सोने से पहले किसी अच्छी बात का ध्यान करना। तुम्हें अच्छे-अच्छे सपने आएंगे। उन्हीं में से कभी कोई सपना सच भी हो जाएगा।"

लिंडा थक तो चुकी ही थी। थकी-हारी लिंडा को नींद ने भी आ घेरा था। उसने बाबा का रूमाल सिर पर बांधा और लेट गई। सोचने लगी— 'कितना अच्छा हो, उसे सारे दिन चक्की के हत्थे को न चलाना पड़े। बस, एक बार घुमाने पर वह चलता ही जाए।'

यह सोचते-सोचते उसकी आंख लग गई। सपना शुरू हो गया। लिंडा देखती है कि वह एक सुंदर काले घोड़े पर सवार बर्फ की घाटियों में उड़ान भर रही है। चारों तरफ बर्फ चांदी-सी चमक रही थी।

तभी सामने उसे एक विचित्र दृश्य दिखाई पड़ा। वह न तो महल था, न गिरजाघर, न मंदिर, न कोई साधारण पनचक्की। पनचक्की जैसी घड़घड़ाहट तो सुनाई पड़ रही थी। लेकिन चलता हुआ तो कुछ भी दिखाई नहीं पड़ रहा था। अचानक घोड़ा रुका। लिंडा झट नीचे उतरी। सामने द्वार में घुसते ही उसकी आंखें फटी की फटी रह गईं।

पनचक्की के बीचों-बीच एक बहुत बड़ी जड़ाऊ पेटी रखी थी। घड़घड़ाहट की आवाज उसी में से आ रही थी। ऊपर एक संदूक पर मक्की का बोरा रखा था। उसमें से मक्की के दाने एक धार की तरह पेटी पर गिर रहे थे। पेटी के नीचे उनका पिसा हुआ आटा बर्फ की तरह गिर रहा था। सोचने लगी— 'ऐसी विचित्र चक्की उसके पास हो तो, कितना मजा रहे ! सारी मेहनत



और मुसीबत से छुट्टी !' पनचक्की घड़घड़ाई कि लिंडा की आंख खुल गई । सपना टूट गया । कितना सुखद सपना था । कितना मजा आता, अगर यह सब सच होता । इन्हीं विचारों में खोई लिंडा सुबह उठकर अपने खलिहान की ओर चल पड़ी ।

खलिहान के अंदर घुसते ही लिंडा की आंखें चकाचौंध हो गईं । सपने वाली चमत्कारी चक्की सामने थी । एक बार तो उसे विश्वास ही नहीं हुआ । आंखें मल-मलकर देखा । उसे छूकर तसल्ली की । फिर उसमें एक मुट्ठी मक्की के दाने डाले । लो, यह क्या, चक्की के अंदर घड़घड़ाहट शुरू हो गई । कुछ ही देर में सारी की सारी मक्की का आटा पिसकर तैयार हो गया । आटे में कुछ अलग ही चमक थी । उसके बाद धान डाला, तो आनन-फानन में चावल अलग, छिलका अलग ।

लिंडा का जीवन सुखी हो गया । अब वह पहले से ज्यादा काम भी कर दिखाती । थकान का तो सवाल ही नहीं । सारे दिन वह विचित्र पनचक्की उसका काम करती रहती, लिंडा मौज-मस्ती में गाती रहती ।

लिंडा को इतनी खुश देखकर हुल्डा को आश्चर्य हुआ । उसे लगा, जरूर कोई और इसकी मदद कर रहा है । एक दिन खलिहान के एक छेद में से झांक ही लिया । अंदर का दृश्य देखकर तो उसका दिल धक से रह गया । अब उसकी समझ में आया लिंडा की मस्ती का भेद । साथ ही मन में ईर्ष्या भी जाग उठी ।

अगले दिन सुबह उठते ही उसने लिंडा को बुलाया । बड़े प्यार से अपने पास बैठाकर बोली— "लिंडा, मेरी प्यारी बच्ची ! तुम कितनी मेहनत करती हो ! चलो, आज कहीं घूमने चलते हैं।"

हुल्डा बातों में लगाकर लिंडा को घने जंगल में ले गई । वहां जाकर उसने दूर से एक झाड़ी लिंडा को दिखाई । बोली— "उस झाड़ी के फल और फूल दोनों ही स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छे हैं । फल खाने से शरीर चुस्त, तंदुरुस्त रहता है । फूलों की महक से मन में आनंद बना रहता है । तुम उस झाड़ी से वे फल-फूल बीनकर लाओ । मैं उधर दूसरी तरफ से शीशम के झाड़ तोड़कर लाती हूं ।"

हुल्डा की चालाकी से बेखबर लिंडा उछलती, कूदती उस झाड़ी की तरफ चल दी । हुल्डा ध्यान से उसे जाते देखती रही और मन ही मन खुश होती रही । जब उसने देखा कि लिंडा उस कंटीली झाड़ी में धंस चुकी है, तो वह झपटकर घोड़े पर चढ़ी और उसे सरपट घर की तरफ दौड़ा दिया ।

एक तो झाड़ी कंटीली । ऊपर से उसमें दलदल ही दलदल । अब लिंडा की समझ में आया, हुल्डा उसे यहां क्यों लाई है ? उस दलदल में से निकलने का कोई भी तो उपाय लिंडा को नहीं सूझ रहा था । होते-होते दिन भी ढल गया । अब उसे जंगली जानवरों का डर सताने लगा ।

हुल्डा घर लौटी । उसने फौरन उस चमत्कारी चक्की का भेद ढूंढ़ना शुरू कर दिया । उसने लाख कोशिश की, पर चक्की चलने का नाम ही नहीं लेती थी । पेटी का ढक्कन पूरा जोर लगाने पर भी खुल नहीं रहा था । परेशान होकर उसने एक हथौड़ा उस पर देकर मारा । हथौड़े की चोट पड़ते ही ढक्कन फटा और उसमें से आग की लपटें निकलने लगीं । देखते ही देखते सब कुछ जलकर राख हो गया । हुल्डा भी उस आग में जलकर भस्म हो गई ।

इधर लिंडा को अचानक बाबा का विचित्र रूमाल याद आया । उसने झट रूमाल सिर पर लपेटा और लगी सुख के सपनों में खोने । उन्हीं सपनों में खोए-खोए वह कब और कैसे उस कंटीली झाड़ी की दलदल से बाहर निकली, कैसे वापस घर पहुंची, उसे कुछ पता ही नहीं चला ।

आश्चर्य से आंखें मलते-मलते उसने घर का कोना-कोना छान मारा । पर हुल्डा अब उसे कहां मिलती ? खलिहान में जाकर उसने समझा कि हुल्डा को उसके लालच और चालाकी की सजा मिल चुकी थी । लिंडा ने अपनी चमत्कारी पनचक्की को सारे गांव की सेवा में लगा दिया । उसे गांव के सभी लोगों का भरपूर प्यार मिलने लगा । ●

फूल कह गए

—डा. भगवतीशरण मिश्र

मयंक परियों से घिरा हुआ था।—छोटी-बड़ी बहुत-सी परियां। आश्चर्य यह कि नानी ने परियों के बारे में जितना कुछ बताया था, उससे भी अनोखी थीं। उन परियों के सफेद वस्त्र और सुंदर पंखों की बात तो वह नानी से सुन चुका था। लेकिन उनके शरीर से निकलती मधुर गंध ने उसे हैरत में डाल दिया। ऐसी गंध का तो उसे पहले पता ही नहीं था। उसके घर के पास सेठ गोपाल जी की बहुत बड़ी फुलवारी थी। उसमें तरह-तरह के फूल खिलते थे—गुलाब, चम्पा, चमेली, हरसिंगार और रजनीगंधा के। वह रोज फुलवारी में सुबह-सुबह जाता। एक-एक फूल तोड़ता, उसकी गंध लेता। फिर वह उस फूल को चुटकियों में मसल देता। लेकिन ऐसी गंध तो किसी फूल में नहीं थी, जो इन परियों के शरीर से निकल रही थी।

उसने किसी परी से पूछना चाहा— ऐसी मोहक गंध उनके शरीर से क्यों निकलती है ? पर वह किस परी से पूछे ? छोटी परियां तो तितलियों की तरह चारों ओर फुदक रही थीं। वे तो पकड़ में आने से रहीं। बड़ी परियां अवश्य उसके चारों तरफ खड़ी थीं। सब उसी तरह श्वेत परिधान में लिपटीं, पीठ पर इंद्रधनुषी पंख। सोने की तरह दमकता रूप।

छोटी परियों को वह रंग-बिरंगी तितलियों की तरह कमरे में ऊपर-नीचे उड़ते देखता रहा। छत से लेकर दीवार के कोनों तक वे अपनी उड़ान में मस्त थीं। बड़ी परियां न जाने क्यों उसके बिस्तर के पास से हट नहीं रही थीं। किंतु एक बात उसे खल रही थी। उनका चुप रहना। 'क्या वे गूंगी हैं ?'—उसने सोचा। पर ऐसा कैसे हो सकता था ? छोटी परियां तो उड़ते-उड़ते आपस में बातें भी करती जा रही थीं। यह बात अलग थी कि वे इतना धीरे बोल रही थीं, उससे इतनी दूर भी थीं कि उनकी कोई बात उसके पल्ले नहीं पड़ती थी।



उसने पास खड़ी एक परी से कहा—"आप सब बोलती क्यों नहीं, क्या आप गूंगी हैं ?"

"नहीं तो !"—परी ने कहा। सुनकर मयंक को लगा, उसके कानों के पास किसी ने चांदी की घंटी बजा दी। ऐसी कोमल, मधुर आवाज उसने कभी सुनी ही नहीं थी।

"आप बोलती हैं, तो यहां चुप क्यों हैं ?"—उसने पूछा।

"क्यों, तुम्हें हमसे कुछ जानना है क्या ?"—दूसरी परी ने कहा।

"जानना तो अवश्य है।"—उसने उत्साह में भरकर कहा।

"क्या जानना चाहते हो ?"—तीसरी परी मीठी आवाज में बोली।

—"मैं जानना चाहता हूं कि आपके शरीर से यह जो गंध निकल रही है, उसका भेद क्या है ?"

"हम तुम्हें उसका भेद नहीं बताएंगी।"—पहली परी ने उत्तर दिया।

"क्यों ?"—उसने आश्चर्य से पूछा—"मैंने तो पढ़ा है कि परियां कठोर दिल की नहीं होतीं। कम से कम वे बच्चों का मन नहीं तोड़तीं। और आप इंकार कर रही हैं कि आप इस गंध का भेद नहीं बताएंगी।"

"ठीक ही कह रही हैं।"—पहली परी ही बोली। मयंक को लगा, वही सब परियों की नेता है।

Scanned with CamScanner

"क्योंकि हम तुमसे रूठी हुई हैं।"—सभी परियों ने एक साथ कहा।

'हम तुमसे रूठी हुई हैं. . . हम तुमसे रूठी हुई हैं. . .'—यह आवाज देर तक कमरे में गूंजती रही।

मयंक बहुत उदास हो गया। परियां रूठ जाएं, यह तो अच्छी बात नहीं है। उसने सुना था, खुश होने पर परियां बच्चों के लिए क्या-क्या नहीं करतीं ? उन्हें अच्छे-अच्छे खिलौने देती हैं, उपहार देती हैं, कहानियां सुनाती हैं। कभी कभी उन्हें अपने पंखों पर सवार करा कर, आकाश की सैर भी कराती हैं। वह तो बहुत प्रसन्न हुआ था, इतनी सारी परियों को देखकर। लेकिन वे तो बात ही नहीं करतीं।

"आप मुझसे क्यों रूठी हुई हैं ?"—उसने रुंआसा होकर पूछा।

"क्योंकि तुम गंध के दुश्मन हो।"—पहली परी ने कहा।

—"हां, तुम गंध के दुश्मन हो. . .।"—बाकी सभी परियों ने उसके स्वर में स्वर मिलाया।

"कैसे ?"—मयंक ने हताश होकर पूछा।

—"तुम्हें पता है, गंध कहां से आती है ?"

—"हां।"

—"कहां से ?"

"फूलों से।"—मयंक ने झट-से उत्तर दिया।

"और तुम फूलों के दुश्मन हो, इसलिए गंध के दुश्मन हो।"—पहली परी ने साफ-साफ कहा।

"मैं फूलों का दुश्मन नहीं, मैं तो उन्हें प्यार करता हूं।"—मयंक ने तर्क दिया।

"नहीं, तुम फूलों से प्यार नहीं करते।"—परी बोली—"तुम चोरी-छिपे फुलवारी में घुसते हो। फूलों को उनकी टहनियों से तोड़ते हो। फिर उन्हें मसलकर धूल में मिला देते हो। तुमसे बड़ा फूलों का दुश्मन कौन होगा ? और तुम चोर भी हो। गोपाल जी की फुलवारी में चोरी-चोरी घुसते हो—फूलों को मसलने के लिए।"

मयंक चुप। बातें तो वे ठीक ही कह रही थीं। इनका क्या जवाब था उसके पास ? अब किस मुंह से वह परियों से उनके शरीर से निकलती गंध का भेद पूछे ? उसका मुंह लटक गया।

"उदास हो गए ?"—चांदी की घंटी-जैसी आवाज फिर सुनाई दी। पहली परी ने बड़े प्यार से पूछा था।

"हमारा काम रुलाना नहीं, बल्कि रोतों को भी हंसाना है। हम परी हैं। पर तुमने जिन फूलों को मसला, वे हमारे पास फरियाद लेकर पहुंचे, तो हमें यहां आना पड़ा।"—दूसरी परी ने समझाया।

"क्या आप मुझे माफ कर देंगी ?"—मयंक बोला।

"हां।"—पहली परी ने कहा—"पर तुम्हें यह काम कल से ही रोकना होगा। अपने किए का प्रायश्चित भी करना पड़ेगा।"

—"मैंने शपथ ली। अब न फूलों को तोड़ूंगा, न मसलूंगा।"

"बिलकुल ठीक। फूल टहनी पर ही अच्छा लगता है, जैसे मां की गोद में बच्चा।"—पहली परी ने कहा।

"तो अब मेरे शरीर से भी वैसी ही गंध निकलने लगेगी, जैसी परियों के शरीर से निकलती है ?"—मयंक ने चहककर पूछा।

—"ठहरो, अभी तो तुमने प्रायश्चित वाली बात सुनी नहीं।"

"क्या करना होगा ? जल्दी बताइए।"—मयंक बोला।

"तुमने जितने फूल मसले हैं, उससे दूने खिलाने होंगे।"—पहली परी ने कहा —"फूल खिलें, तो उन्हीं के बीच घूमो, बैठो, पढ़ो। फिर तुम्हारे शरीर से भी फूलों की गंध आने लगेगी।"

फिर देखते ही देखते सब परियां अपने पंख फैलाकर दरवाजे से बाहर चली गईं। मयंक की नींद भी गायब हो गई। सोच रहा था, सुबह होते ही लान में फूलों के पौधे लगाऊंगा। ●

Scanned with CamScanner

नंदन ज्ञान पहेली

१००० रु. पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, उस पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक को होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, **कहीं भी दायर नहीं किया** जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—
  'नंदन' ज्ञान-पहेली; हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१।
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

ऊपर से नीचे

१. सब तरफ आग— हुई थी। (फैली/जली)
२. राजा समझदार था, उसने हर बात— ली। (मान/जान)
६. वे बहुत कष्ट— रहे हैं। (पा/दे)
१०. छुट्टियां बिताकर बच्चे घर लौट—। (आए/गए)

बाएं से दाएं

३. कब से पुकार रहा हूं, जल्दी से— लाओ। (चीनी/पानी)
४. अभी लो, सब— देता हूं। (बना/बता)
५. मुझे भी— में रख लीजिए। (सेवा/सेना)
७. **पश्चिम भारत की एक नदी।**
८. हां, ठीक समझे— की ही बात है (पेड़/पेट)।
९. इन्हें— की जिद न करो। (खाने/लेने)
११. कुएं का जल— में समा गया। (जल/तल)
१२ **पीले रंग का रत्न।**

--------------- काटिए -----

नंदन ज्ञान-पहेली : २४६

नाम ________________

आयु ______ पता ________________

____



नं. ज्ञा. प: २४६

"बच्चों की पढ़ाई या सेहत का मामला हो तो मैं समझौता कभी नहीं करती..."

"इसीलिए मैं उन्हें नियमित रूप से झंडु स्पेशल च्यवनप्राश देती हूँ. सचमुच यह स्पेशल है. शुद्ध हरा आँवला, पीपली, वंशसालोचन, कुंडकोल, लौंग, जावंत्री, इलायची और अकलकरा जैसी जड़ी-बूटियाँ. सब को शुद्ध देसी घी में बनाया गया है. मेरा बाज़ार का आना-जाना तो रोज़ ही लगा रहता है, मैं जानती हूँ कि अच्छी और उम्दा दर्जे की चीज़ें हमेशा कुछ महँगी ही मिलती हैं. फिर, जब क्वालिटी की बात हो तो हर कोई झंडु को जानता है और उस पर भरोसा करता है.

मैं, अपने बच्चों को झंडु स्पेशल च्यवनप्राश बारहों महीने देती हूँ. इसीलिए उनमें छोटी-मोटी बीमारियों का मुक़ाबला करने की शक्ति आ गई है. ख़ास तौर से खाँसी और ज़ुकाम.

हाँ, थोड़ी सी परेशानी मुझे ज़रूर है. इसमें मिले तत्त्व इतने ताज़ा और शुद्ध हैं कि इसका स्वाद भी कमाल है. बच्चों का बस चले तो वे इसे दिनभर खाते रहें. हर दो-चार दिन बाद मुझे बोतल कहीं दूसरी जगह छिपाकर रखनी पड़ती है. क़ीमती है न!"



अब १ किलो के आकर्षक पॉलीजार में भी उपलब्ध.



क़ीमती ही सही **झंडु स्पेशल च्यवनप्राश.**

असली च्यवनप्राश

CLARION/B/ZP/17/213 HIN-R

बातें रंग-बिरंगी

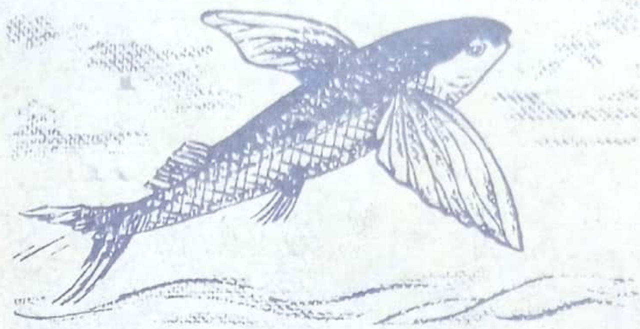
बौने पौधे—आज की दुनिया में बौने पौधों या बोनसाई का उपयोग काफी बढ़ गया है। इन्हें घरों और विशाल भवनों की सजावट के लिए उगाया जाता है। इन पौधों पर आने वाले फलों का आकार भी छोटा होता है। पौधों को विशेष प्रकार से काट-छांटकर, शाखाओं को तारों से बांध कर बौना बनाया जाता है। बोनसाई बनाने के लिए नर्सरी से गमले में लगे छोटे पौधे लिए जाते हैं। उनकी काट-छांट करके हर वर्ष एक बर्तन से दूसरे बर्तन में लगाया जाता है। रोपने की इस क्रिया में पौधों की जड़ों की कटाई-छटाई भी की जाती है। पांच वर्ष की अवधि में पौधा पूर्ण विकसित हो जाता है, लेकिन उसका आकार बहुत छोटा रहता है।

आश्चर्य की बात है कि बरगद, पीपल व आम आदि विशालकाय वृक्षों का बोनसाई रूप केवल दो-तीन फुट ही होता है। इन बौने पौधों में बड़े वृक्षों के सभी गुण होते हैं। इन्हें विकसित करने में तीन से दस वर्ष तक का समय लगता है। एक बोनसाई सौ वर्ष तक जीवित रह सकता है।

जापान में बोनसाई का व्यापार होता है।



उड़ने वाली मछली—समुद्रों में उड़ने वाली मछलियां भी होती हैं। ये मछलियां पहले तो पानी पर तेजी से दौड़ती हैं, फिर अपने आगे के फिंस फैलाकर हवा में उड़ने लगती हैं। कुछ मछलियां तो हवा में ४०० मीटर की दूरी तक उड़ान भर लेती हैं।



उड़ने वाली मछलियों की लम्बाई पांच सेंटीमीटर से आधा मीटर तक होती हैं। ये अपने आगे के फिंस से उड़ान भरती हैं। उड़ान के लिए ये पहले हवाई जहाज की तरह दौड़ती हैं, फिर उड़ान भरती हैं। ये मछलियां काफी ऊंचाई तक भी उड़ान भर लेती हैं। कभी-कभी तो उड़ान भरकर ये पानी के जहाजों के डैक के ऊपर पहुंच जाती हैं।

उड़ने वाली मछलियों की संख्या बहुत ही कम है। इनको उड़ते देखकर लोग आश्चर्य में पड़ जाते हैं!

आंसू—दुःख, मार-पीट, बहुत जोर से हंसने या भावुकता के कारण आंखों में आंसू आ जाते हैं। हमारी दोनों आंखों के बाहरी कोनों के भीतरी भाग में एक ग्रंथि होती है। उसे अश्रु ग्रंथि कहते हैं। उस ग्रंथि से पतली-पतली नलिकाएं पलकों तक जाती हैं। उसमें एक तरल पदार्थ होता है, जो पलक झपकने की क्रिया से आंखों को गीली रखता है। रोते समय उस ग्रंथि के दबने से तरल पदार्थ नलिकाओं से होता हुआ, आंसुओं के रूप में आंखों से बाहर आने लगता है। इसी प्रकार हंसने की क्रिया में अश्रुग्रंथियां दब जाती हैं और तरल पदार्थ आंखों से बाहर आ जाता है।

प्याज काटते समय भी आंखों में आंसू आ जाते हैं। प्याज से एक पदार्थ निकलता है, जिसकी वाष्प आंखों में जलन पैदा करती है। उस जलन को समाप्त करने के लिए अश्रु ग्रंथि क्रियाशील होकर तरल पदार्थ को आंखों में भेजती है, जिससे जलन पैदा करने वाला पदार्थ आंखों से बाहर आ जाए। सिगरेट का धुआं आंखों में लगने पर भी यही क्रिया होती है। इस प्रकार से आंसू आना आंखों की सुरक्षा क्रिया है। ●

—संजीव गर्ग

तितर-बितर

— शिशिर विक्रांत

परसी को किसी का लाड़-प्यार नहीं मिला। लोग उसे अभागा कहते। परंतु था वह ईमानदार, नेकनीयत और भलामानुस। बचपन में मां-बाप गुजर गए। बड़ा हुआ, तो भाई ने भी घर से निकाल दिया। लेकिन परसी ने हिम्मत नहीं हारी। मेहनत-मजदूरी करके गुजारा करने लगा। बहुत पुरानी एक जर्जर साइकिल, दो-चार कपड़े तथा खाना बनाने के टूटे-फूटे बर्तन— बस यही उसकी संपत्ति थी।

कुछ समय बाद परसी ने दूध बेचकर जीवन -निर्वाह करने का निश्चय किया। किसी दयालु सज्जन की मदद से दूध का एक बर्तन लिया और अपना धंधा शुरू कर दिया। पहले तो अपनी पुरानी साइकिल से तीन-चार मील दूर के गांव जाता और दो भैंसों का दूध ला,घर-घर जाकर बेचता। ईमानदारी से काम करने से ग्राहक बढ़ने लगे, तो चार-पांच भैंसों का दूध लाने लगा। इस तरह धीरे-धीरे उसका काम बढ़ने लगा।

दूध बेचते-बेचते परसी को लगभग सात साल हो गए। उसकी ईमानदारी और सद्व्यवहार ने लोगों के हृदय में जगह बना ली। दुर्दिनों का चक्र समाप्त हुआ और परसी की ईमानदारी ने रंग लाना शुरू किया। उसके अहाते में अब चालीस-पचास भैंसों का दूध पहुंचने लगा था। काम को ठीक ढंग से संभाल के लिए तीन-चार नौकर रख लिए। कुछ समय बाद गांव से दूध लाने के लिए एक कार भी खरीद ली। समाज में सम्मान बढ़ा, तो वह परसी से परसामल कहलाने लगे।

परसुराम के पास अब पैसे की कमी न थी। उन्होंने शहर के बीचोंबीच एक बड़ी हवेली बना ली थी। एक धनी परिवार की कन्या से विवाह हो गया था। कुछ समय बाद पुत्र भी हुआ। अब समाज में उनकी इज्जत थी। शहर के रईसों में उठना-बैठना शुरू हो गया।

परसुराम अब अपने पिछले दुर्दिनों को पूरी तरह भूल चुके थे। पुरानी जर्जर साइकिल और टूटा हुआ दूध का बर्तन अब भी एक कोने में पड़े, सेठ परसुराम को याद दिलाना चाहते थे कि उस बढ़े हुए वैभव में उनका भी कुछ हाथ है, परंतु सेठ परसुराम के पास उधर ध्यान देने का अवकाश ही कहां था।

एक बार की बात है। पितर पक्ष की अमावस्या के दिन दूध वाले की दूकान पर ग्राहकों की लम्बी कतार लगी थी। दूध न चढ़ाया गया, तो पितरों की नाराजगी का डर था। इसलिए लोग सुबह से इंतजार में थे। परसुराम चाहे कुछ भी हो, समय की पाबंदी को महत्व देते थे। किसी कारणवश जब गांव में ही उन्हें आधे घंटे की देरी हो गई, तो उन्होंने ड्राइवर को तेजी से चलने को कहा। कार हवा से बात करती आगे बढ़ गई। रास्ते में एक बरसाती पानी के गड्ढे के पास वह रुकी, फिर दस-पंद्रह मिनट के बाद शहर में आ पहुंची।

परसुराम जल्दी में दूध छानना भूल गए, किंतु बुलाकी हलवाई तो बिना छाने दूध लेना धर्म विरुद्ध समझता था। दूध छानते हुए उसमें से एक छोटी-सी मेढ़की निकली। अपनी मूक वाणी में वह कह रही थी— परसुराम ने दूध में पानी मिलाया है और वह भी गंदे गड्ढे का। कुएं या दरिया के पानी से पितर संतुष्ट रह सकते थे, परंतु गड्ढे के पानी से नहीं। सारी भीड़ बुरा-भला कहती, दुखी होकर तितर-बितर हो गई।

धीरे-धीरे हालत यह हुई कि पानी की कमाई पानी की भांति बहने लगी। आए दिन जुर्माना होने लगा। दुर्दिनों का ऐसा झोंका आया कि जुर्माना देने तथा हाकिमों को खुश करने के फेर में परसुराम का वैभव नष्ट होने लगा। परसुराम से ईर्ष्या रखने वाले दुकानदारों की भी कमी न थी। उन्हें भी अपनी चाल चलने का मौका मिल गया। कार बिकी, मकान गिरवी रखा, घर के जेवर बिक गए, फिर भी जुर्मानों का अंत न आया। आखिर में तो सजा भी हो गई।

छह महीने जेल में रहकर परसुराम घर लौटे, तो नाते-रिश्तेदार, दोस्त कोई मिलने नहीं आया। पत्नी भी मायके चली गई थी। परसी फिर उसी स्थान पर आ गया था, जहां से उसने चलना प्रारंभ किया था।●

Scanned with CamScanner

चीटू-नीटू



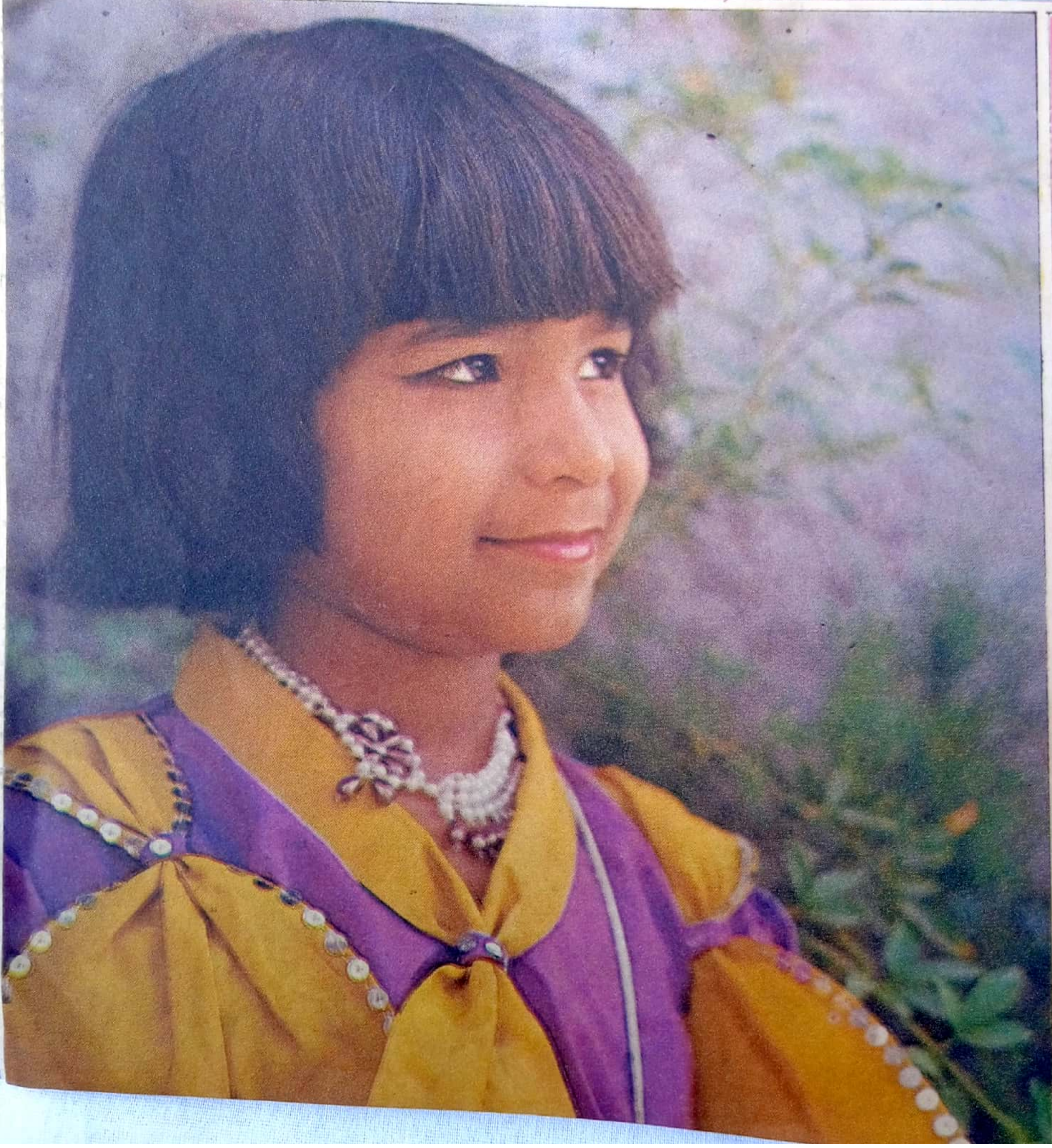
Scanned with CamScanner

पुरस्कृत चित्र

राजलक्ष्मी, द्वारा चंद्रबती बारी, पो. अनलाडुभा (रायरंगपुर), जि.- मयूरभंज (उड़ीसा)

इनके चित्र भी प्रशंसनीय रहे— कु. रोली सिन्हा, लखनऊ; रोहिणी गुप्ता, उदयपुर; सोनाली अग्रवाल, नई दिल्ली; संजीव मुंगी, भोपाल; मनीषकुमार माथुर, सांभर लेक





शीर्षक बताइए

इस चित्र को ध्यान से देखिए। इस चित्र के अनेक शीर्षक हो सकते हैं। आप भी कोई सुंदर-सा शीर्षक सोचिए। उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १० सितम्बर '८९ तक **शीर्षक बताइए, 'नंदन' मासिक, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-१** के पते पर भेज दीजिए। चुने हुए शीर्षक पर पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम : नवम्बर '८९

चित्र : नसीम

Scanned with CamScanner



प्रवीर फैजल रिजवी मोहिन्दर लिलि

नंदन ज्ञान-पहेली: २४७ परिणाम



हजारों पाठकों ने ज्ञान-पहेली में भाग लिया । सर्वशुद्ध हल उनतीस प्रतियोगियों के रहे । प्रत्येक को पैंतीस रुपए दिए जा रहे हैं ।

१. सुशांतकुमार, सहरसा; २. अरु राय, नई दिल्ली; ३. कु. जूलिया परवीन, जौनपुर; ४. आनंदकुमार, जमशेदपुर; ५. मेधा चंद्रवंशी, इंदौर; ६. प्रेमेंद्रनाथ श्रीवास्तव, पूर्णिया; ७. आलोककुमार गुप्ता, बस्ती; ८. अजयपाल सिंह, दिल्ली; ९. शिवकुमार तेपरी, मुजफ्फरपुर; १०. कुंजेशकुमार, हाजीपुर; ११. राहुल भदौरिया, भिंड; १२. संजीवकुमार गोयल, रामपुर (हि. प्र.); १३. राहुल सिंह, पटना; १४. संजयकुमार सिंह, समस्तीपुर; १५. विक्रम पाहुजा, दिल्ली; १६. ऋतुपर्ण दत्ता, भोपाल; १७. शिवप्रिय, गोपालगंज; १८. प्रीति मिश्र, इलाहाबाद; १९. अमिताभ आनंद, मुजफ्फरपुर; २०. कु. रेणु देवी, हरदोई; २१. विवेक पांडेय गोरमी, भिंड; २२. प्रभाकर कुमार, गया; २३. सुलभ अग्रवाल, मेरठ; २४. विजयकुमार, लहेरिया सराय; २५. विनीत खरे, इंदौर; २६. अंशु शर्मा, चम्बा (हि. प्र.), २७. मनोजकुमार गुप्ता, औरंगाबाद; २८. सुशांत गुप्ता, लखनऊ; २९. नीरजकुमार बोकारो, धनबाद ।

आगामी अंक

रोमांचकारी अनकही कथाओं से भरपूर अक्तूबर अंक

- आग उगलने वाले ड्रेगन ने सूंघकर कैसे खजाना खोजा और फिर किए क्या-क्या चमत्कार— पढ़िए विश्व की महान कृतियों में, द लास्ट ऑफ द ड्रेगन' की संक्षिप्त कथा
- अश्विनीकुमारों ने पानी में औषधियां डालकर ऋषि को नहलाया और चमत्कार हो गया । आठ पृष्ठों की रंगीन चित्र कथा— महर्षि च्यवन
- स्वर्ण जयंती मंदिर की— दिल्ली का लक्ष्मीनारायण मंदिर (बिरला मंदिर) पिछले पचास वर्षों से धार्मिक श्रद्धा का केन्द्र और देश-विदेश के पर्यटकों के लिए दर्शनीय स्थल रहा है । दो पृष्ठों में मंदिर की सतरंगी झांकी
- राम कथा के अछूते प्रसंग पर एक कहानी और साथ में कहानियों-कविताओं तथा ज्ञानवर्धक और रोचक सामग्री का महकता गुलदस्ता आपके लिए—

अपनी प्रति आज ही सुरक्षित करा लीजिए

Scanned with CamScanner

नई पुस्तकें

५२ बाल कविताएं— कवि : रमेश कौशिक; प्रकाशक : ब्रजवासी प्रिंटर्स (प्रा.) लि.; ई-४६/११, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II, नई दिल्ली-२०; मूल्य : चालीस रु. ।

नंदन के पाठक रमेश कौशिक से परिचित हैं । कौशिक जी की अनेक कविताएं उन्होंने पढ़ी हैं, पसंद भी की हैं । बाल-साहित्य में सहज-सरल और सफल कवि के रूप में उनकी पहचान बनी हुई है ।

किसी कवि की तरह-तरह की कविताएं मन भरकर पढ़ना चाहें, तो कैसे पढ़ें ! यह पुस्तक इस कमी को पूरा करती है । आंख, नाक, हाथ, टेलीविजन, घड़ी, अखबार, मेरे पापा, मेरा घर— इन सब पर कविताएं हैं । इनके अलावा कुत्ता, खरगोश, बगुला, मच्छर, पेड़, सूरज, सागर, नदियां आदि पर भी रोचक कविताएं पुस्तक में दी गई हैं ।

इन कविताओं को पढ कर और गुनगुनाया जा सकता है— जैसे

एक ततैया पीला होता
एक ततैया लाल,
डंक एक-सा है दोनों का
कर देता बेहाल ।

अच्छे कागज पर, बढ़िया छपी यह पुस्तक बच्चों व अध्यापकों के लिए उपयोगी है ।

— तानसेन : लेखिका : बागेश्री चक्रधर; प्रकाशक- ब्रजवासी प्रिंटर्स (प्रा.) लि., नई दिल्ली २०; मूल्य : दस रु.

संगीतकार तानसेन का नाम सभी ने सुना है । पुस्तक में तानसेन की जीवनी है । पर जैसी जीवनियां हम पढ़ते आए हैं, वैसी नहीं । घटनाओं को छोटे-छोटे वाक्यों में पिरो दिया है लेखिका ने । एक के बाद एक कहानियां पढ़ते जाइए । पढ़ना शुरू कर दें, तो छोड़ ही नहीं सकते ।

अनेक रंग-बिरंगे चित्र भी हैं । छपाई अच्छी है ।

नन्हे गीत : मूल्य आठ रु.; मन के धनी बहादुर लाल; मूल्य : दस रु., दोनों के कवि भगवती प्रसाद द्विवेदी । दोनों के प्रकाशक-शारदा सदन, ९६ जीरो रोड, इलाहाबाद-३

नन्हे गीत में इक्कीस शिशु गीत हैं । चार-चार लाइनों के ये गीत-बालक जो देखता है, उन विषयों पर हैं । पुस्तक में अनेक चित्र हैं, टाइप मोटा है । नन्हे-मुन्नों के लिए पुस्तक उपयोगी है ।

'मन के धनी बहादुर लाल'— लालबहादुर शास्त्री की जीवन गाथा है । ५६ पृष्ठों की पुस्तक में शास्त्रीजी का पूरा जीवन सरल कविता में दिया गया है । उनके कुछ फोटो भी । बच्चे दिलचस्पी से इसे पढ़ेंगे ।

दिनोंदिन बढ़ती महंगाई के कारण मुद्रण खर्च में काफी बढ़ोत्तरी हो गई है । इसलिए हमें विवश होकर 'नंदन' की कीमत में वृद्धि करनी पड़ रही है । अक्तूबर १९८९ अंक से नंदन की एक प्रति का मूल्य ४ रुपए होगा ।



पत्र मिला

□ जुलाई अंक मुझे और मेरे परिवार वालों को बहुत अच्छा लगा। 'चांदी नहीं सोना', 'छोटा खोटा', 'पीठ पर', 'माला का जादू' कहानियां विशेष पसंद आईं।

—मुकेशकुमार व्यास, मद्रास

□ 'नंदन' दादा-दादियों की तरह ही कहानियां कह कर हमें पुराने समय की याद दिलाता है। इसकी प्रतियोगिताएं पाठकों में उत्साह का संचार करती हैं।

—अभयशंकर आर्य, बरौनी रिफाइनरी, बेगुसराय

□ परी-कथा विशेषांक सुंदर सरोवर की भांति लगा, जिसमें कहानियों तथा स्तम्भों के रूप में हर रंग के पुष्प खिले हुए थे। 'उड़ें हवा में हम' वायुयानों का सचित्र परिचय बहुत अच्छा लगा। **—अरुणा शर्मा, वाराणसी**

□ 'परी कथाओं का जादूगर' चित्र-कथा सचमुच जादुई थी। पूरा अंक ही संजोकर रखने योग्य था। 'मोम का महल', 'पानी गायब', 'परी मां' तथा 'नदी के दीप' कहानियों में ताजगी थी।

—सुनील राजनायक, काकरोली (हरि.)

□ सचमुच 'नंदन' के बंधन से छूटना मुश्किल है। परी-कथा अंक पढ़कर, तो यह बात और भी पक्की हो गई। सभी कहानियां दिलचस्प थीं। कविताओं और चित्र-कथा ने मन मोह लिया। **—सुमन आर्य, नांगलोई, दिल्ली**

□ जुलाई अंक में किसी एक कहानी की प्रशंसा करके मैं अन्य रचनाओं का महत्व नहीं घटाना चाहता। बच्चों के लिए यह सम्पूर्ण पत्रिका है। 'नंदन' जैसे साथी को मैं कभी नहीं छोड़ सकता। **—योगेशकुमार धोना, कलकत्ता**

□ अपने सम्पादकीय में आपने मन को छूने वाली बात कही। अब मैं भी छोटे-से छोटे काम को पूरी लगन से करने लगा हूं। **—चंदनकुमार मिश्र, नरकटियागंज**

□ मेरी कामना है 'नंदन' आसमान को छू ले। मैं कई वर्षों से इसका पाठक हूं। सभी रचनाओं से कुछ न कुछ सीखने की प्रेरणा मिलती है। **—बॉबी मिगलानी, जींद**

□ भारत में रहो, चाहे लंदन में, विचरो 'नंदन' के उपवन में

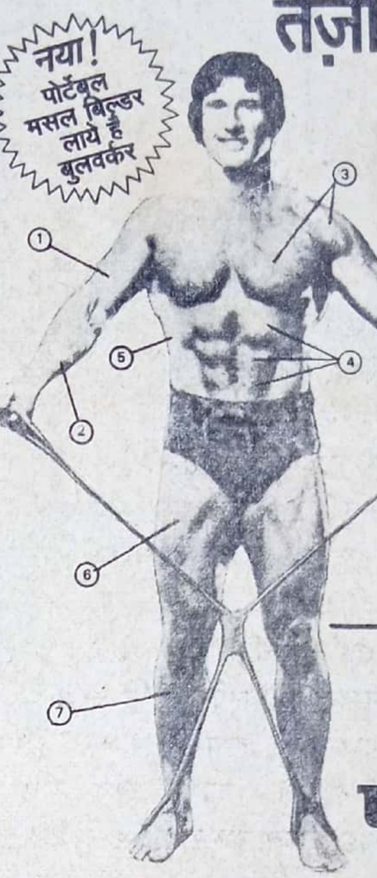
—उमेशकुमार यादव, मोहम्मदाबाद (उ. प्र.)

□ इस अंक में कहानियां बिलकुल नई तरह की थीं। 'चटपट', 'तेनालीराम' तथा 'चीटू-नीटू' हमेशा की तरह मजेदार थे। **—नरेंद्रकुमार नीखरा, शिवपुरी (म. प्र.)**

□ 'बातें रंग-बिरंगी' लेखमाला बहुत अच्छी चल रही है। समाचार के पृष्ठ भी बढ़ने चाहिएं। **—राजेंद्र यादव, बांदा**

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे—जुगनू, अमृतसर; राजेश गुप्ता, लालसोर (राज.); अर्चना कुलमी, उज्जैन।

तेज़ी-से मज़बूत मांसपेशियां बनाइए



पॉवर फ्लेक्स से इन मांपसपेशी वर्गोंमें होनेवाला सुधार।

1 बाह का ऊपरी हिस्सा ताकतवर और मजबूत
2. कलाई ठोस और मजबूत
3 सीना ताकतवर
4 पेट का सामने का भाग तनी हुई सुडौल मासपेशियों की दीवाल
5 पेट का बगल वाला भाग पतली कमर
6 जाघों के सामने का भाग एथलीटों जैसा
7 पिडलिया सुडौल और आकर्षक

बुलवर्कर का

पावर फ्लेक्स

अभी तक पेश किये गये वज़न में हल्के सभी मसल-बिल्डरों में एक बड़ा ही मशहूर नाम! **पावर फ्लेक्स** आसान, असरदार और मौज-मज़े से मांसपेशियां मज़बूत बनाने की ज़रूरत को पूरा करता है. जोरदार ढंग से दबाने और गतिशील खींचने की क्रिया से अपनी मांसपेशियों में भरपूर शक्ति भरिए, उन्हें ताकत और आकार में बढ़ाइए रोजाना बस कुछ मिनिटों की कसरत काफी है

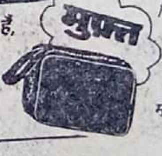
नतीजों की गारंटी वर्ना पैसे वापस.—कोई सवाल-जवाब नहीं.

अपने घर के एकान्त माहौल में नतीज़े खुद-ब-खुद देख लीजिए. अगर १४ दिनों में आप पावर फ्लेक्स द्वारा मिले ज़्यादा ताकतवर, ज्यादा मर्दाने और एथलीटों जैसे शरीर से संतुष्ट न हों तो पूरी सामग्री वापस कर दीजिए हम आपके पैसे वापस कर देंगे (प्रेषण-खर्च कटाकर) बिना सवाल-जवाब के

ABHA

एक ख़ास ऑफर!

पावर फ्लेक्स के साथ हम दे रहे हैं, एक खास उत्कृष्ट क्वालिटी का केस, ३० रु. की कीमत का. मुफ्त!



अगर आपको किसी वजह से कूपन न मिल पाये तो आप नया पावर फ्लेक्स वी.पी.पी. द्वारा आर्डर देकर 160./रु. में इस पते पर मंगा सकते हैं: बुलवर्कर, मेहता महल १५ मैथ्यू रोड, बम्बई-४०० ००४

फैसला कीजिए!

यह कूपन आज ही भेजिए

बुलवर्कर प्रा. लि. मेहता महल, 15 मैथ्यू रोड, बंबई-400 004. PF-51

कृपया मुझे १४ दिनों की मुफ़्त आजमाइश के लिए नया पावर फ्लेक्स तुरंत भेज दीजिए. अगर मै इससे पूर्णतया संतुष्ट न हुआ तो आजमाइशी अवधि के भीतर पैसा (डाक व प्रेषण खर्च छोड़कर) वापस पाने के लिए सारी सामग्री लौटा दूंगा. ND-135

कृपया सही खाने ☑ पर निशान लगाइए

□ रजि. पोस्ट पार्सल से भेजे, मै 160/-रुपयों का ड्राफ्ट/भा. पोस्टल ऑर्डर/मनी ऑर्डर नं. तारीख .... भेज रहा हूं. (देय बुलवर्कर प्रा. लि. के नाम)

□ वी.पी.पी. से भेजे. मै डाकिए को डिलीवरी मिलने पर 160/-रु. अदा करने का वचन देता हूं.

नाम: ....

पता: ....

....

पिन: .... हस्ताक्षर ....

मांसपेशियों को शक्तिशाली बनाना शुरू कर दीजिए.

पावर फ्लेक्स के साथ आपको मिले एक सचित्र कोर्स ताकि आप इसी वक्त शुरूआत कर सकें.

जल्दी कीजिए—यह योजना कुछ समय के लिए ही है.



लाठी की करामात

—सूर्य मंगल

किसी गांव में एक कुम्हार रहता था। उसका नाम था—लछमन। स्वभाव से सरल, बुद्धिमान व साहसी था वह। दिन भर मिट्टी के बरतन बनाता था। फिर गांव के पास लगने वाली हाट में बेच आता था। इस काम में पत्नी भी उसकी मदद करती थी। उसका एक लड़का भी था।

लछमन को लाठी चलाने का शौक था, इसीलिए वह लाठी सदा पास रखता था।

दशहरे का त्योहार था। प्रतिवर्ष की तरह इस बार भी गांव से कुछ दूर मेला लगा था। लछमन ने मेले में जाने की सोची।

उसने मेले के लिए बरतन तैयार किए थे। उन्हें लेकर वह बेचने चला गया। देखते-देखते लछमन के सारे बरतन बिक गए। दाम भी अच्छे मिले। बरतन बेचकर वह मेले में घूमा-टहला। घर-गृहस्थी का आवश्यक सामान खरीदा। बच्चे के लिए मिठाइयां और खिलौने भी खरीदे। शाम होने पर वह घर लौट पड़ा।

रास्ते में एक बाग पड़ता था। उसे वहां कुछ आदमी दिखाई पड़े। वह समझ गया—ये ठग हैं। तभी उसे लाठी का ध्यान आया। आज लाठी लाना भूल गया था। मन ही मन पछताने लगा। फिर भी उसने हिम्मत बांधी। वह आगे चल पड़ा। वे आदमी संख्या में तीन थे। उन्होंने उसे घेर लिया। वह फुर्ती से एक तरफ हो गया।

एक ठग जो सरदार-सा लग रहा था, बोला—"तुम मेले से आ रहे हो। तुम्हारे पास कुछ न कुछ माल जरूर है। जो कुछ भी है, निकाल दो।" कहकर उसने लछमन को लाठी से डराया। लछमन सोचने लगा—'काश! आज लाठी होती, तो इन्हें मजा चखाता।'

कुछ सोचकर लछमन बोला—"ठहरो, मेरे पास जो कुछ भी है, ले लेना। पर तुम सब भूखे लगते हो। मेरे पास मिठाइयां भी हैं। पहले पेट भरकर खा लो।"

दूसरा ठग बोला—"ला, निकाल मिठाइयां। बहुत दिनों से खाई भी नहीं।"

"यहां तो बैठने की जगह नहीं है। उस पेड़ के नीचे बैठते हैं।"—कहकर लछमन ने एक पेड़ की ओर इशारा किया।

वे पेड़ के नीचे पहुंचे। आम का पेड़ था। पके आमों को देखकर ठगों का मन मचल गया। आमों की ओर इशारा करके सरदार बोला—"अरे, इन आमों को देखो। खाने में मजा आ जाएगा।" तय

हुआ, पहले आम तोड़ लिए जाएं । बरतन में पानी भरकर उन्हें रख दिया जाए । ठंडे हो जाने पर खा लेंगे ।

लछमन ने कहा—"पेड़ काफी ऊंचा है । आम कैसे तोड़ेंगे ?"—यह कहकर वह आसपास डंडा ढूंढ़ने लगा ।

दूसरे ठग ने आम तोड़ने के लिए लछमन को लाठी दे दी । उसकी आंखें खुशी से चमक उठीं ।

एक ठग पेड़ पर चढ़ गया । लछमन ने आम तोड़ने के बहाने लाठी उपर फेंकी । लाठी पेड़ पर चढ़े ठग को लगी । वह नीचे गिर पड़ा । लछमन ने अपनी भूल स्वीकार करते उसे सहलाया और क्षमा मांगी ।

जब कुछ आम इकट्ठे हो गए, तब लछमन दूसरे ठग से बोला—"इन आमों को धोने के लिए कहीं से पानी ले आओ ।" फिर उसने मिट्टी का एक बरतन उसे थमा दिया ।

ठग बरतन लेकर पानी के लिए चल पड़ा । एक तालाब के पास जाकर रुक गया । बरतन में पानी भरने लगा । लछमन भी वहां पहुंच गया । तालाब से कुछ दूर खड़ा हो गया । बोला—"मैं कुछ और आम लाया हूं । इन्हें भी धो लेना ।" कहकर उसने तीन-चार आम उसकी ओर फेंके । आम उसके सिर पर लगे । वह हड़बड़ाकर तालाब में गिर गया । उसमें गोते खाने लगा ।

लछमन बरतन लेकर पेड़ के नीचे पहुंचा । अब तीसरे ठग का दिमाग सही करना था ।

लछमन आम के पेड़ के पास आया । बोला—"दूसरा साथी आम धोकर ला रहा है ।"

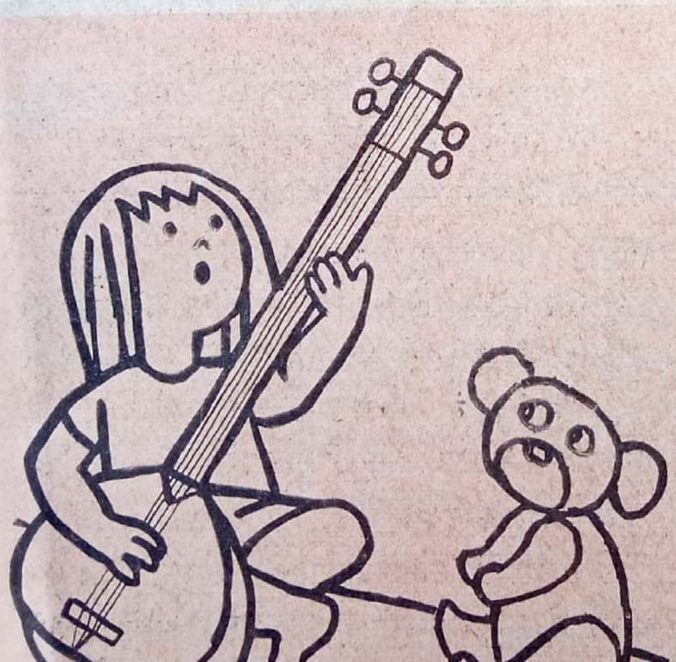
लछमन ने कहा—"तुम्हारी लाठी तो बहुत मजबूत है । जरा चलाकर देख लूं ।" चलाने के बहाने चार-पांच लाठी उस ठग पर जमा दीं । चोट खाकर वह भी गिर पड़ा ।

लछमन उन तीनों ठगों से निबटकर घर पहुंचा । पत्नी को सारी घटना सुनाई ।

सुबह मुखिया के पास गया । उसके हाथ में रुपए थमाते हुए बोला—"बाग में कुछ बदमाशों से पाला पड़ गया था । उन्हें सबक सिखा दिया है । उनके पास से ये रुपए लाया हूं । इनका उपयोग गांव की भलाई के लिए कर लें ।"

मुखिया ने पूछा—"तीन ठगों से तुम बचे कैसे ?"

लछमन मुसकराकर बोला—"यह सब लाठी का कमाल है ।" कहते हुए उसने लाठी हवा में लहराई और घर चला गया । ●



तुम भी लिखो कविता

यह रहा चित्र नन्ही मुनमुन का । हाथ में तम्बूरा लिए क्या तो आलाप ले रही है—"सुन-सुन, धुन सुन !" या जाने क्या ! और पास बैठा नन्हा भालू एक कान ऊपर उठाए सुन-सुनकर मगन हो रहा है । है न मजेदार चित्र ! इस पर कोई मजेदार कविता तुम खुद लिखो । चुनी हुई कविताओं को 'नंदन' में छापेंगे । पुरस्कार भी मिलेगा । कविताएं १६ लाइन से बड़ी न हों । अंतिम तिथि : **३० सितम्बर, '८९ ।**

भेजने का पता : सम्पादक, 'नंदन' **(कविता प्रतियोगिता)**, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, नई दिल्ली—११०००१ ।

"खेती है मेरा काम"



गंगाराम को अपने व्यवसाय पर गर्व है।

ऐसा व्यवसाय जिससे देश को भोजन मिलता है।

ऐसा व्यवसाय जिससे उसे अच्छी आमदनी होती है।

वे दिन लद गये जब खेती एक स्थिर और घाटे का व्यवसाय था।

स्वतंत्र भारत में किसानों की आवश्यकताओं की ओर ध्यान दिया गया ताकि उन्हें बढ़िया बीज, सिंचाई सुविधाएं, खाद, कीटनाशक दवाएं – ये सभी रियायती दरों पर मुहैया करायी जा सकें।

ऐसी व्यवस्था की गई जिससे उन्हें समय पर ऋण और उनके उत्पादों का उचित मूल्य मिल सके। किसान इन सुविधाओं का पूरा लाभ उठाते हैं।

कड़ी मेहनत और प्रौद्योगिकी दोनों ही हरितक्रांति के अग्रदूत हैं। फलस्वरूप, आज भारत का खाद्यान्न उत्पादन 17 करोड़ टन तक पहुंच गया है – जो 1947 के कुल उत्पादन से 12 करोड़ टन अधिक है।

हमें प्रगति पर गर्व है

davp 89/275

Scanned with CamScanner

साहसी नंदू

नंदू के चाचा जासूस थे । इसीलिए वह बहुत बड़े-बड़े रहस्यों का पर्दाफाश कर देते थे । उसकी गर्मी की छुट्टियां चल रही थीं । उसे चाचा के साथ रहने के कारण जासूसी का शौक होने लगा था ।

कुछ दिनों में शहर में अफवाह फैली कि देश से भारी मात्रा में सोना गायब हो रहा है ।

उसी दिन से नंदू और उसके चाचा ने चोरों की खोज चालू कर दी । वह रोज सुबह जल्दी ही घर से निकल जाते और देर रात वापस आते । एक दिन वे दोनों थककर एक पेड़ के नीचे बैठे थे, तभी नंदू की नजर पत्थर के नीचे दबे एक कागज पर पड़ी ।

नंदू ने चाचा को जब वह कागज दिया, तो उनकी नजर नीचे लिखे नम्बर पर पड़ी । वहां जासूसी भाषा में कुछ लिखा भी हुआ था । खुश होते हुए चाचा जी बोले—"नंदू, हमें सुराग मिल गया है ।"

"अरे, यह तो जैसे जादू हो गया ।"—नंदू ने चकित होकर कहा ।

क्या तुम तीन किलोमीटर पैदल चल सकते हो । हालांकि रास्ता अकेला और सुनसान है । तुम्हें अकेले ही जाना होगा । यह सूचना पुलिस को देना जरूरी है।"

नंदू तुरंत चल दिया ! उधर उसके चाचा कागज पर बने नक्शे के आधार पर जंगल में बनी गुफा को ढूंढ़ने लगे । जल्दी ही उन्हें गुफा का पता चल गया ।

आधी रात बीतते-बीतते एक हेलिकाप्टर की गड़गड़ाहट सुनाई दी । लेकिन यह क्या ! जैसे ही दो लोग हेलिकाप्टर से उतरे, न जाने कहां से सिपाही निकल पड़े । उन दोनों को पकड़ लिया । गुफा के अंदर वाले दो आदमियों को भी गिरफ़्तार कर लिया गया । पता चला, सारा सोना विदेश जाने वाला था । नन्हे नंदू के साहस की सभी ने प्रशंसा की । पुलिस विभाग की ओर से उसे इनाम दिया गया ।

—अतुल अग्रवाल, आगरा

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं :— विशाल कौशिक, गुड़गांव; राखी दास, ग्वालियर; मनोज कुमार सिन्हा, पटना ।

क्या आप 'ठिंगने', 'नाटे', 'छोटे कद का आदमी'–
ये शब्द सुन-सुनकर परेशान हो गये हैं?

कद बढ़ाइए!

परिणामों की गारण्टी अन्यथा पैसे वापस!

बात चाहे सामाजिक सफलता की हो या प्रेम, खेलकूद और फौज भरती की, लंबा कद हर जगह काफी मायने रखता है। इसलिए जल्दी कीजिये व एक नई छवि पाइये। शीघ्र व स्थायी रूप से अपना कद बढ़ाइये।

न्यू हाइट है एक ऐसा विस्तृत प्रोग्राम जिसमें शामिल है वैज्ञानिक ढंग से की जाने वाली वर्जिशें, आहार सम्बन्धी मार्ग दर्शन और विजुअल टैक्नीक्स जिनके जरिये आप पाते है पहले से कहीं ज्यादा लंबा कद और खडे होने का एक नया शानदार अंदाज।



न्यू हाइट पूरे शरीर,मसल्स व हड्डियों के जोडों में नई चुस्ती-फुर्ती भरता है व पूर्ण संतोष की गारण्टी देता है।

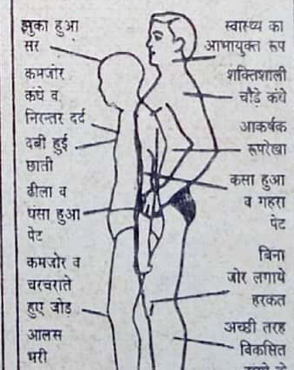
निर्देशों का विभिन्न चरणों में पालन करते हुए प्रतिदिन केवल कुछ मिनट खर्च कीजिये। चार सप्ताह बाद अपनी लम्बाई मापिये। आप इसे 5 से.मी. तक बढा हुआ पायेंगे। हमारे रिकार्ड में पत्र हैं जो प्रमाणित करते हैं कि इस आश्चर्यजनक प्रोग्राम से सैंकड़ों महिलाओं व पुरूषों को अपना कद व अंदाज सुधारने में मदद मिल चुकी है। आप भी अपना कद बढ़ा सकते है।

यदि 30 दिनों में आपका कद 5 सेमी से 15 सेमी तक न बढे तो हम आपके पैसे वापस करनें की गारंटी देते है। (डाक व प्रेषण खर्च घटाकर)

ध्यान रहे न्यू हाइट एक निर्देश पुस्तक है जिसमें कुछ वैज्ञानिक कसरतों के जरिये कद बढ़ाने एवं सही व आकर्षक ढंग पाने के संबंध में हिदायतें दी गई हैं। यह किसी प्रकार की दवा या औषधि नहीं है। और पूरी तरह सुरक्षित है।

बिना जोखिम आजमाइश योजना

इनमें से किस पुरुष जैसे आप दिखते हैं?



वी.पी.पी. द्वारा रु. 94/-में यहाँ से उपलब्ध न्यू हाइट, मेहता महल 15, मैथ्यू रोड, बम्बई- 400 004.

यह कूपन आज ही भेजिए

न्यू हाइट NH-07-A ND130
15 मैथ्यू रोड, बम्बई- 400 004

जी हाँ, मै अपने खड़े होने के अंदाज को सुधारना व अपना कद बढ़ाना चाहता हूँ अपने जोखिम रहित घर-परीक्षण प्रस्ताव के अन्तर्गत 30 दिन के लिए न्यू हाइट तुरन्त भेजें। मै धनराशि (डाक व प्रेषण खर्च घटाकर) की तौरन वापसी के लिए न्यू हाइट को इसकी मूलदशा में लौटा सकता हूँ।

कृपया उचित खाने में टिक ☑ लगायें

☐ रजिस्टर्ड डाक पार्सल से भेजें। मै ड्राफ्ट/पोस्टल ऑर्डर/मनी ऑर्डर नं.............. दिनांक.......... से रु. 94/- भेज रहा हूँ, (बुलवर्कर प्रा. लि. को देय)

☐ वी.पी.पी. से भेजें। मै डाकिये को सुपुर्दगी के समय रु. 94/- अदा करने का वादा करता हूँ।

नाम ....

पता ....

....

पिन .... हस्ताक्षर ....

ABHA

शीर्षक बताइए : परिणाम

कमाल कर दिया इस बार तो पाठकों ने! एकदम चित्र से मिलते, अनोखे शीर्षक भेजे। जुलाई अंक में छपे रंगीन चित्र पर इन शीर्षकों को पुरस्कार के लिए चुना गया—

पंछी बोले—ओ रानी,
क्या है उड़ने की ठानी?

—पृथ्वीराज सेनगुप्ता, द्वारा एस. कांजीलाल, १९ स्टेट बैंक आफीसर्स कालोनी, अरविंद नगर वार्ड, बल्लभनगर, रायपुर (म. प्र.)।

दीदी मुझे भी दे दो खाना,
दूर देश है मुझको जाना।

—जसविंदर सिंह, मकान नं. ३०६१/बी, सेक्टर ३९-डी, चंडीगढ़।

इस दुनिया के मेले में,
क्यों बैठे हो अकेले में।

—रवि मेहता, मकान नं. १/२, सेक्टर-३, एम. वी. पी. कालोनी, विशाखापट्टनम (आं. प्र.)।

आप कितने बुद्धिमान हैं (उत्तर)

१. पुल पर रखी नाव में बैठे आदमी की जेकेट काली है।
२. ऊपर वाले नाविक की कमर पेटी का फुंदना छोटा है।
३. दीवार पर लगे लैंप हेंडिल का डिजाइन बदल गया है।
४. मेहराब के नीचे वाले आदमी का बायां हाथ अब दिखाई दे रहा है।
५. दाईं ओर नाव की रस्सी बांधने के लिए बने एक खंभे की धारियां गायब है।
६. आकाश से चिड़िया गायब है।
७. सीढ़ियों पर बैठा मछुआरा नंगे पैर है।
८. उसके चेहरे पर मूंछें हैं।
९. बिल्ली के पास पड़ी हड्डी छोटी है
१०. पीछे बने गिरजाघर की मीनार ऊंची हो गई है।

पत्र-मित्र

पुस्तकें पढ़ने तथा लेखन में रुचि :

१. टिंकू गुप्ता, १५ वर्ष, त्रिमूर्ति बुक डिपो, नदी गांव, जालौन (उ. प्र.); २. आनंदवर्धन, १४, द्वारा ओमप्रकाश नारायण, उप-समाहर्ता, हाजीपुर (बि.); ३. आशीषमोहन शुक्ल, १३, द्वारा डा. एच. एम. शुक्ल, तारापुर, जि. मुंगेर (बि.); ४. सतीशचंद्र मिश्र, १५, ग्रा. सोनवलिया, पो. रिठिया बाजार, बांसी; ५. अर्चना त्रिपाठी, १६, ग्रा. बाजू पट्टी (बैजनाथपुर), पो. सखवनिया, जि. देवरिया (उ. प्र.); ६. मो. आजाद, १२, द्वारा महादेव रजक, छोटी बलिया, लखमिनिया, बेगुसराय।

खेल, संगीत तथा चित्रकला में रुचि :

१. महेश पांडेय, १३ वर्ष, द्वारा सी. एम. पांडेय, जीवन बीमा निगम, शाखा— रायगढ़, (म. प्र.); २. अशोककुमार पटेल, १६, ग्रा. रसूलपुर, पो. मडिमाहूं, जि. जौनपुर (उ. प्र); ३. रुपेशकुमार राय, १५, थाना तिवारीपुर, पो. सदर, जि. गोरखपुर (उ. प्र.); ४. एम. मोहसिन, १७, आर. के. वन-३२, पो. सिंद्री, जि. धनबाद (बि.); ५. रिंकू अग्रवाल, १४, द्वारा राजेंद्रप्रसाद गर्ग, पांच हवेली, कोसी कलां जि. मथुरा; ६. संजयकुमार, १४, द्वारा उदयनाथ वर्मा, मु. ठाकुरबाड़ी, मोतिहारी, जि. पूर्वी चम्पारन (बि.); ७. अखिलेशकुमार जैन, १७, ६४ कृष्णापुरी, पुतली भवन, मुजफ्फरनगर; ८. शरद तिवारी, ७, बी-८२ लक्ष्मीनारायण पुरी, सूरजपोल, जयपुर; ९. सतीशकुमार सिंह, १७, द्वारा अरुण कु. सिंह, ग्रा. कष्टहारा, पो. विद्यापति नगर, जि. समस्तीपुर (बि.); १०. संजीवकुमार गुप्ता, १२, द्वारा हरीओम प्रकाश गुप्ता, छोटा काजीपुर, गोरखपुर; ११. उपमा गिरोत्रा, ९. द्वारा जगदीशचंद्र गिरोत्रा, वार्ड नं. ३, बैरक नं. ३७, मकान नं. ८, गांधी नगर, रोहतक; १२. विभा लक्ष्मी, १३, आलोकालय, तुतबाड़ी, चौक रोड, गया (बि.)।

डाक टिकट संग्रह में रुचि :

१. शशिमौल सूबेदार, १६ वर्ष, शुक्ला वकील का मकान, हनुमान चौक, बालाधा (म. प्र.); २. शैलेशकुमार सिंह, १६, ४४ एल. आई. जी. फ्लैट, नया बस स्टैंड के पास, कंकड़बाग कालोनी, पटना; ३. संजीवकुमार सिन्हा, १६, नारायण निवास, इंद्रा कुटी, बाबा टोली, डालटनगंज (बि.); ४. संजीव श्रीवास्तव, १२, पुलिस लाइन ५, १— क्वार्टर नं. १२, झांसी; ५. नितिन सचदेवा, ११, सिक्का कालोनी, सोनीपत (हरि.); ६. उनील पोद्दार, ११, २०३-अ कलबा देवी रोड, पांचवां माला, बम्बई।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित।
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन

Scanned with CamScanner

अपने शिशु को दीजिए सैरेलॅक का अनूठा लाभ



कीजिए ठोस आहार की आदर्श शुरुआत

४ महीने की उम्र से आपके शिशु को दूध के साथ-साथ ठोस आहार की भी ज़रूरत होती है. उसे सेरेलॅक का अनूठा लाभ दीजिए.

पौष्टिकता का लाभ : सेरेलॅक का प्रत्येक आहार आपके शिशु की आवश्यकता के अनुसार सारे पौष्टिक तत्व प्रदान करता है — प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फ़ैट, विटामिन तथा मिनरल. सभी पूरी तरह संतुलित.

स्वाद का लाभ : शिशुओं को सेरेलॅक का स्वाद बहुत भाता है.

समय का लाभ : सेरेलॅक पहले से ही पकाया हुआ है और इसमें दूध और चीनी मौजूद है. केवल इसे उबाले हुए गुनगुने पानी में मिला दीजिए.

पसंद का लाभ : तीन तरह के सेरेलॅक में से आप अपनी पसंद का चुन सकती हैं.

कृपया डिब्बे पर दिए गए निर्देशों का सावधानी से पालन कीजिए ताकि इसके बनाने में स्वच्छता रहे और आपके शिशु को संतुलित पोषाहार मिले.



6 महीने से

4 महीने से

6 महीने से

मुफ़्त
सेरेलॅक बेबी केयर बुक
लिखिये : सेरेलॅक
पोस्ट बॉक्स नं. 3
नई दिल्ली-110 008

Nestlé

सैरेलॅक का वादा: स्वाद भरा संपूर्ण पोषाहार

RK SWAMY/FSL/5112/HIN

नंदन रजि. नं. डी.-(सी)-१७१ आर.एन.आई. नं. १०५२५/



Scanned with CamScanner